CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

॥ श्रीहरिः ॥

गीता-दैनन्दिनी

सन् १९८९ ई०

(संवत् २०४५-४६)

मूल्य चार रुपये

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

नित्य प्रार्थना

****

कर प्रणाम तेरे चरणोंमें लगता हूँ अब तेरे काज।
पालन करनेको आज्ञा तव मैं नियुक्त होता हूँ आज ॥
अन्तरमें स्थित रहकर मेरे बागडोर पकड़े रहना।
निपट निरंकुश चंचल मनको सावधान करते रहना ॥
अन्तर्यामीको अन्तःस्थित देख सशङ्कित होवे मन।
पाप-वासना उठते ही हो नाश लाजसे वह जल-भुन ॥
जीवोंका कलरव जो दिनभर सुननेमें मेरे आवे।
तेरा ही गुणगान जान मन प्रमुदित हो अति सुख पावे ॥
तू ही है सर्वत्र व्याप्त हरि! तुझमें यह सारा संसार।
इसी भावनासे अन्तरभर मिलूँ सभीसे तुझे निहार ॥
प्रतिपल निज इन्द्रियसमूहसे जो कुछ भी आचार करूँ।
केवल तुझे रिझानेको, बस तेरा ही व्यवहार करूँ ॥

(भजन-संग्रहसे)

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

गीतादैनन्दिनी

पूरे वर्षमें सम्पूर्ण गीताका पाठ और मनन करनेकी दैनिक चर्या

[सन् १९८९ ई०]

हिन्दी, अंग्रेजी, पंजाबी और नये भारतीय शक-संवत्के दिनाङ्क एवं तिथि, पर्व, ग्रहण, नक्षत्रादिसहित।

[नेपाली दिनाङ्क (गते) भी प्रायः पंजाबीसे मिलता है।]

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

प्रकाशक—गोविन्द-भवन-कार्यालय, गीताप्रेस गोरखपुर

सन् १९२७ से १९८८ तक	५०,९५,०००
सन् १९८९	१,००,०००
सन् १९८९	५०,०००
कुल =	५२,४५,०००

मूल्य—चार रुपये

गीताप्रेस, गोरखपुरकी निजी दूकानें

फोन नं०		
३८६८९४ ३८०२५१	(१)	कलकत्ता—गोविन्द-भवन-कार्यालय, १५१, महात्मा गाँधी रोड
२६९६७८	(२)	दिल्ली—गीताप्रेस, पुस्तक-दूकान, २६०९, नई सड़क
	(३)	पटना— ,, ,, अशोकराजपथ
५२३५१	(४)	कानपुर— ,, २४/५५, बिरहाना रोड
	(५)	हरिद्वार— ,, सब्जीमंडी, मोतीबाजार
६३०५०	(६)	वाराणसी—गीताप्रेस, कागज-एजेंसी, ५९/९ नीचीबाग
१२२	(७)	स्वर्गाश्रम-गीताभवन, गङ्गापार स्टेशन ऋषिकेश (पौड़ी-गढ़वाल)
३०३०	(८)	गोरखपुर, गीताप्रेस

मुद्रक – फ्लेक्सोप्रिंट, गोरखपुर

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अभ्यासकर्ताके नाम-पता आदि

नाम ______________________

घरका पता ______________________

कार्यालयका पता ______________________

तारका पता ______________________

फोन-नंबर ______________________

कार-नंबर ______________________

पासबुक-नंबर ______________________

जन्म-दिवस ______________________

अन्य उल्लेख्य ______________________

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

परमोदार भगवान् श्रीकृष्ण

ये तु धर्म्यामृतमिदं यथोक्तं पर्युपासते ।
श्रद्दधाना मत्परमा भक्तास्तेऽतीव मे प्रियाः ॥

(१२ । २०)

परन्तु जो श्रद्धायुक्त पुरुष मेरे परायण होकर इस ऊपर कहे हुए धर्ममय अमृतको निष्काम प्रेम भावसे सेवन करते हैं, वे भक्त मुझको अतिशय प्रिय हैं।

प्रश्न—यहाँ 'तु' पदके प्रयोगका क्या उद्देश्य है ?

उत्तर—तेरहवेंसे लेकर उन्नीसवें श्लोकतक भगवान्‌को प्राप्त सिद्ध भक्तोंके लक्षणोंका वर्णन है और इस श्लोकमें उन उत्तम साधक भक्तोंकी प्रशंसा की गयी है, जो इन सिद्धोंसे भिन्न हैं और सिद्ध भक्तोंके इन लक्षणोंको आदर्श मानकर उनका सेवन करते हैं। यही भेद दिखलानेके लिये 'तु' पदका प्रयोग किया गया है।

प्रश्न—श्रद्धायुक्त भगवत्परायण पुरुष किसे कहते हैं ?

उत्तर—सर्वव्यापी, सर्वशक्तिमान् भगवान्‌के अवतारोंमें, वचनोंमें एवं उनके गुण, प्रभाव, ऐश्वर्य और चरित्रादिमें जो प्रत्यक्षके सदृश सम्मानपूर्वक विश्वास रखता हो—वह श्रद्धावान् है। परम प्रेमी और परम दयालु भगवान्‌को ही परम गति, परम आश्रय एवं अपने प्राणोंके आधार, सर्वस्व मानकर उन्हींपर निर्भर और उनके किये

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

हुए विधानमें प्रसन्न रहनेवालेको भगवत्परायण पुरुष कहते हैं।

प्रश्न—उपर्युक्त सात श्लोकोंमें वर्णित भगवद्भक्तोंके लक्षणोंको यहाँ धर्ममय अमृतके नामसे कहनेका क्या अभिप्राय है?

उत्तर—भगवद्भक्तोंके उपर्युक्त लक्षण ही वस्तुतः मानवधर्मका सच्चा स्वरूप है। इन्हींके पालनमें मनुष्य-जन्मकी सार्थकता है, क्योंकि इनके पालनसे साधक सदाके लिये मृत्युके पंजेसे छूट जाता है और उसे अमृतस्वरूप भगवान्‌की प्राप्ति हो जाती है। इसी भावको स्पष्ट समझानेके लिये यहाँ इस लक्षण-समुदायका नाम 'धर्ममय अमृत' रखा गया है।

प्रश्न—यहाँ 'पर्युपासते'का क्या अभिप्राय है?

उत्तर—भलीभाँति तत्पर होकर निष्काम प्रेमभावसे इन उपर्युक्त लक्षणोंका श्रद्धापूर्वक सदा-सर्वदा सेवन करना, यही 'पर्युपासते'का अभिप्राय है?

प्रश्न—पहले सात श्लोकोंमें भगवत्प्राप्त सिद्ध भक्तोंके लक्षणोंका वर्णन करते हुए उनको तो भगवान्‌ने अपना 'प्रिय भक्त' बतलाया और इस श्लोकमें जो सिद्ध नहीं हैं, परन्तु इन लक्षणोंकी उपासना करनेवाले साधक भक्त हैं—उनको 'अतिशय प्रिय' कहा, इसमें क्या रहस्य है?

उत्तर—जिन सिद्ध भक्तोंको भगवान्‌की प्राप्ति हो चुकी है, उनमें तो उपर्युक्त लक्षण स्वाभाविक ही रहते हैं और भगवान्‌के

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

साथ उनका नित्य तादात्म्य-सम्बन्ध हो जाता है। इसलिये उनमें इन गुणोंका होना कोई बहुत बड़ी बात नहीं है। परन्तु जिन एकनिष्ठ साधक भक्तोंको भगवान्के प्रत्यक्ष दर्शन नहीं हुए हैं, तो भी वे भगवान्पर विश्वास करके परम श्रद्धाके साथ तन, मन, धन, सर्वस्व भगवान्के अर्पण करके उन्हींके परायण हो जाते हैं तथा भगवान्के दर्शनोंके लिये निरन्तर उन्हींका निष्कामभावसे प्रेमपूर्वक चिन्तन करते रहते हैं और सतत चेष्टा करके उपर्युक्त लक्षणोंके अनुसार ही अपना जीवन बिताना चाहते हैं—बिना प्रत्यक्ष दर्शन हुए भी केवल विश्वासपर उनका इतना निर्भर हो जाना विशेष महत्त्वकी बात है। इसीलिये भगवान्को वे विशेष प्रिय होते हैं। ऐसे प्रेमी भक्तोंको भगवान् अपना नित्य सङ्ग प्रदान करके जबतक सन्तुष्ट नहीं कर देते, तबतक वे उनके ऋणी ही बने रहते हैं—ऐसी भगवान्की मान्यता है; अतएव भगवान्का उन्हें सिद्ध भक्तोंकी अपेक्षा भी 'अतिशय प्रिय' कहना उचित ही है।

ब्रह्मलीन परम श्रद्धेय श्रीजयदयालजी गोयन्दकाद्वारा प्रणीत गीता-तत्त्वविवेचनी (राजसंस्करण मूल्य तीस रुपये) पृष्ठ-संख्या ६९४-६९६से

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

लीला माधुर्य

एक बार वसन्तकालमें श्रीकृष्ण गोवर्धनपर समस्त श्रीगोपसुन्दरियोंके साथ रास-विहार कर रहे थे। इसी समय श्रीकृष्णके दिव्य मनमें गोपीसमूहकी मूलस्वरूपा श्रीराधाजीके साथ एकान्त विहार करनेकी स्वरूपमयी स्फुरणा हुई। वे श्रीराधाको अपना अभिप्राय बताकर रासस्थलीसे सहसा अन्तर्धान हो गये और एक निभृत निकुञ्जमें जाकर राधाकी प्रतीक्षा करने लगे। इधर गोपाङ्गनाओंने जब श्रीकृष्णको वहाँ नहीं देखा, तब वे आकुल होकर उन्हें ढूँढ़ने चलीं। ढूँढ़ते-ढूँढ़ते उसी निकुञ्जके अंदर जाकर दूरसे देखा तो एक कुञ्जमें उन्हें श्रीकृष्ण बैठे दिखायी दिये। इधर श्रीकृष्णने गोपियोंको देखा, तब वे सोचने लगे कि 'मैं सबको छोड़कर रासस्थलीका परित्याग करके इस निभृत निकुञ्जमें अकेला क्यों बैठा हूँ—गोपियोंके इस प्रकार पूछनेपर मैं क्या उत्तर दूँगा?' और गोपाङ्गनाएँ इतनी निकट आ गयी थीं कि दूसरे कुञ्जमें जाकर छिपनेका भी उनके लिये अब अवकाश नहीं रह गया था। तब वे सोचने लगे कि 'यदि मेरे दो हाथ और होते तो मैं चतुर्भुज

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

होकर अपनेको छिपा सकता; पर दो हाथ कहाँसे आयें ?' इस प्रकार सोचनेका यह अर्थ नहीं समझना चाहिये कि भगवान्में वहाँ स्वरूपभूत ऐश्वर्यका अभाव हो गया था। वहाँ भी पूर्ण ऐश्वर्य है और उसकी वहाँ अनुभूति भी है; किंतु विशेषता यही है कि वहाँ वह ऐश्वर्य माधुर्यकी आड़में छिपा है। प्रियतम श्रीश्यामसुन्दर व्रजेन्द्रनन्दन व्रजमें स्वयं तो प्रायः प्रत्यक्षरूपमें ऐश्वर्यको अङ्गीकार नहीं करते, पर उनकी ऐश्वर्यशक्ति ऐसे अवसरपर सेवाका लाभ उठानेसे नहीं चूकती। यहाँ भी वह भगवान्के संकल्पाभासका ही सुयोग पाकर क्रियाशील हो गयी और उसने उसी क्षण भगवान् श्रीकृष्णको शङ्ख-चक्र-गदा-पद्मधारी चतुर्भुज बना दिया। इसी समय गोपाङ्गनाएँ वहाँ आ पहुँचीं और आते ही वे कुञ्जमें अपने प्राणवल्लभ नवीन-नीरद-कान्ति द्विभुज मुरलीमनोहरको न देखकर हताश-उदास हो गयीं। उन्होंने चतुर्भुज नारायणको देखा, इससे तुरंत ही उनका उछलता हुआ कान्ताभाव संकुचित हो गया एवं वे हाथ जोड़कर श्रीनारायणकी स्तुति-विनती करके श्रीकृष्णको खोजनेके लिये दूसरे निकुञ्जकी ओर चली गयीं। इसके पश्चात्

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

पूर्वसंकेतानुसार श्रीराधाजी वहाँ पहुँचीं। श्रीकृष्ण निर्विघ्न-निर्बाध एकान्तमें राधाको देखकर प्रफुल्लित हो गये और 'मैं आज चार हाथों से श्रीराधाके साथ विनोद करूँगा'—यह विचार आनेपर उन्हें और भी आनन्द आया। परंतु वे यह देखकर आश्चर्य करने लगे कि श्रीराधा जितना ही समीप आ रही हैं, उतनी ही शीघ्रतासे दोनों हाथ विलुप्त हुए जा रहे हैं। उन्होंने चतुर्भुज बने रहनेका प्रचुर प्रयास भी किया, पर स्पष्टरूपसे श्रीराधाकी दृष्टि पड़नेसे पूर्व ही उनके दोनों हाथ अन्तर्धान हो गये और वे पूर्ववत् द्विभुज ही रह गये।

नित्यलीलालीन श्रद्धेय भाईजी श्रीहनुमानप्रसादजी पोद्दारकी पुस्तक श्रीराधा-माधव-चिन्तन (मूल्य बाईस रुपये) पृष्ठ-संख्या २५४-२५५से।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

यद्यदाचरति श्रेष्ठः

प्रायः देखा जाता है कि जिस समाज, सम्प्रदाय, जाति, वर्ण, आश्रम आदिमें जो श्रेष्ठ मनुष्य कहलाते हैं और जिनको लोग श्रेष्ठ मानकर आदरकी दृष्टिसे देखते हैं, वे जैसा आचरण करते हैं, उस समाज, सम्प्रदाय, जाति आदिके लोग भी वैसा ही आचरण करने लग जाते हैं।

अन्तःकरणमें धन और पदका महत्त्व एवं लोभ रहनेके कारण लोग अधिक धनवाले (लखपति, करोड़पति) तथा ऊँचे पदवाले (नेता, मन्त्री आदि) पुरुषोंको श्रेष्ठ मान लेते हैं और उन्हें बहुत आदरकी दृष्टिसे देखते हैं। जिनके अन्तःकरणमें जड़ वस्तुओं (धन, पद, आदि-) का महत्त्व है, वे मनुष्य वास्तवमें न तो स्वयं श्रेष्ठ होते हैं और न श्रेष्ठ व्यक्तिको समझ ही सकते हैं जिसको वे श्रेष्ठ समझते हैं, वह भी वास्तवमें श्रेष्ठ नहीं होता। यदि उनके हृदयमें धनका अधिक आदर है तो उनपर अधिक धनवालोंका ही प्रभाव पड़ता है; जैसे—चोरपर चोरोंके सरदारका ही प्रभाव पड़ता है। वास्तवमें श्रेष्ठ न होनेपर भी लोगोंके द्वारा श्रेष्ठ मान लिये जानेके कारण उन धनी तथा उच्च पदाधिकारी पुरुषोंके आचरणोंका समाजमें स्वतः प्रचार हो जाता है। जैसे, धनके कारण जो श्रेष्ठ माने जाते हैं, वे पुरुष जिन-जिन उपायोंसे धन कमाते और जमा करते हैं, उन-उन उपायोंका लोगोंमें स्वतः प्रचार हो जाता है, चाहे वे उपाय कितने ही गुप्त क्यों न हों! यही कारण है कि वर्तमानमें झूठ, कपट, बेईमानी, धोखा, चोरी आदि

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain. Digitizagtion by eGangotri

बुराइयोंका समाजमें, किसी पाठशालामें पढ़ाये बिना ही स्वतः प्रचार होता चला जा रहा है।

यह दुःख और आश्चर्यकी बात है कि वर्तमानमें लोग लखपतिको तो श्रेष्ठ मान लेते हैं, पर प्रतिदिन भगवन्नामका लाख जप करनेवालेको श्रेष्ठ नहीं मानते। वे यह विचार ही नहीं करते कि लखपतिके मरनेपर एक कौड़ी भी साथ नहीं जायगी, जब कि भगवन्नामका जप करनेवालेके मरनेपर पूरा-का-पूरा भगवन्नामरूप धन उसके साथ जायगा, एक भी भगवन्नाम पीछे नहीं रहेगा!

अपने-अपने स्थान या क्षेत्रमें जो पुरुष मुख्य कहलाते हैं, उन अध्यापक, व्याख्यानदाता, आचार्य, गुरु, नेता, शासक, महन्त, कथावाचक, पुजारी आदि सभीको अपने आचरणोंमें विशेष सावधानी रखनेकी बड़ी भारी आवश्यकता है, जिससे दूसरोंपर उनका अच्छा प्रभाव पड़े। इसी प्रकार परिवारके मुख्य व्यक्ति-(मुखिया-) को भी अपने आचरणोंमें पूरी सावधानी रखनेकी आवश्यकता है। कारण कि मुख्य व्यक्तिकी ओर सबकी दृष्टि रहती है। रेलगाड़ीके चालकके समान मुख्य व्यक्तिपर विशेष जिम्मेवारी रहती है। रेलगाड़ीमें बैठे अन्य व्यक्ति सोये भी रह सकते हैं, पर चालकको सदा जाग्रत् रहना पड़ता है।

परमश्रद्धेय स्वामीजी श्रीरामसुखदासजी महाराजद्वारा प्रणीत साधक-संजीवनी टीका—पृष्ठ-संख्या १८१-१८२से

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

* स्वास्थ्यरक्षाके सप्त सूत्र *

१—**सूर्योदयसे पहले नित्य**—शौच जाना, दाँत साफ करना, नहाना, संध्या, सूर्यनमस्कार आदि और शुद्ध हवामें टहलना, कुछ शारीरिक परिश्रम करना—ये जरूरी हैं।

२—**भोजन**—ताजा, साफ, हलका, शुद्ध, सात्त्विक और सादा हो, हाथ-चक्कीका मोटा आटा, ढेकीका चावल, गुड़, फल, शाक और दूध—ये विशेष लाभदायक हैं। कभी-कभी केवल फलाहार करना या उपवास करना जरूरी है।

३—**पीनेका पानी**—साफ, शुद्ध, गन्धहीन हो। दो किलो प्रतिदिन तो पीना ही चाहिये। जहाँ पानी गंदा हो या बीमारी फैली हो वहाँ उबालकर ठंडा कर पिये।

४—**घर**—साफ-सुथरा, धूप और हवादार हो। जाड़ेमें भी हवा आनेकी खिड़की रातमें भी खुली रखें।

५—मुँह ढककर या एक बिस्तरपर दोका सोना, जहाँ-तहाँ थूकना, कूड़ा-गंदगी फैलाना बुरा है।

६—**कपड़ा**—हलका, थोड़ा (कामभर), ढीला, पसीनासोख, सफेद और स्वच्छ हो।

७—सोना, उठना, आहार-व्यवहार और परिश्रम नित्य-नियमित हो।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

कुछ जानने योग्य बातें

रेलभाड़ा—१ किलोमीटर लगभग ५ फर्लांगका होता है।

अब वातानुकूल प्रथम, वातानुकूल शैयायान, वातानुकूल कुर्सीयान, प्रथम एवं द्वितीय—कुल पाँच श्रेणियाँ हैं। सभी श्रेणीके परिवर्तित रेलभाड़ाकी जानकारी स्टेशनों एवं नये टाइमटेबुलसे की जा सकती है। पाँच वर्षतकके बच्चे बिना टिकट तथा बारह वर्षसे कमके आधी टिकटमें जा सकते हैं।

२—एयरकण्डी० श्रेणीका यात्री ७० कि० ग्राम, एयरकण्डी० चेयरकारका ५० कि० ग्राम, प्रथम श्रेणीका ४० कि० ग्राम, द्वितीयका ३५ कि० ग्राम सामान बिना किरायेके ले जा सकता है। अधिक हो तो तौलकर महसूल दे देना चाहिये, नहीं तो पकड़े जानेपर यदि एयरकण्डी० का १५ कि० ग्राम तथा अन्य श्रेणीवालोंका १० कि० ग्रामसे अधिक होगा तो पूरे सामानका महसूल ६ गुना लग जायगा।

३—रेलपारसल और लगेजका भाड़ा—किलोमीटरकी दूरीके हिसाबसे किलोग्रामके वजनपर लगता है। १ से ५० कि० मीटरका १३.५२ प्रति क्विन्टल, ४० किलोग्राम घरेलू मालका १०० किलोमीटर दूरीका भाड़ा रु० १०.८२, ५०० कि०मी० दूरीका रु० ५१.३६ तथा १,००० कि० मी०का रु०

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

८७.२९ लगता है। रु० १०.०० से कमकी बिल्टी (रेलवे रसीद) नहीं बनती तथा ५०० किलोमीटरसे कमकी बिल्टी पेड बनती है। पुस्तकें, दूध तथा खद्दरका रेलभाड़ा कुछ कम दरसे तथा समाचारपत्रोंका एक तिहाईसे कम लगता है।

४—**रेलयात्रामें**—कम-से-कम ४०० किलोमीटरसे ऊपरके यात्री ३०० किलोमीटर यात्रा कर चुकनेपर ही रास्तेंमें रुक सकते हैं। वे अपने टिकटके प्रति २०० किलोमीटर या उसके किसी अंशपर एक दिनके हिसाबसे रुक सकते हैं।

५-रेलकर्मचारी बिना रसीद दिये कोई रकम नहीं ले सकता। अनुचित ली हुई रकम रसीदके आधारसे लिखा-पढ़ी करके वापस ली जा सकती है। यदि कोई कर्मचारी यात्रीसे असभ्यताका व्यवहार करे तो उसी लाइनके डिविजनल सुपरिंटेंडेंट या चीफ आपरेटिंग सुपरिंटेंडेंटसे शिकायत करनी चाहिये।

६—रेलवेपर मालसम्बन्धी कोई नालिस करनी हो तो बिल्टीकी तारीखसे छः मासके अंदर जनरल मैनेजरको रजिस्टर्ड नोटिस जरूर दे दें, नहीं तो सुनवाई नहीं होती।

७—यात्रामें कहीं ठहरना हो तो स्टेशनमास्टरसे रसीद लेकर सामान उसके पास छोड़ सकते हैं। अमानती सामान-घरमें सामान रखने और उसकी सुरक्षाके लिये जनतासे लिये जानेवाले

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain. Digitizagtion by eGangotri

प्रभारोंमें निम्नलिखित संशोधन किया जायगा—

(प्रति पैकेट प्रति २४ घंटे)

	रुपये
प्रथम दो दिनोंके लिये	१.००
अगले चार दिनोंके लिये	१.२५
अगले छः दिनोंके लिये	१.५०
तदुपरान्त दिनोंके लिये	२.००

डाककी दर

१—१० ग्रामकी चिट्ठीपर ७० पैसे, अपना लिफाफा इस्तेमाल करनेपर ६० पैसे, इसके बाद प्रति १० ग्राम या उससे कमपर भी ४० पैसेका टिकट लगता है। भारत, भूटान, बंगला-देश और नेपालके लिये एक ही नियम है। अन्तर्देशीय (Inland) लिफाफा ५० पैसेमें मिलता है। २—बिना छपा कार्ड १५ पैसेका और जवाबी ३० पैसेका टिकट लगता है। जिसपर फर्मका नाम, पता छपा हुआ हो शेष समाचार हाथसे लिखा हो उसपर भी १५ पैसेका ही टिकट लगेगा। कहीं-कहीं डाकघरोंमें इसकी जानकारी नहीं होनेसे वैरंग कर देते हैं, यह बात गलत है। इसके लिये उच्चाधिकारियोंसे सम्पर्क करें। जिस कार्डपर और समाचार भी छपा हुआ हो उसपर ४० पैसेका लगेगा।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

३—पुस्तक पैकेटके रूपमें दोनों ओर खुली पैक करके भेजनेसे प्रति १०० ग्रामपर ३० पैसे और बादके प्रति १०० ग्राम या अंशपर ३० पैसे लगते हैं। पुस्तकके अतिरिक्त बुकपोस्टपर प्रथम ५० ग्रामपर ५० पैसे, बादमें प्रति ५० ग्राम या अंशपर ५० पैसे लगते हैं। नमूनेका पैकेट २०० ग्रामतकका जा सकता है।

४—रेकार्डेड डिलीवरी-सामान्य डाकखर्चसे रु० २.०० का और टिकट लगानेसे पत्रके यथास्थान पहुँचनेपर उसे रजिस्टर्ड पत्रकी तरह डिलीवरी कराया जाता है। वापसी रसीदका ५० पैसे अधिक लगाना होगा।

५—बीमा करानेका नियम—१०० रु० तक २ रुपये, इसके बाद प्रति सैकड़ा या उसके किसी अंशपर १ रुपया ५,०००रु० तक, उसके बाद ५ रु० प्रति हजार लगता है। बिना रजिस्ट्री बीमा और वी० पी० नहीं होते। दो (चपड़ीकी) मोहरोंके बीचमें १ इंचसे अधिक अन्तर नहीं होना चाहिये। बीमामें सील-मोहर आवश्यक है।

६—रजिस्ट्री करानेके रु० ५.०० अलग लगते हैं।

७—पारसलमें प्रत्येक ५०० ग्राम अथवा उसके किसी भागपर ४ रु० लगते हैं। ४,००० ग्रामसे ऊपरके पारसलकी

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

रजिस्ट्री अनिवार्य है।

८—मनीआर्डरकी दर नीचे वी० पी० में दी गयी है।

९—**सर्टिफिकेटका नियम**—बिना रजिस्ट्रीका पारसल, चिट्ठी या पैकेट या कार्ड, डाकघरका सर्टिफिकेट लेकर भेजा जा सकता है। बीस पैसेमें ३ अददतक पारसल, चिट्ठी, कार्ड या पैकेटका सर्टिफिकेट मिलता है।

१०—**वी० पी०**—रजिस्ट्री पारसल, पैकेट या चिट्ठी वी० पी० से जा सकते हैं। पोस्ट-आफिस इनका रुपया पानेवालेसे वसूल करके भेजनेवालेके पास पहुँचा देता है। वी० पी० या मनीआर्डर पूरे रुपयोंका ही होगा पैसोंका नहीं होगा। मनीआर्डरकी दर १० रु० तक ५० पैसे और बादमें ५० रु०तक ४० पैसेके हिसाबसे और ५० रु० से ऊपर होनेपर प्रति १० रु० पर ५० पैसेके हिसाबसे लगेगा। जैसे ५१ रु० का मनीआर्डर होगा तो उसपर रु० ३.०० लगेगा। वी०पी० १,००० रु० तककी भेजी जा सकती है। मनीआर्डर-खर्च वी० पी० पानेवाला देता है। १० रुपयेतककी वी० पी० पर १ रु०, २० रुपयेतक २ रुपये, उससे अधिकपर ३ रु० अतिरिक्त लगता है। वी०पी० ७ दिनोंतक मुफ्तमें, इसके बाद ७ दिनोंतक २५ पैसे प्रतिदिनके हिसाबसे देकर पारसल तथा १५ पैसे देकर लेटर रोके जा सकते हैं।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

११—**तार**—१० शब्दोंतक साधारण तारके रु० ३.५०, जल्दी जानेवालेके रु० ७.०० लगते हैं, अधिक शब्दोंके लिये साधारणके ५० पैसे और शीघ्रगामीके रु० १.०० प्रतिशब्द और लगते हैं। जवाबी तारके लिये साधारणके रु० ३.५० तथा शीघ्रगामीके रु० ७.०० और अधिक लगते हैं। जवाबी फार्म काममें न लाया जाय तो ४५ दिन (१½ माह) तक जहाँ तार दिया जाता है, उसी आफिससे वापस मिल सकता है। फोनोग्रामपर प्रतितार रु० २.०० अधिक लगता है।

१२—प्रेसके लिये ५० शब्दोंके साधारण तारका रु० २.००, जल्दी जानेवालेके रु० ४.०० लगते हैं।

१३—विदेशमें भेजे जानेवाले तारमें प्रतिशब्द रु० २.०० लगता है तथा अमेरिकाके लिये प्रतिशब्द २.५० लगते हैं।

१४—डाककी शिकायतें प्रादेशिक पोस्टमास्टर जनरलको और तारकी जनरल मैनेजर टेलीकम्युनिकेशनको करनी चाहिये।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

इन्कम-टैक्स—व्यक्तिगत एवं संयुक्त हिंदूपरिवार अनरजिस्टर्ड फर्मके लिये आयकर, वर्ष १९८८-८९ के लिये—

१—दर हर व्यक्तिके लिये	संयुक्त हिंदूपरिवारके लिये
१८,००० तक कुछ नहीं।	१२,००० तक कुछ नहीं।
उसके बादके—	उसके बादके—
७,००० पर २५%	८,००० पर २५%
२५,००० पर ३०%	२०,००० पर ३०%
५०,००० पर ४०%	२०,००० पर ४०%
इसके बाद बाकीपर ५०%	४०,००० पर ५०%
	उसके बाद बाकीपर ५५%

संयुक्त हिंदूपरिवारमें यदि एक व्यक्तिकी भी आय १८,००० से अधिक स्वतन्त्र आय होगी तो उपर्युक्त दर लगेगी, वरना व्यक्तिकी दर लगेगी।

२—रजिस्टर्ड फर्मके पहिले १०,००० तक कुछ नहीं,१०,००० के बाद १५,००० तक ५% प्रतिशत
उसके बाद २५,००० तक [illegible]% ,,
,, ,, ,, ५०,००० तक १% ,,
उसके बादकी कुल आमदनीपर २४% ,,
५०,०००से अधिक आमदनीपर करका ५% सरचार्ज भी लगता है।

नोट—हर व्यक्तिके लिये १८,००० तक कुछ नहीं।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

माप-तौलकी नयी दाशमिक प्रणाली

तौल

१० मिलीग्राम=१ सेन्टीग्राम

१० सेन्टीग्राम=१ डेसीग्राम

१० डेसीग्राम=१ ग्राम

१० ग्राम=१ डेकाग्राम

१० डेकाग्राम=१ हेक्टोग्राम

१० हेक्टोग्राम=१ किलोग्राम
=२.२ पौंड

१०० किलोग्राम=१ क्विन्टल

माप

१० मिलीमीटर=१ सेन्टीमीटर
=.३९ इंच

१० सेन्टीमीटर=१ डेसीमीटर
=३.९४ इंच

१० डेसीमीटर=१ मीटर
=३९.३७ इंच

१० मीटर=१ डेकामीटर

१० डेकामीटर=१ हेक्टोमीटर

१० हेक्टोमीटर=१ किलोमीटर
करीब ५ फर्लांग

तुलनात्मक परिवर्तन

१—बाट

१ तोला=११.६६ ग्राम

१० तोला=११६.६४ ग्राम

१ पौंड=.४५ किलोग्राम

१० पौंड=४.४५ किलोग्राम

१ सेर=.९३ किलोग्राम

१० सेर=९.३३ किलोग्राम

१ मन=०.३७ क्विन्टल

१० मन=३.७३ क्विन्टल

१ टन=१.०२ मेट्रिकटन

१० टन=१०.१६ मेट्रिकटन

२—लम्बाई

१ इंच=२५.४० मिलीमीटर

१२ इंच=३०४.८० ,,

१ गज=०.९१ मीटर

१० गज=९.१४ मीटर

१ मील=१.६१ किलोमीटर

१० मील=१६.१ ,,

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

३—क्षेत्रफल

१ एकड़=०.४० हेक्टेयर
१० एकड़=४.०५ हेक्टेयर
१ वर्गगज=०.८४ वर्गमीटर
१० वर्गगज=८.३६ वर्गमीटर

४—तरलपदार्थ

१ गैलन (इम्पीरियल)
४.५५ लीटर
१० गैलन=४५.४६ लीटर

****

कागजका माप

इंच	सेंटीमीटर
८×१३=	२० ॥×३३
८ ॥×१३ ॥=	२१ ॥×३४ ॥
१०×१५=	२५ ॥×३८
१५×२०=	३८×५१
१७×२७=	४३×६९
१८×२२=	४५ ॥×५६
१८×२३=	४५ ॥×५८ ॥
२०×२६=	५१×६६
२०×३०=	५१×७६
२२×२९=	५६×७३ ॥
२२×३०=	५६×७६
२२×३६=	५६×९१
२६×४०=	६६×१०२
२७×३४=	६९×८६
३०×४०=	७६×१०२

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

दैनिक वेतन और मकानभाड़ा चुकानेका नक्शा

मासिक रुपये	२८का म॰ १ दिनका रु॰ पै॰	२९का म॰ १ दिनका रु॰ पै॰	३०का म॰ १ दिनका रु॰ पै॰	३१का म॰ १ दिनका रु॰ पै॰
१	०.०४	०.०३	०.०३	०.०३
२	०.०७	०.०७	०.०७	०.०६
३	०.११	०.१०	०.१०	०.१०
४	०.१४	०.१४	०.१३	०.१३
५	०.१८	०.१७	०.१७	०.१६
६	०.२१	०.२१	०.२०	०.१९
७	०.२५	०.२४	०.२३	०.२३
८	०.२९	०.२८	०.२७	०.२६
९	०.३२	०.३१	०.३०	०.२९
१०	०.३६	०.३४	०.३३	०.३२
२०	०.७१	०.६९	०.६७	०.६५
३०	१.०७	१.०३	१.००	०.९७
४०	१.४३	१.३८	१.३३	१.२९
५०	१.७९	१.७२	१.६७	१.६१
१००	३.५७	३.४५	३.३३	३.२३
५००	१७.८६	१७.२४	१६.६७	१६.१३
१०००	३५.१७	३४.४८	३३.३३	३२.२६

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अनुभूत घरेलू प्रयोग

रोग होनेपर संयम और आवश्यक परहेज रखना सबसे उत्तम है।

सर्दीका बुखार—तुलसीके पत्ते १०, काली मिरच १०, खूबकला १० ग्राम, पोदीना ५ ग्राम, धनिया १० ग्राम, ४०० ग्राम पानीमें चढ़ाकर १०० ग्राम रह जानेपर १० ग्राम मिश्री मिलाकर पीना चाहिये।

बुखारमें जलन—पेटमें जलन हो तो सफेद चन्दन घिसकर २० ग्राम अंदाज नाभिमें डाल दे। सारे शरीरमें जलन हो तो नाभिपर काँसेकी कटोरी रखकर एक हाथ ऊँचेसे उसमें पानीकी धार छोड़े, दस मिनटमें जलन मिट सकती है।

मलेरिया ज्वर—(श्यामा) तुलसीके पत्ते ११ और काली मिरच ११ का काढ़ा बुखार चढ़े रहने और उतरनेपर भी पीता रहे। अपामार्गकी जड़ लाल रेशमसे भुजापर बाँधनी चाहिये। १० पत्ते तुलसीके १० काली मिरचके साथ रोज चबाने चाहिये।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitization by eGangotri

पेट फूलना—नमक एक ग्राम और अजवायन ५ ग्राम मिलाकर खाय।

मन्दाग्नि—एक-एक ग्राम सैन्धव नमक और भूँजा हुआ हींग प्रतिदिन भोजनके पहले ग्रासके साथ खाय, भोजनके कुछ पहले नमकके साथ थोड़ा-सा कच्चा अदरक सेवन करे।

आँवके दस्त—सूखा बेल, पुराना गुड़, काली मिरच पीसकर बराबर मात्रा १० ग्राम पी ले अथवा १०-१० ग्राम इसबगोल और मिश्री मिलाकर फाँक ले। खून आता हो तो दूबका रस २० ग्राम पिये।

कृमि—विडंगचूर्ण ५ ग्राम शहदके साथ ले या नीमकी पत्तीका रस ५ ग्राम पी ले।

बवासीर—खून आता हो तो दूबका रस ५० ग्राम चीनी मिलाकर या नागकेसर १० ग्राम चीनी मिलाकर पीसकर ले। दर्दमें भाँगकी धुईं दे। खून आता हो तो हर्रें २० ग्राम गोमूत्रमें पीसकर गुड़के साथ सात दिनतक ले। खून आता हो तो शौचके समय फिटकरीके जलसे अङ्ग धोना चाहिये।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सर्दी—थोड़ा-सा कपूर खाना और सूँघना चाहिये।

खाँसी-श्वास—१०० ग्राम तीसीको भूनकर उसमें ५ ग्राम पीसा हुआ गोंद डालकर शहदमें आगपर पका ले। दिनमें चार-पाँच बार ५-५ ग्राम खाये। अनुभूत है। आलू बिल्कुल न खाये।

श्वास—पीपलकी छालका चूर्ण या खैरकी लकड़ीका चूर्ण ३ ग्राम अथवा मोरपंखकी भस्म एक ग्राम शहदके साथ सेवन करे। संयम और परहेजसे रहे।

खुजली—१/३ ग्राम शुद्ध गन्धक केलेमें दबाकर या शहदके साथ प्रतिदिन खाये। चावलमोगरेका तेल या कपूर मिलाया हुआ नारियलका तेल लगाकर धूपमें बैठे। नीमपत्तोंके जलसे धोवे।

दाद—माजूफलका चूर्ण ८० ग्राम, इमलीकी छालकी भस्म १० ग्राम, कपूर ५ ग्राम नारियलके तेलमें मिलाकर लगाये।

फोड़ा—अनन्तमूलकी जड़ पीसकर उसका चारों ओर लेप करे। (अनन्तमूल जड़ी है।)

हिचकी और मूर्च्छा—पाँच-सात काली मिरच

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सूईकी नोकमें पिरोकर रोगीकी नाकमें उसका धूआँ दे।

सर्पविष—अड़हुल (जवापुष्प, अजापुष्प) का मूल पीसकर पिला देनेसे विषैले सर्पका विष दूर हो सकता है। दुग्धके साथ पीनेसे खूनके विकारको दूर करता है।

मिर्गी—अपामार्गकी जड़ जा पत्तोंको पीसकर उसमें गोल मिरच तथा सौंफ मिलाकर पीनेसे अपस्मार (मिर्गी) का रोग दूर होता है।

सिर दुखना—पुराने गुड़के साथ सोंठका चूर्ण मिलाकर सूँघे। सोंठ, बादाम, अफीम, कपूर, सफेद चन्दनके साथ पीसकर जरा-सा गरम करके लेप करे। अफीम बहुत थोड़ा डाले। कपूर, पीपरामेंट और अजवाइनके फूल बराबर मिलाकर अमृतधारा बना ले, उसका लेप करे।

वात—२५ ग्राम धतूरेके बीज कूटकर ६०० ग्राम खालिस सरसोंके तेलमें सात दिन भिगो-छानकर उस तेलकी मालिश करे।

प्रदर—मुलेठी २० ग्राम, चीनी २० ग्राम चावल धोये हुए जलमें पीसकर दिनमें दो बार सेवन करे। इससे

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

रक्तप्रदर भी मिट सकता है। अशोक छालके क्वाथसे प्रदरमें आराम होता है।

रक्तस्राव—रज बहुत पड़ता हो तो नागकेसरकी फाँकी या दूबका रस पीना चाहिये। पेटपर ठंडे पानीकी पट्टी रखनी चाहिये।

बहुमूत्र—पुराने गुड़के साथ काले तिल भूँजकर लड्डू बना ले, रोज दो लड्डू खाय।

आधासीसी—सबेरे ४ बजे ५ ग्राम भूना हुआ सोहागा पीसकर १० ग्राम घी और १० ग्राम चीनीके साथ खाना चाहिये।

हिस्टीरिया—३ दिनतक तीनों समय (सुबह, दोपहर, शाम) गुनगुने पानीसे त्रिफला लेवें। बादमें बाजारसे ५ प्रकारका नमक सौ-सौ ग्राम लेकर पीसकर सब मिलाकर स्वच्छ बर्तनमें रख लें और घीक्वार (गुवारपाठा) का एक लम्बा टुकड़ा लेकर छील लें और उसका टुकड़ा करके उसपर नमक डालकर करीब १ महीना सेवन करें।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

ग्रहण-विवरण

(खग्रास चन्द्रग्रहण)

यह ग्रहण वि० सं० २०४५, शक १९१०, माघ शुक्ल पूर्णिमा, दिन सोमवार, दिनाङ्क २०-२-८९ को होगा।

(मघा नक्षत्र,सिंह राशिपर लगेगा।)

स्टैंडर्ड रे० टाइम	घं०	मि०
स्पर्श	१९	१३
मध्य	२१	५
मोक्ष	२२	५७

सूतक—चन्द्र-ग्रहणमें ९ घंटे पूर्वसे ही लग जाता है।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

आरती

जय भगवद्गीते, जय भगवद्गीते।
हरि-हिय-कमल-विहारिणि, सुन्दर सुपुनीते॥
कर्म-सुमर्म-प्रकाशिनि, कामासक्ति हरा।
तत्त्वज्ञान-विकाशिनि, विद्या ब्रह्म परा॥ जय०
निश्चल-भक्ति-विधायिनि, निर्मल, मलहारी।
शरण-रहस्य-प्रदायिनि, सब विधि सुखकारी॥ जय०
राग-द्वेष-विदारिणि, कारिणि मोद सदा।
भव-भय-हारिणि, तारिणि परमानन्दप्रदा॥ जय०
आसुर-भाव-विनाशिनि, नाशिनि तम-रजनी।
दैवी सद्गुणदायिनि, हरि-रसिका सजनी॥ जय०
समता-त्याग सिखावनि, हरि-मुखकी बानी।
सकलशास्त्रकी-स्वामिनि, श्रुतियोंकी रानी॥ जय०
दया-सुधा बरसावनि मातु! कृपा कीजै।
हरिपद-प्रेम दान कर अपनो कर लीजै॥ जय०

*****

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

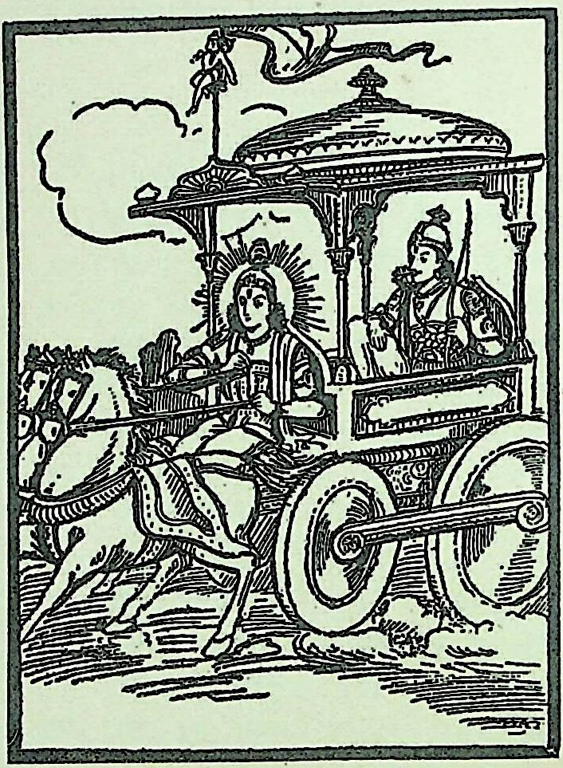

सेनयोरुभयोर्मध्ये रथं स्थापय मेऽच्युत ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

ॐ

अथ श्रीमद्भगवद्गीता

प्रथमोऽध्यायः

धृतराष्ट्र उवाच

धर्मक्षेत्रे कुरुक्षेत्रे समवेता युयुत्सवः ।
मामकाः पाण्डवाश्चैव किमकुर्वत संजय ॥ १ ॥

संजय उवाच

दृष्ट्वा तु पाण्डवानीकं व्यूढं दुर्योधनस्तदा ।
आचार्यमुपसङ्गम्य राजा वचनमब्रवीत् ॥ २ ॥

---

१ जनवरी १९८९] सूर्योदय ६।४६ सूर्यास्त ५।१४
पं० १८ पौष सं० २०४५] [भा० पौष ११ शक-सं० १९१०

~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~

पौष कृष्ण ९ रवि, वि० सं० २०४५
1 January 1989, श्रीकृष्ण-संवत् ५२१४

१— ॐ हरये नमः

॥ ॐ हरिहरहराभ्यो नमः ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi
~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

पश्यैतां पाण्डुपुत्राणामाचार्य महतीं चमूम् ।
व्यूढां द्रुपदपुत्रेण तव शिष्येण धीमता ॥ ३ ॥
अत्र शूरा महेष्वासा भीमार्जुनसमा युधि ।
युयुधानो विराटश्च द्रुपदश्च महारथः ॥ ४ ॥

---

२ जनवरी] सूर्योदय ६ । ४६ सूर्यास्त ५ । १५
पं० ११ पौष] 2 January [भा० पौष १२

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

धृष्टकेतुश्चेकितानः काशिराजश्च वीर्यवान्।
पुरुजित्कुन्तिभोजश्च शैब्यश्च नरपुङ्गवः ॥ ५ ॥
युधामन्युश्च विक्रान्त उत्तमौजाश्च वीर्यवान्।
सौभद्रो द्रौपदेयाश्च सर्व एव महारथाः ॥ ६ ॥

---

३ जनवरी] सूर्योदय ६।४६ सूर्यास्त ५।१५
पं० २० पौष] 3 January [भा० पौष १३

~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~

एकादशीव्रत

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi
~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अस्माकं तु विशिष्टा ये तान्निबोध द्विजोत्तम।
नायका मम सैन्यस्य संज्ञार्थं तान्ब्रवीमि ते ॥७॥
भवान्भीष्मश्च कर्णश्च कृपश्च समितिंजयः।
अश्वत्थामा विकर्णश्च सौमदत्तिस्तथैव च ॥८॥

---

४ जनवरी]　सूर्योदय ६।४७　सूर्यास्त ५।१६
पं० २१ पौष]　4 January　[भा० पौष १४

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अन्ये च बहवः शूरा मदर्थे त्यक्तजीविताः ।
नानाशस्त्रप्रहरणाः सर्वे युद्धविशारदाः ॥९॥
अपर्याप्तं तदस्माकं बलं भीष्माभिरक्षितम् ।
पर्याप्तं त्विदमेतेषां बलं भीमाभिरक्षितम् ॥१०॥

---

५ जनवरी]　सूर्योदय ६ । ४७　सूर्यास्त ५ । १७
पं० २२ पौष]　5 January　[भा० पौष १५

~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~

प्रदोषव्रत

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi
~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अयनेषु च सर्वेषु यथाभागमवस्थिताः ।
भीष्ममेवाभिरक्षन्तु भवन्तः सर्व एव हि ॥११॥
तस्य संजनयन्हर्षं कुरुवृद्धः पितामहः ।
सिंहनादं विनद्योच्चैः शङ्खं दध्मौ प्रतापवान् ॥१२॥

---

६ जनवरी]　सूर्योदय ६।४७　सूर्यास्त ५।१८
पं० २३ पौष]　6 January　[भा० पौष १६

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

ततः शङ्खाश्च भेर्यश्च पणवानकगोमुखाः ।
सहसैवाभ्यहन्यन्त स शब्दस्तुमुलोऽभवत् ॥१३॥
ततः श्वेतैर्हयैर्युक्ते महति स्यन्दने स्थितौ ।
माधवः पाण्डवश्चैव दिव्यौ शङ्खौ प्रदध्मतुः ॥१४॥

---

७ जनवरी]   सूर्योदय ६।४७   सूर्यास्त ५।१९
पं० २४ पौष]   7 January   [भा० पौष १७

~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~

अमावस्या

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi
~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

पाञ्चजन्यं हृषीकेशो देवदत्तं धनंजयः ।
पौण्ड्रं दध्मौ महाशङ्खं भीमकर्मा वृकोदरः ॥१५॥
अनन्तविजयं राजा कुन्तीपुत्रो युधिष्ठिरः ।
नकुलः सहदेवश्च सुघोषमणिपुष्पकौ ॥१६॥

---

८ जनवरी] सूर्योदय ६।४७ सूर्यास्त ५।१९
पं० २५ पौष] 8 January [भा० पौष १८

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

काश्यश्च परमेष्वासः शिखण्डी च महारथः ।
धृष्टद्युम्नो विराटश्च सात्यकिश्चापराजितः ॥१७॥
द्रुपदो द्रौपदेयाश्च सर्वशः पृथिवीपते ।
सौभद्रश्च महाबाहुः शङ्खान्दध्मुः पृथक् पृथक् ॥१८॥

---

९ जनवरी] सूर्योदय ६।४७ सूर्यास्त ५।२०
पं॰ २६ पौष] 9 January [भा॰ पौष १९

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

स घोषो धार्तराष्ट्राणां हृदयानि व्यदारयत्।
नभश्च पृथिवीं चैव तुमुलो व्यनुनादयन् ॥१९॥
अथ व्यवस्थितान्दृष्ट्वा धार्तराष्ट्रान् कपिध्वजः ।
प्रवृत्ते शस्त्रसंपाते धनुरुद्यम्य पाण्डवः ॥२०॥

---

१० जनवरी] सूर्योदय ६।४७ सूर्यास्त ५।२१
पं० २७ पौष] 10 January [भा० पौष २०

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

हृषीकेशं तदा वाक्यमिदमाह महीपते ।

अर्जुन उवाच

सेनयोरुभयोर्मध्ये रथं स्थापय मेऽच्युत ॥२१॥
यावदेतान्निरीक्षेऽहं योद्धुकामानवस्थितान् ।
कैर्मया सह योद्धव्यमस्मिन्रणसमुद्यमे ॥२२॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

योत्स्यमानानवेक्षेऽहं य एतेऽत्र समागताः ।
धार्तराष्ट्रस्य दुर्बुद्धेर्युद्धे प्रियचिकीर्षवः ॥२३॥

संजय उवाच

एवमुक्तो हृषीकेशो गुडाकेशेन भारत ।
सेनयोरुभयोर्मध्ये स्थापयित्वा रथोत्तमम् ॥२४॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

भीष्मद्रोणप्रमुखतः सर्वेषां च महीक्षिताम् ।
उवाच पार्थ पश्यैतान्समवेतान्कुरूनिति ॥२५॥
तत्रापश्यत्स्थितान् पार्थः पितृनथ पितामहान् ।
आचार्यान्मातुलान्भ्रातृन्पुत्रान्पौत्रान्सखींस्तथा ॥२६॥

---

१३ जनवरी]　सूर्योदय ६।४७　सूर्यास्त ५।२३
पं॰ १ माघ सं॰ २०४५]　13 January　[भा॰ पौष २३

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

श्वशुरान्सुहृदश्चैव सेनयोरुभयोरपि ।
तान्समीक्ष्य स कौन्तेयः सर्वान्बन्धूनवस्थितान् ॥२७॥
कृपया परयाविष्टो विषीदन्निदमब्रवीत् ।

अर्जुन उवाच

दृष्ट्वेमं स्वजनं कृष्ण युयुत्सुं समुपस्थितम् ॥२८॥

---

१४ जनवरी] सूर्योदय ६ । ४७ सूर्यास्त ५ । २४
पं० २ माघ] 14 January [भा० पौष २४

~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~

मकर-संक्रान्ति

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi
~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सीदन्ति मम गात्राणि मुखं च परिशुष्यति।
वेपथुश्च शरीरे मे रोमहर्षश्च जायते ॥२९॥
गाण्डीवं स्त्रंसते हस्तात्त्वक्चैव परिदह्यते॥
न च शक्नोम्यवस्थातुं भ्रमतीव च मे मनः ॥३०॥

---

१५ जनवरी] सूर्योदय ६।४७ सूर्यास्त ५।२५
पं० ३ माघ] 15 January [भा० पौष २५

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

निमित्तानि च पश्यामि विपरीतानि केशव ।
न च श्रेयोऽनुपश्यामि हत्वा स्वजनमाहवे ॥३१॥
न काङ्क्षे विजयं कृष्ण न च राज्यं सुखानि च ।
किं नो राज्येन गोविन्द किं भोगैर्जीवितेन वा ॥३२॥

---

१६ जनवरी] सूर्योदय ६।४७ सूर्यास्त ५।२६
पं० ४ माघ] 16 January [भा० पौष २६

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

येषामर्थे काङ्क्षितं नो राज्यं भोगाः सुखानि च ।
त इमेऽवस्थिता युद्धे प्राणांस्त्यक्त्वा धनानि च ॥३३॥
आचार्याः पितरः पुत्रास्तथैव च पितामहाः ।
मातुलाः श्वशुराः पौत्राः श्यालाः सम्बन्धिनस्तथा ॥३४॥

---

१७ जनवरी]　सूर्योदय ६।४७　सूर्यास्त ५।२६
पं० ५ माघ]　17 January　[भा० पौष २७

एकादशीव्रत (स्मार्त्त)

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

एतान्न हन्तुमिच्छामि घ्नतोऽपि मधुसूदन।
अपि त्रैलोक्यराज्यस्य हेतोः किं नु महीकृते ॥३५॥
निहत्य धार्तराष्ट्रान्नः का प्रीतिः स्याज्जनार्दन।
पापमेवाश्रयेदस्मान्हत्वैतानाततायिनः ॥३६॥

---

१८ जनवरी]　सूर्योदय ६।४७　सूर्यास्त ५।२७

पं० ६ माघ]　18 January　[भा० पौष २८

~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~

एकादशीव्रत (वैष्णव)

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi
~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

तस्मान्नार्हा वयं हन्तुं धार्तराष्ट्रान्स्वबान्धवान् ।
स्वजनं हि कथं हत्वा सुखिनः स्याम माधव ॥३७॥
यद्यप्येते न पश्यन्ति लोभोपहतचेतसः ।
कुलक्षयकृतं दोषं मित्रद्रोहे च पातकम् ॥३८॥

---

१९ जनवरी]　सूर्योदय ६।४७　सूर्यास्त ५।२७
पं० ७ माघ]　19 January　[भा० पौष २९

प्रदोषव्रत

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

कथं न ज्ञेयमस्माभिः पापादस्मान्निवर्तितुम् ।
कुलक्षयकृतं दोषं प्रपश्यद्भिर्जनार्दन ॥३९॥
कुलक्षये प्रणश्यन्ति कुलधर्माः सनातनाः ।
धर्मे नष्टे कुलं कृत्स्नमधर्मोऽभिभवत्युत ॥४०॥

---

२० जनवरी] सूर्योदय ६।४७ सूर्यास्त ५।२८
पं० ८ माघ] 20 January [भा० पौष ३०

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अधर्माभिभवात्कृष्ण प्रदुष्यन्ति कुलस्त्रियः ।
स्त्रीषु दुष्टासु वार्ष्णेय जायते वर्णसङ्करः ॥४१॥
सङ्करो नरकायैव कुलघ्नानां कुलस्य च ।
पतन्ति पितरो ह्येषां लुप्तपिण्डोदकक्रियाः ॥४२॥

---

२१ जनवरी]　सूर्योदय ६।४७　सूर्यास्त ५।२९
पं० ९ माघ] 21 January [भा० माघ १ शक १९१०

~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~

पूर्णिमाव्रत, माघस्नानारम्भ

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi
~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

दोषैरेतैः कुलघ्नानां वर्णसङ्करकारकैः ।
उत्साद्यन्ते जातिधर्माः कुलधर्माश्च शाश्वताः ॥४३॥
उत्सन्नकुलधर्माणां मनुष्याणां जनार्दन ।
नरकेऽनियतं वासो भवतीत्यनुशुश्रुम ॥४४॥

---

२२ जनवरी] सूर्योदय ६ । ४६ सूर्यास्त ५ । ३०
पं० १० माघ] 22 January [भा० माघ २

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अहो बत महत्पापं कर्तुं व्यवसिता वयम् ।
यद्राज्यसुखलोभेन हन्तुं स्वजनमुद्यताः ॥४५॥
यदि मामप्रतीकारमशस्त्रं शस्त्रपाणयः ।
धार्तराष्ट्रा रणे हन्युस्तन्मे क्षेमतरं भवेत् ॥४६॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

संजय उवाच

एवमुक्त्वार्जुनः संख्ये रथोपस्थ उपाविशत्।
विसृज्य सशरं चापं शोकसंविग्नमानसः ॥४७॥

ॐ तत्सदिति श्रीमद्भगवद्गीतासूपनिषत्सु ब्रह्मविद्यायां
योगशास्त्रे श्रीकृष्णार्जुनसंवादेऽर्जुनविषादयोगो
नाम प्रथमोऽध्यायः ॥१॥

---

२४ जनवरी] सूर्योदय ६।४५ सूर्यास्त ५।३१
पं० १२ माघ] 24 January [भा० माघ ४

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

ॐ

द्वितीयोऽध्यायः

संजय उवाच

तं तथा कृपयाविष्टमश्रुपूर्णाकुलेक्षणम्।
विषीदन्तमिदं वाक्यमुवाच मधुसूदनः ॥१॥

श्रीभगवानुवाच

कुतस्त्वा कश्मलमिदं विषमे समुपस्थितम्।
अनार्यजुष्टमस्वर्ग्यमकीर्तिकरमर्जुन ॥२॥

---

२५ जनवरी] सूर्योदय ६।४५ सूर्यास्त ५।३२
पं० १३ माघ] 25 January [भा० माघ ५

माघ कृष्ण ४ बुध

श्रीगणेशचतुर्थीव्रत

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

क्लैब्यं मा स्म गमः पार्थ नैतत्त्वय्युपपद्यते।
क्षुद्रं हृदयदौर्बल्यं त्यक्त्वोत्तिष्ठ परंतप ॥३॥

अर्जुन उवाच

कथं भीष्ममहं संख्ये द्रोणं च मधुसूदन।
इषुभिः प्रतियोत्स्यामि पूजार्हावरिसूदन ॥४॥

---

२६ जनवरी] सूर्योदय ६।४५ सूर्यास्त ५।३३

पं० १४ माघ] 26 January [भा० माघ ६

गणतन्त्रदिवस

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

गुरूनहत्वा हि महानुभावान्
श्रेयो भोक्तुं भैक्ष्यमपीह लोके।
हत्वार्थकामांस्तु गुरूनिहैव
भुञ्जीय भोगान्रुधिरप्रदिग्धान् ॥५॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

न चैतद्विद्मः कतरन्नो गरीयो
यद्वा जयेम यदि वा नो जयेयुः ।
यानेव हत्वा न जिजीविषाम-
स्तेऽवस्थिताः प्रमुखे धार्तराष्ट्राः ॥६॥

---

२८ जनवरी] सूर्योदय ६।४४ सूर्यास्त ५।३४
पं० १६ : माघ] 28 January [भा० माघ ८

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

कार्पण्यदोषोपहतस्वभावः
पृच्छामि त्वां धर्मसंमूढचेताः ।
यच्छ्रेयः स्यान्निश्चितं ब्रूहि तन्मे
शिष्यस्तेऽहं शाधि मां त्वां प्रपन्नम् ॥७॥

---

२९ जनवरी] सूर्योदय ६ । ४३ सूर्यास्त ५ । ३५
पं० १७ माघ] 29 January [भा० माघ ९

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

न हि प्रपश्यामि ममापनुद्याद्
यच्छोकमुच्छोषणमिन्द्रियाणाम् ।
अवाप्य भूमावसपत्नमृद्धं
राज्यं सुराणामपि चाधिपत्यम् ॥८॥

---

३० जनवरी] सूर्योदय ६।४३ सूर्यास्त ५।३६
पं० १८ माघ] 30 January [भा० माघ १०

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

संजय उवाच

एवमुक्त्वा हृषीकेशं गुडाकेशः परंतप ।
न योत्स्य इति गोविन्दमुक्त्वा तूष्णीं बभूव ह ॥९॥
तमुवाच हृषीकेशः प्रहसन्निव भारत ।
सेनयोरुभयोर्मध्ये विषीदन्तमिदं वचः ॥१०॥

---

३१ जनवरी] सूर्योदय ६।४३ सूर्यास्त ५।३७
पं० १९ माघ] 31 January [भा० माघ ११

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

श्रीभगवानुवाच

अशोच्यानन्वशोचस्त्वं प्रज्ञावादांश्च भाषसे ।
गतासूनगतासूंश्च नानुशोचन्ति पण्डिताः ॥११॥
न त्वेवाहं जातु नासं न त्वं नेमे जनाधिपाः ।
न चैव न भविष्यामः सर्वे वयमतः परम् ॥१२॥

---

१ फरवरी १९८९] सूर्योदय ६।४२ सूर्यास्त ५।३८
पं० २० माघ] 1 February 1989 [भा० माघ १२

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

देहिनोऽस्मिन्यथा देहे कौमारं यौवनं जरा।
तथा देहान्तरप्राप्तिर्धीरस्तत्र न मुह्यति ॥१३॥
मात्रास्पर्शास्तु कौन्तेय शीतोष्णसुखदुःखदाः।
आगमापायिनोऽनित्यास्तांस्तितिक्षस्व भारत ॥१४॥

---

२ फरवरी] सूर्योदय ६।४२ सूर्यास्त ५।३८
पं॰ २१ माघ] 2 February [भा॰ माघ १३

एकादशीव्रत

२—

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

यं हि न व्यथयन्त्येते पुरुषं पुरुषर्षभ ।
समदुःखसुखं धीरं सोऽमृतत्वाय कल्पते ॥१५॥
नासतो विद्यते भावो नाभावो विद्यते सतः ।
उभयोरपि दृष्टोऽन्तस्त्वनयोस्तत्त्वदर्शिभिः ॥१६॥

---

३ फरवरी]　सूर्योदय ६।४२　सूर्यास्त ५।३९
पं० २२ माघ]　3 February　[भा० माघ १४

प्रदोषव्रत

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अविनाशि तु तद्विद्धि येन सर्वमिदं ततम्।
विनाशमव्ययस्यास्य न कश्चित्कर्तुमर्हति ॥१७॥
अन्तवन्त इमे देहा नित्यस्योक्ताः शरीरिणः।
अनाशिनोऽप्रमेयस्य तस्माद्युध्यस्व भारत ॥१८॥

---

४ फरवरी]　सूर्योदय ६।४१　सूर्यास्त ५।४०
पं० २३ माघ]　4 February　[भा० माघ १५

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

य एनं वेत्ति हन्तारं यश्चैनं मन्यते हतम्।
उभौ तौ न विजानीतो नायं हन्ति न हन्यते ॥१९॥
न जायते म्रियते वा कदाचि-
न्नायं भूत्वा भविता वा न भूयः।
अजो नित्यः शाश्वतोऽयं पुराणो
न हन्यते हन्यमाने शरीरे ॥२०॥

---

५ फरवरी] सूर्योदय ६।४१ सूर्यास्त ५।४१
पं० '२४ माघ] 5 February [भा० माघ १६

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

वेदाविनाशिनं नित्यं य एनमजमव्ययम्।
कथं स पुरुषः पार्थ कं घातयति हन्ति कम्॥२१॥
वासांसि जीर्णानि यथा विहाय
नवानि गृह्णाति नरोऽपराणि।
तथा शरीराणि विहाय जीर्णा-
न्यन्यानि संयाति नवानि देही॥२२॥

---

६ फरवरी] सूर्योदय ६।४० सूर्यास्त ५।४२
पं० २५ माघ] 6 February [भा० माघ १७

सोमवती मौनी अमावास्या (कुम्भ-पर्व)

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

नैनं छिन्दन्ति शस्त्राणि नैनं दहति पावकः।
न चैनं क्लेदयन्त्यापो न शोषयति मारुतः ॥२३॥
अच्छेद्योऽयमदाह्योऽयमक्लेद्योऽशोष्य एव च।
नित्यः सर्वगतः स्थाणुरचलोऽयं सनातनः ॥२४॥

---

७ फरवरी] सूर्योदय ६।३९ सूर्यास्त ५।४२
पं० २६ माघ] 7 February [भा० माघ १८

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अव्यक्तोऽयमचिन्त्योऽयमविकार्योऽयमुच्यते ।
तस्मादेवं विदित्वैनं नानुशोचितुमर्हसि ॥२५॥
अथ चैनं नित्यजातं नित्यं वा मन्यसे मृतम् ।
तथापि त्वं महाबाहो नैवं शोचितुमर्हसि ॥२६॥

---

८ फरवरी]　सूर्योदय ६ । ३९　सूर्यास्त ५ । ४३
पं० २७ माघ]　8 February　[भा० माघ १९

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

जातस्य हि ध्रुवो मृत्युर्ध्रुवं जन्म मृतस्य च।
तस्मादपरिहार्येऽर्थे न त्वं शोचितुमर्हसि ॥२७॥
अव्यक्तादीनि भूतानि व्यक्तमध्यानि भारत।
अव्यक्तनिधनान्येव तत्र का परिदेवना ॥२८॥

---

९ फरवरी] सूर्योदय ६।३८ सूर्यास्त ५।४३
पं० २८ माघ] 9 February [भा० माघ २०

~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi
~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

आश्चर्यवत्पश्यति कश्चिदेन-
माश्चर्यवद्वदति तथैव चान्यः ।
आश्चर्यवच्चैनमन्यः शृणोति
श्रुत्वाप्येनं वेद न चैव कश्चित् ॥२९॥

१० फरवरी] सूर्योदय ६।३७ सूर्यास्त ५।४४
पं० २९ माघ] 10 February [भा० माघ २१

वसन्तपञ्चमी

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

देही नित्यमवध्योऽयं देहे सर्वस्य भारत।
तस्मात्सर्वाणि भूतानि न त्वं शोचितुमर्हसि ॥३०॥
स्वधर्ममपि चावेक्ष्य न विकम्पितुमर्हसि।
धर्म्याद्धि युद्धाच्छ्रेयोऽन्यत्क्षत्रियस्य न विद्यते ॥३१॥

---

११ फरवरी] सूर्योदय ६।३६ सूर्यास्त ५।४५
पं० ३० माघ] 11 February [भा० माघ २२

रथसप्तमी

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

यदृच्छया चोपपन्नं स्वर्गद्वारमपावृतम् ।
सुखिनः क्षत्रियाः पार्थ लभन्ते युद्धमीदृशम् ॥३२॥
अथ चेत्त्वमिमं धर्म्यं संग्रामं न करिष्यसि ।
ततः स्वधर्मं कीर्तिं च हित्वा पापमवाप्स्यसि ॥३३॥

---

१२ फरवरी] सूर्योदय ६ । ३६ सूर्यास्त ५ । ४६
पं० १ फाल्गुन सं० २०४५] 12 February [भा० माघ २३

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अकीर्तिं चापि भूतानि कथयिष्यन्ति तेऽव्ययाम् ।
सम्भावितस्य चाकीर्तिर्मरणादतिरिच्यते ॥३४॥
भयाद्रणादुपरतं मंस्यन्ते त्वां महारथाः ।
येषां च त्वं बहुमतो भूत्वा यास्यसि लाघवम् ॥३५॥

---

१३ फरवरी] सूर्योदय ६।३५ सूर्यास्त ५।४६
पं० २ फाल्गुन] 13 February [भा० माघ २४

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अवाच्यवादांश्च बहून्वदिष्यन्ति तवाहिताः ।
निन्दन्तस्तव सामर्थ्यं ततो दुःखतरं नु किम् ॥३६॥
हतो वा प्राप्स्यसि स्वर्गं जित्वा वा भोक्ष्यसे महीम् ।
तस्मादुत्तिष्ठ कौन्तेय युद्धाय कृतनिश्चयः ॥३७॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सुखदुःखे समे कृत्वा लाभालाभौ जयाजयौ ।
ततो युद्धाय युज्यस्व नैवं पापमवाप्स्यसि ॥३८॥
एषा तेऽभिहिता सांख्ये बुद्धिर्योगे त्विमां शृणु ।
बुद्ध्या युक्तो यया पार्थ कर्मबन्धं प्रहास्यसि ॥३९॥

---

१५ फरवरी] सूर्योदय ६।३४ सूर्यास्त ५।४८
पं० ४ फाल्गुन] 15 February [भा० माघ २६

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

नेहाभिक्रमनाशोऽस्ति प्रत्यवायो न विद्यते ।
स्वल्पमप्यस्य धर्मस्य त्रायते महतो भयात् ॥४०॥
व्यवसायात्मिका बुद्धिरेकेह कुरुनन्दन ।
बहुशाखा ह्यनन्ताश्च बुद्धयोऽव्यवसायिनाम् ॥४१॥

---

१६ फरवरी] सूर्योदय ६ । ३३ सूर्यास्त ५ । ४९
पं॰ ५ फाल्गुन] 16 February [भा॰ माघ २७

एकादशीव्रत

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

यामिमां पुष्पितां वाचं प्रवदन्त्यविपश्चितः।
वेदवादरताः पार्थ नान्यदस्तीति वादिनः ॥४२॥
कामात्मानः स्वर्गपरा जन्मकर्मफलप्रदाम्।
क्रियाविशेषबहुलां भोगैश्वर्यगतिं प्रति ॥४३॥

---

१७ फरवरी] सूर्योदय ६।३२ सूर्यास्त ५।४९
पं० ६ फाल्गुन] 17 February [भा० माघ २८

~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~

प्रदोषव्रत

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi
~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

भोगैश्वर्यप्रसक्तानां तयापहृतचेतसाम् ।
व्यवसायात्मिका बुद्धिः समाधौ न विधीयते ॥४४॥
त्रैगुण्यविषया वेदा निस्त्रैगुण्यो भवार्जुन ।
निर्द्वन्द्वो नित्यसत्त्वस्थो निर्योगक्षेम आत्मवान् ॥४५॥

---

१८ फरवरी] सूर्योदय ६।३१ सूर्यास्त ५।५०
पं॰ ७ फाल्गुन] 18 February [भा॰ माघ २९

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

यावानर्थ उदपाने सर्वतः सम्प्लुतोदके ।
तावान्सर्वेषु वेदेषु ब्राह्मणस्य विजानतः ॥४६॥
कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन ।
मा कर्मफलहेतुर्भूर्मा ते सङ्गोऽस्त्वकर्मणि ॥४७॥

---

१९ फरवरी] सूर्योदय ६ । ३० सूर्यास्त ५ । ५०
पं० ८ फाल्गुन] 19 February [भा० माघ ३०

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

योगस्थः कुरु कर्माणि सङ्गं त्यक्त्वा धनंजय।
सिद्ध्यसिद्ध्योः समो भूत्वा समत्वं योग उच्यते ॥४८॥
दूरेण ह्यवरं कर्म बुद्धियोगाद्धनंजय।
बुद्धौ शरणमन्विच्छ कृपणाः फलहेतवः ॥४९॥

---

२० फरवरी] सूर्योदय ६।२९ सूर्यास्त ५।५१
पं० ९ फाल्गुन] 20 February [भा० फा० १ शक १९१०

पूर्णिमा, माघस्नानसमाप्त

(खग्रास चन्द्र-ग्रहण)

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

बुद्धियुक्तो जहातीह उभे सुकृतदुष्कृते ।
तस्माद्योगाय युज्यस्व योगः कर्मसु कौशलम् ॥५०॥
कर्मजं बुद्धियुक्ता हि फलं त्यक्त्वा मनीषिणः ।
जन्मबन्धविनिर्मुक्ताः पदं गच्छन्त्यनामयम् ॥५१॥

---

२१ फरवरी] सूर्योदय ६।२८ सूर्यास्त ५।५२
पं० १० फाल्गुन] 21 February [भा० फाल्गुन २

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

यदा ते मोहकलिलं बुद्धिर्व्यतितरिष्यति ।
तदा गन्तासि निर्वेदं श्रोतव्यस्य श्रुतस्य च ॥५२॥
श्रुतिविप्रतिपन्ना ते यदा स्थास्यति निश्चला ।
समाधावचला बुद्धिस्तदा योगमवाप्स्यसि ॥५३॥

---

२२ फरवरी] सूर्योदय ६ । २८ सूर्यास्त ५ । ५३
पं० ११ फाल्गुन] 22 February [भा० फाल्गुन ३

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अर्जुन उवाच

स्थितप्रज्ञस्य का भाषा समाधिस्थस्य केशव।
स्थितधीः किं प्रभाषेत किमासीत व्रजेत किम् ॥५४॥

श्रीभगवानुवाच

प्रजहाति यदा कामान्सर्वान्पार्थ मनोगतान्।
आत्मन्येवात्मना तुष्टः स्थितप्रज्ञस्तदोच्यते ॥५५॥

---

२३ फरवरी] सूर्योदय ६।२७ सूर्यास्त ५।५३
पं० १२ फाल्गुन] 23 February [भा० फाल्गुन ४

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

दुःखेष्वनुद्विग्नमनाः सुखेषु विगतस्पृहः ।
वीतरागभयक्रोधः स्थितधीर्मुनिरुच्यते ॥५६॥
यः सर्वत्रानभिस्नेहस्तत्तत्प्राप्य शुभाशुभम् ।
नाभिनन्दति न द्वेष्टि तस्य प्रज्ञा प्रतिष्ठिता ॥५७॥

---

२४ फरवरी] सूर्योदय ६।२७ सूर्यास्त ५।५४
पं° १३ फाल्गुन] 24 February [भा° फाल्गुन ५

श्रीगणेशचतुर्थीव्रत

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

यदा संहरते चायं कूर्मोऽङ्गानीव सर्वशः ।
इन्द्रियाणीन्द्रियार्थेभ्यस्तस्य प्रज्ञा प्रतिष्ठिता ॥५८॥
विषया विनिवर्तन्ते निराहारस्य देहिनः ।
रसवर्जं रसोऽप्यस्य परं दृष्ट्वा निवर्तते ॥५९॥

---

२५ फरवरी] सूर्योदय ६।२६ सूर्यास्त ५।५५
पं० १४ फाल्गुन] 25 February [भा० फाल्गुन ६

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

यततो ह्यपि कौन्तेय पुरुषस्य विपश्चितः ।
इन्द्रियाणि प्रमाथीनि हरन्ति प्रसभं मनः ॥६०॥
तानि सर्वाणि संयम्य युक्त आसीत मत्परः ।
वशे हि यस्येन्द्रियाणि तस्य प्रज्ञा प्रतिष्ठिता ॥६१॥

---

२६ फरवरी] सूर्योदय ६।२५ सूर्यास्त ५।५६
पं० १५ फाल्गुन] 26 February [भा० फाल्गुन ७

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

ध्यायतो विषयान्पुंसः सङ्गस्तेषूपजायते ।
सङ्गात्संजायते कामः कामात्क्रोधोऽभिजायते ॥६२॥
क्रोधाद्भवति सम्मोहः सम्मोहात्स्मृतिविभ्रमः ।
स्मृतिभ्रंशाद् बुद्धिनाशो बुद्धिनाशात्प्रणश्यति ॥६३॥

---

२७ फरवरी] सूर्योदय ६ । २४ सूर्यास्त ५ । ५६
पं० १६ फाल्गुन] 27 February [भा० फाल्गुन ८

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

रागद्वेषवियुक्तैस्तु विषयानिन्द्रियैश्चरन् ।
आत्मवश्यैर्विधेयात्मा प्रसादमधिगच्छति ॥६४॥
प्रसादे सर्वदुःखानां हानिरस्योपजायते ।
प्रसन्नचेतसो ह्याशु बुद्धिः पर्यवतिष्ठते ॥६५॥

---

२८ फरवरी] सूर्योदय ६ । २२ सूर्यास्त ५ । ५७
पं० १७ फाल्गुन] 28 February [भा० फाल्गुन ९

श्रीजानकीजयन्ती

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

नास्ति बुद्धिरयुक्तस्य न चायुक्तस्य भावना।
न चाभावयतः शान्तिरशान्तस्य कुतः सुखम् ॥६६॥
इन्द्रियाणां हि चरतां यन्मनोऽनुविधीयते।
तदस्य हरति प्रज्ञां वायुर्नावमिवाम्भसि ॥६७॥

---

१ मार्च १९८९] सूर्योदय ६।२१ सूर्यास्त ५।५७
पं० १८ फाल्गुन] 1 March 1989 [भा० फाल्गुन १०

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

तस्माद्यस्य महाबाहो निगृहीतानि सर्वशः।
इन्द्रियाणीन्द्रियार्थेभ्यस्तस्य प्रज्ञा प्रतिष्ठिता ॥६८॥
या निशा सर्वभूतानां तस्यां जागर्ति संयमी।
यस्यां जाग्रति भूतानि सा निशा पश्यतो मुनेः ॥६९॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

आपूर्यमाणमचलप्रतिष्ठं
समुद्रमापः प्रविशन्ति यद्वत्।
तद्वत्कामा यं प्रविशन्ति सर्वे
स शान्तिमाप्नोति न कामकामी ॥७०॥

---

३ मार्च] सूर्योदय ६।२० सूर्यास्त ५।५८
पं० २० फाल्गुन] 3 March [भा० फाल्गुन १२

एकादशीव्रत (स्मार्त्त)

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

विहाय कामान्यः सर्वान्पुमांश्चरति निःस्पृहः।
निर्ममो निरहङ्कारः स शान्तिमधिगच्छति ॥७१॥
एषा ब्राह्मी स्थितिः पार्थ नैनां प्राप्य विमुह्यति।
स्थित्वास्यामन्तकालेऽपि ब्रह्मनिर्वाणमृच्छति ॥७२॥

ॐ तत्सदिति श्रीमद्भगवद्गीतासूपनिषत्सु ब्रह्मविद्यायां
योगशास्त्रे श्रीकृष्णार्जुनसंवादे सांख्ययोगो
नाम द्वितीयोऽध्यायः ॥२॥

---

४ मार्च] सूर्योदय ६।१९ सूर्यास्त ५।५९
पं॰ २१ फाल्गुन] 4 March [भा॰ फाल्गुन १३

~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~

एकादशीव्रत (वैष्णव)

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi
~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

ॐ

तृतीयोऽध्यायः

अर्जुन उवाच

ज्यायसी चेत्कर्मणस्ते मता बुद्धिर्जनार्दन ।
तत्किं कर्मणि घोरे मां नियोजयसि केशव ॥१॥
व्यामिश्रेणेव वाक्येन बुद्धिं मोहयसीव मे ।
तदेकं वद निश्चित्य येन श्रेयोऽहमाप्नुयाम् ॥२॥

---

५ मार्च] सूर्योदय ६।१८ सूर्यास्त ५।५१
पं० २२ फाल्गुन] 5 March [भा० फाल्गुन १४

~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~

फाल्गुन कृष्ण १३ रवि
प्रदोषव्रत

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi
~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

श्रीभगवानुवाच

लोकेऽस्मिन्द्विविधा निष्ठा पुरा प्रोक्ता मयानघ ।
ज्ञानयोगेन सांख्यानां कर्मयोगेन योगिनाम् ॥३॥
न कर्मणामनारम्भान्नैष्कर्म्यं पुरुषोऽश्नुते ।
न च संन्यसनादेव सिद्धिं समधिगच्छति ॥४॥

---

६ मार्च]　सूर्योदय ६ । १७　सूर्यास्त ६ । ००
पं० २३ फाल्गुन]　6 March　[भा० फाल्गुन १५

महाशिवरात्रिव्रत

३—

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

न हि कश्चित्क्षणमपि जातु तिष्ठत्यकर्मकृत्।
कार्यते ह्यवशः कर्म सर्वः प्रकृतिजैर्गुणैः ॥५॥
कर्मेन्द्रियाणि संयम्य य आस्ते मनसा स्मरन्।
इन्द्रियार्थान्विमूढात्मा मिथ्याचारः स उच्यते ॥६॥

७ मार्च]　सूर्योदय ६।१६　सूर्यास्त ६।०
पं० २४ फाल्गुन]　7 March　[श्रा० फाल्गुन १६

भौमवती अमावस्या

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

यस्त्विन्द्रियाणि मनसा नियम्यारभतेऽर्जुन ।
कर्मेन्द्रियैः कर्मयोगमसक्तः स विशिष्यते ॥७॥
नियतं कुरु कर्म त्वं कर्म ज्यायो ह्यकर्मणः ।
शरीरयात्रापि च ते न प्रसिद्ध्येदकर्मणः ॥८॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

यज्ञार्थात्कर्मणोऽन्यत्र लोकोऽयं कर्मबन्धनः ।
तदर्थं कर्म कौन्तेय मुक्तसङ्गः समाचर ॥९॥
सहयज्ञाः प्रजाः सृष्ट्वा पुरोवाच प्रजापतिः ।
अनेन प्रसविष्यध्वमेष वोऽस्त्विष्टकामधुक् ॥१०॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

देवान्भावयतानेन ते देवा भावयन्तु वः।
परस्परं भावयन्तः श्रेयः परमवाप्स्यथ ॥११॥
इष्टान्भोगान्हि वो देवा दास्यन्ते यज्ञभाविताः।
तैर्दत्तानप्रदायैभ्यो यो भुङ्क्ते स्तेन एव सः ॥१२॥

---

१० मार्च]　सूर्योदय　६।१२　सूर्यास्त　६।२
पं॰ २७ फाल्गुन]　10 March　[भा॰ फाल्गुन १९

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

यज्ञशिष्टाशिनः सन्तो मुच्यन्ते सर्वकिल्बिषैः ।
भुञ्जते ते त्वघं पापा ये पचन्त्यात्मकारणात् ॥१३॥
अन्नाद्भवन्ति भूतानि पर्जन्यादन्नसंभवः ।
यज्ञाद्भवति पर्जन्यो यज्ञः कर्मसमुद्भवः ॥१४॥

---

११ मार्च]　सूर्योदय ६ । ११　सूर्यास्त ६ । ३

पं० २८ फाल्गुन]　11 March　[भा० फाल्गुन २०

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

कर्म ब्रह्मोद्भवं विद्धि ब्रह्माक्षरसमुद्भवम् ।
तस्मात्सर्वगतं ब्रह्म नित्यं यज्ञे प्रतिष्ठितम् ॥१५॥
एवं प्रवर्तितं चक्रं नानुवर्तयतीह यः ।
अघायुरिन्द्रियारामो मोघं पार्थ स जीवति ॥१६॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

यस्त्वात्मरतिरेव स्यादात्मतृप्तश्च मानवः ।
आत्मन्येव च संतुष्टस्तस्य कार्यं न विद्यते ॥१७॥
नैव तस्य कृतेनार्थो नाकृतेनेह कश्चन ।
न चास्य सर्वभूतेषु कश्चिदर्थव्यपाश्रयः ॥१८॥

---

१३ मार्च] सूर्योदय ६।९ सूर्यास्त ६।४

पं० ३० फाल्गुन] 13 March [भा० फाल्गुन २२

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

तस्मादसक्तः सततं कार्यं कर्म समाचर।
असक्तो ह्याचरन्कर्म परमाप्नोति पूरुषः ॥१९॥
कर्मणैव हि संसिद्धिमास्थिता जनकादयः।
लोकसंग्रहमेवापि संपश्यन्कर्तुमर्हसि ॥२०॥

---

१४ मार्च] सूर्योदय ६।८ सूर्यास्त ६।४
पं० १ चैत्र २०४५] 14 March [भा० फाल्गुन २३

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

यद्यदाचरति श्रेष्ठस्तत्तदेवेतरो जनः ।
स यत्प्रमाणं कुरुते लोकस्तदनुवर्तते ॥२१॥
न मे पार्थास्ति कर्तव्यं त्रिषु लोकेषु किंचन ।
नानवाप्तमवाप्तव्यं वर्त एव च कर्मणि ॥२२॥

---

१५ मार्च] सूर्योदय ६।७ सूर्यास्त ६।५
पं० २ चैत्र] 15 March [भा० फाल्गुन २४

होलाष्टकारम्भः

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

यदि ह्यहं न वर्तेयं जातु कर्मण्यतन्द्रितः।
मम वर्त्मानुवर्तन्ते मनुष्याः पार्थ सर्वशः ॥२३॥
उत्सीदेयुरिमे लोका न कुर्यां कर्म चेदहम्।
संकरस्य च कर्ता स्यामुपहन्यामिमाः प्रजाः ॥२४॥

---

१६ मार्च] सूर्योदय ६।६ सूर्यास्त ६।५
पं॰ ३ चैत्र] 16 March [भा॰ फाल्गुन २५

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सक्ताः कर्मण्यविद्वांसो यथा कुर्वन्ति भारत।
कुर्याद्विद्वांस्तथासक्तश्चिकीर्षुर्लोकसंग्रहम् ॥२५॥
न बुद्धिभेदं जनयेदज्ञानां कर्मसङ्गिनाम्।
जोषयेत्सर्वकर्माणि विद्वान्युक्तः समाचरन् ॥२६॥

---

१७ मार्च] सूर्योदय ६।५ सूर्यास्त ६।६
पं० ४ चैत्र] 17 March [भा० फाल्गुन २६

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

प्रकृतेः क्रियमाणानि गुणैः कर्माणि सर्वशः ।
अहङ्कारविमूढात्मा कर्ताहमिति मन्यते ॥२७॥
तत्त्ववित्तु महाबाहो गुणकर्मविभागयोः ।
गुणा गुणेषु वर्तन्त इति मत्वा न सज्जते ॥२८॥

---

१८ मार्च]　सूर्योदय ६।३　सूर्यास्त ६।६
पं॰ ५ चैत्र]　18 March　[भा॰ फाल्गुन २७

एकादशीव्रत

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

प्रकृतेर्गुणसंमूढाः सज्जन्ते गुणकर्मसु ।
तानकृत्स्नविदो मन्दान्कृत्स्नविन्न विचालयेत् ॥२९॥
मयि सर्वाणि कर्माणि संन्यस्याध्यात्मचेतसा ।
निराशीर्निर्ममो भूत्वा युध्यस्व विगतज्वरः ॥३०॥

---

१९ मार्च]　सूर्योदय ६।२　सूर्यास्त ६।७
पं० ६ चैत्र]　19 March　[भा० फाल्गुन २८

~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~

प्रदोषव्रत

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi
~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

ये मे मतमिदं नित्यमनुतिष्ठन्ति मानवाः।
श्रद्धावन्तोऽनसूयन्तो मुच्यन्ते तेऽपि कर्मभिः ॥३१॥
ये त्वेतदभ्यसूयन्तो नानुतिष्ठन्ति मे मतम्।
सर्वज्ञानविमूढांस्तान्विद्धि नष्टानचेतसः ॥३२॥

---

२० मार्च] सूर्योदय ६।१ सूर्यास्त ६।७
पं० ७ चैत्र] 20 March [भा० फाल्गुन २९

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सदृशं चेष्टते स्वस्याः प्रकृतेर्ज्ञानवानपि ।
प्रकृतिं यान्ति भूतानि निग्रहः किं करिष्यति ॥३३॥
इन्द्रियस्येन्द्रियस्यार्थे रागद्वेषौ व्यवस्थितौ ।
तयोर्न वशमागच्छेत्तौ ह्यस्य परिपन्थिनौ ॥३४॥

---

२१ मार्च] सूर्योदय ६।० सूर्यास्त ६।८
पं० ८ चैत्र] 21 March [भा० फाल्गुन ३०

~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~

होलिकादाह
(मध्यरात्रिके पश्चात्)

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi
~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

श्रेयान्स्वधर्मो विगुणः परधर्मात्स्वनुष्ठितात्।
स्वधर्मे निधनं श्रेयः परधर्मो भयावहः ॥३५॥

अर्जुन उवाच

अथ केन प्रयुक्तोऽयं पापं चरति पूरुषः।
अनिच्छन्नपि वार्ष्णेय बलादिव नियोजितः ॥३६॥

---

२२ मार्च] सूर्योदय ५।५९ सूर्यास्त ६।८
पं० ९ चैत्र] 22 March [भा० चैत्र १ शक १९११

पूर्णिमा

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

श्रीभगवानुवाच

काम एष क्रोध एष रजोगुणसमुद्भवः ।
महाशनो महापाप्मा विद्ध्येनमिह वैरिणम् ॥३७॥
धूमेनाव्रियते वह्निर्यथादर्शो मलेन च ।
यथोल्बेनावृतो गर्भस्तथा तेनेदमावृतम् ॥३८॥

---

२३ मार्च] सूर्योदय ५ । ५८ सूर्यास्त ६ । ९
पं॰ १० चैत्र] 23 March [भा॰ चैत्र २

वसन्तोत्सव, होली

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

आवृतं ज्ञानमेतेन ज्ञानिनो नित्यवैरिणा ।
कामरूपेण कौन्तेय दुष्पूरेणानलेन च ॥३९॥
इन्द्रियाणि मनो बुद्धिरस्याधिष्ठानमुच्यते ।
एतैर्विमोहयत्येष ज्ञानमावृत्य देहिनम् ॥४०॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

तस्मात्त्वमिन्द्रियाण्यादौ नियम्य भरतर्षभ ।
पाप्मानं प्रजहि ह्येनं ज्ञानविज्ञाननाशनम् ॥४१॥
इन्द्रियाणि पराण्याहुरिन्द्रियेभ्यः परं मनः ।
मनसस्तु परा बुद्धिर्यो बुद्धेः परतस्तु सः ॥४२॥

---

२५ मार्च] सूर्योदय ५ । ५६ सूर्यास्त ६ । १०
पं० १२ चैत्र] 25 March [भा० चैत्र ४

श्रीगणेशचतुर्थीव्रत

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

एवं बुद्धेः परं बुद्ध्वा संस्तभ्यात्मानमात्मना।
जहि शत्रुं महाबाहो कामरूपं दुरासदम् ॥४३॥

ॐ तत्सदिति श्रीमद्भगवद्गीतासूपनिषत्सु ब्रह्मविद्यायां
योगशास्त्रे श्रीकृष्णार्जुनसंवादे कर्मयोगो
नाम तृतीयोऽध्यायः ॥३॥

---

२६ मार्च]　सूर्योदय ५।५४　सूर्यास्त ६।११
पं॰ १३ चैत्र]　26 March　[भा॰ चैत्र ५

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

ॐ

चतुर्थोऽध्यायः

श्रीभगवानुवाच

इमं विवस्वते योगं प्रोक्तवानहमव्ययम्।
विवस्वान्मनवे प्राह मनुरिक्ष्वाकवेऽब्रवीत् ॥१॥
एवं परम्पराप्राप्तमिमं राजर्षयो विदुः।
स कालेनेह महता योगो नष्टः परंतप ॥२॥

---

२७ मार्च] सूर्योदय ५।५४ सूर्यास्त ६।११
पं० १४ चैत्र] 27 March [भा० चैत्र ६

चैत्र कृष्ण ५ सोम

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

स एवायं मया तेऽद्य योगः प्रोक्तः पुरातनः ।
भक्तोऽसि मे सखा चेति रहस्यं ह्येतदुत्तमम् ॥३॥

अर्जुन उवाच

अपरं भवतो जन्म परं जन्म विवस्वतः ।
कथमेतद्विजानीयां त्वमादौ प्रोक्तवानिति ॥४॥

---

२८ मार्च] सूर्योदय ५।५२ सूर्यास्त ६।११

पं॰ १५ चैत्र] 28 March [भा॰ चैत्र ७

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

श्रीभगवानुवाच

बहूनि मे व्यतीतानि जन्मानि तव चार्जुन।
तान्यहं वेद सर्वाणि न त्वं वेत्थ परंतप ॥५॥
अजोऽपि सन्नव्ययात्मा भूतानामीश्वरोऽपि सन्।
प्रकृतिं स्वामधिष्ठाय संभवाम्यात्ममायया ॥६॥

---

२९ मार्च] सूर्योदय ५।५१ सूर्यास्त ६।१२
पं० १६ चैत्र] 29 March [भा० चैत्र ८

~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi
~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत।
अभ्युत्थानमधर्मस्य तदात्मानं सृजाम्यहम् ॥७॥
परित्राणाय साधूनां विनाशाय च दुष्कृताम्।
धर्मसंस्थापनार्थाय संभवामि युगे युगे ॥८॥

---

३० मार्च] सूर्योदय ५।५० सूर्यास्त ६।१२
पं० १७ चैत्र] 30 March [भा० चैत्र ९

श्रीशीतलाष्टमी

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

 CC0. In Public Domain. Digitizagtion by eGangotri

जन्म कर्म च मे दिव्यमेवं यो वेत्ति तत्त्वतः ।
त्यक्त्वा देहं पुनर्जन्म नैति मामेति सोऽर्जुन ॥९॥
वीतरागभयक्रोधा मन्मया मामुपाश्रिताः ।
बहवो ज्ञानतपसा पूता मद्भावमागताः ॥१०॥

---

३१ मार्च] सूर्योदय ५ । ४९ सूर्यास्त ६ । १३
पं० १८ चैत्र] 31 March [भा० चैत्र १०

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

ये यथा मां प्रपद्यन्ते तांस्तथैव भजाम्यहम् ।
मम वर्त्मानुवर्तन्ते मनुष्याः पार्थ सर्वशः ॥११॥
काङ्क्षन्तः कर्मणां सिद्धिं यजन्त इह देवताः ।
क्षिप्रं हि मानुषे लोके सिद्धिर्भवति कर्मजा ॥१२॥

---

१ अप्रैल १९८९] सूर्योदय ५।४८ सूर्यास्त ६।१३
पं॰ १९ चैत्र] 1 April 1989 [भा॰ चैत्र ११

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

चातुर्वर्ण्यं मया सृष्टं गुणकर्मविभागशः ।
तस्य कर्तारमपि मां विद्ध्यकर्तारमव्ययम् ॥१३॥
न मां कर्माणि लिम्पन्ति न मे कर्मफले स्पृहा ।
इति मां योऽभिजानाति कर्मभिर्न स बध्यते ॥१४॥

---

२ अप्रैल] सूर्योदय ५।४७ सूर्यास्त ६।१४
पं० २० चैत्र] 2 April [भा० चैत्र १२

एकादशीव्रत

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

एवं ज्ञात्वा कृतं कर्म पूर्वैरपि मुमुक्षुभिः ।
कुरु कर्मैव तस्मात्त्वं पूर्वैः पूर्वतरं कृतम् ॥१५॥
किं कर्म किमकर्मेति कवयोऽप्यत्र मोहिताः ।
तत्ते कर्म प्रवक्ष्यामि यज्ज्ञात्वा मोक्ष्यसेऽशुभात् ॥१६॥

---

३ अप्रैल]　सूर्योदय ५।४६　सूर्यास्त ६।१४
पं० २१ चैत्र]　3 April　[भा० चैत्र १३

सोमप्रदोष

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

कर्मणो ह्यपि बोद्धव्यं बोद्धव्यं च विकर्मणः ।
अकर्मणश्च बोद्धव्यं गहना कर्मणो गतिः ॥१७॥
कर्मण्यकर्म यः पश्येदकर्मणि च कर्म यः ।
स बुद्धिमान्मनुष्येषु स युक्तः कृत्स्नकर्मकृत् ॥१८॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

यस्य सर्वे समारम्भाः कामसंकल्पवर्जिताः ।
ज्ञानाग्निदग्धकर्माणं तमाहुः पण्डितं बुधाः ॥१९॥
त्यक्त्वा कर्मफलासङ्गं नित्यतृप्तो निराश्रयः ।
कर्मण्यभिप्रवृत्तोऽपि नैव किञ्चित्करोति सः ॥२०॥

---

५ अप्रैल]   सूर्योदय ५।४४   सूर्यास्त ६।१५
पं० २३ चैत्र]   5 April   [भा० चैत्र १५

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

निराशीर्यतचित्तात्मा त्यक्तसर्वपरिग्रहः ।
शारीरं केवलं कर्म कुर्वन्नाप्नोति किल्बिषम् ॥२१॥
यदृच्छालाभसंतुष्टो द्वन्द्वातीतो विमत्सरः ।
समः सिद्धावसिद्धौ च कृत्वापि न निबध्यते ॥२२॥

---

६ अप्रैल] सूर्योदय ५।४३ सूर्यास्त ६।१६
पं० २४ चैत्र] 6 April [भा० चैत्र १६

अमावस्या

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

गतसङ्गस्य मुक्तस्य ज्ञानावस्थितचेतसः।
यज्ञायाचरतः कर्म समग्रं प्रविलीयते ॥२३॥
ब्रह्मार्पणं ब्रह्म हविर्ब्रह्माग्नौ ब्रह्मणा हुतम्।
ब्रह्मैव तेन गन्तव्यं ब्रह्मकर्मसमाधिना ॥२४॥

---

७ अप्रैल] सूर्योदय ५।४२ सूर्यास्त ६।१६
पं० २५ चैत्र] 7 April [भा० चैत्र १७

~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~

चैत्र नवरात्रारम्भ

४—

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi
~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

दैवमेवापरे यज्ञं योगिनः पर्युपासते।
ब्रह्माग्नावपरे यज्ञं यज्ञेनैवोपजुह्वति ॥२५॥
श्रोत्रादीनीन्द्रियाण्यन्ये संयमाग्निषु जुह्वति।
शब्दादीन्विषयानन्य इन्द्रियाग्निषु जुह्वति ॥२६॥

---

८ अप्रैल] सूर्योदय ५।४१ सूर्यास्त ६।१७
पं० २६ चैत्र] 8 April [भा० चैत्र १८

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सर्वाणीन्द्रियकर्माणि प्राणकर्माणि चापरे।
आत्मसंयमयोगाग्नौ जुह्वति ज्ञानदीपिते ॥२७॥
द्रव्ययज्ञास्तपोयज्ञा योगयज्ञास्तथापरे।
स्वाध्यायज्ञानयज्ञाश्च यतयः संशितव्रताः ॥२८॥

---

९ अप्रैल] सूर्योदय ५।४० सूर्यास्त ६।१७
पं॰ २७ चैत्र] 9 April [भा॰ चैत्र १९

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अपाने जुह्वति प्राणं प्राणेऽपानं तथापरे ।
प्राणापानगती रुद्ध्वा प्राणायामपरायणाः ॥२९॥
अपरे नियताहाराः प्राणान्प्राणेषु जुह्वति ।
सर्वेऽप्येते यज्ञविदो यज्ञक्षपितकल्मषाः ॥३०॥

---

१० अप्रैल]　सूर्योदय ५।३९　सूर्यास्त ६।१८
पं० २८ चैत्र]　10 April　[भा० चैत्र २०

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

यज्ञशिष्टामृतभुजो यान्ति ब्रह्म सनातनम् ।
नायं लोकोऽस्त्ययज्ञस्य कुतोऽन्यः कुरुसत्तम ॥३१॥
एवं बहुविधा यज्ञा वितता ब्रह्मणो मुखे ।
कर्मजान्विद्धि तान्सर्वानेवं ज्ञात्वा विमोक्ष्यसे ॥३२॥

---

११ अप्रैल] सूर्योदय ५।३८ सूर्यास्त ६।१८
पं॰ २९ चैत्र] 11 April [भा॰ चैत्र २१

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

श्रेयान्द्रव्यमयाद्यज्ञाज्ज्ञानयज्ञः　परंतप ।
सर्वं कर्माखिलं पार्थ ज्ञाने परिसमाप्यते ॥३३॥
तद्विद्धि प्रणिपातेन परिप्रश्नेन सेवया ।
उपदेक्ष्यन्ति ते ज्ञानं ज्ञानिनस्तत्त्वदर्शिनः ॥३४॥

---

१२ अप्रैल] सूर्योदय ५ । ३७ सूर्यास्त ६ । १९
पं० ३० चैत्र] 12 April [भा० चैत्र २२

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

यज्ज्ञात्वा न पुनर्मोहमेवं यास्यसि पाण्डव।
येन भूतान्यशेषेण द्रक्ष्यस्यात्मन्यथो मयि ॥३५॥
अपि चेदसि पापेभ्यः सर्वेभ्यः पापकृत्तमः।
सर्वं ज्ञानप्लवेनैव वृजिनं संतरिष्यसि ॥३६॥

---

१३ अप्रैल] सूर्योदय ५।३५ सूर्यास्त ६।१९
पं० १ वैशाख सं० २०४६] 13 April [भा० चैत्र २३

मेषसंक्रान्ति

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

यथैधांसि समिद्धोऽग्निर्भस्मसात्कुरुतेऽर्जुन ।
ज्ञानाग्निः सर्वकर्माणि भस्मसात्कुरुते तथा ॥३७॥
न हि ज्ञानेन सदृशं पवित्रमिह विद्यते ।
तत्स्वयं योगसंसिद्धः कालेनात्मनि विन्दति ॥३८॥

---

१४ अप्रैल] सूर्योदय ५ । ३४ सूर्यास्त ६ । २०
पं० २ वैशाख] 14 April [भा० चैत्र २४

श्रीरामनवमी

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

श्रद्धावाँल्लभते ज्ञानं तत्परः संयतेन्द्रियः।
ज्ञानं लब्ध्वा परां शान्तिमचिरेणाधिगच्छति ॥३९॥
अज्ञश्चाश्रद्दधानश्च संशयात्मा विनश्यति।
नायं लोकोऽस्ति न परो न सुखं संशयात्मनः ॥४०॥

---

१५ अप्रैल] सूर्योदय ५।३३ सूर्यास्त ६।२०
पं० ३ वैशाख] 15 April [भा० चैत्र २५

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

योगसंन्यस्तकर्माणं ज्ञानसंछिन्नसंशयम् ।
आत्मवन्तं न कर्माणि निबध्नन्ति धनंजय ॥४१॥
तस्मादज्ञानसंभूतं हृत्स्थं ज्ञानासिनात्मनः ।
छित्त्वैनं संशयं योगमातिष्ठोत्तिष्ठ भारत ॥४२॥

ॐ तत्सदिति श्रीमद्भगवद्गीतासूपनिषत्सु ब्रह्मविद्यायां योगशास्त्रे श्रीकृष्णार्जुनसंवादे ज्ञानकर्मसंन्यासयोगो नाम चतुर्थोऽध्यायः ॥४॥

---

१६ अप्रैल] सूर्योदय ५।३२ सूर्यास्त ६।२१
पं० ४ वैशाख] 16 April [भा० चैत्र २६

~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~

एकादशीव्रत

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi
~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

ॐ

पञ्चमोऽध्यायः

अर्जुन उवाच

संन्यासं कर्मणां कृष्ण पुनर्योगं च शंससि।
यच्छ्रेय एतयोरेकं तन्मे ब्रूहि सुनिश्चितम् ॥१॥

श्रीभगवानुवाच

संन्यासः कर्मयोगश्च निःश्रेयसकरावुभौ।
तयोस्तु कर्मसंन्यासात्कर्मयोगो विशिष्यते ॥२॥

---

१७ अप्रैल] सूर्योदय ५।३१ सूर्यास्त ६।२१
पं० ५ वैशाख] 17 April [भा० चैत्र २७

~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~

चैत्र शुक्ल १२ सोम

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi
~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

ज्ञेयः स नित्यसंन्यासी यो न द्वेष्टि न काङ्क्षति ।
निर्द्वन्द्वो हि महाबाहो सुखं बन्धात्प्रमुच्यते ॥३॥
सांख्ययोगौ पृथग्बालाः प्रवदन्ति न पण्डिताः ।
एकमप्यास्थितःसम्यगुभयोर्विन्दते फलम् ॥४॥

---

१८ अप्रैल] सूर्योदय ५।३१ सूर्यास्त ६।२२
पं० ६ वैशाख] 18 April [भा० चैत्र २८

भौम-प्रदोष, श्रीमहावीर-जयन्ती

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

यत्सांख्यैः प्राप्यते स्थानं तद्योगैरपि गम्यते ।
एकं सांख्यं च योगं च यः पश्यति स पश्यति ॥५॥
संन्यासस्तु महाबाहो दुःखमाप्तुमयोगतः ।
योगयुक्तो मुनिर्ब्रह्म नचिरेणाधिगच्छति ॥६॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

योगयुक्तो विशुद्धात्मा विजितात्मा जितेन्द्रियः ।
सर्वभूतात्मभूतात्मा कुर्वन्नपि न लिप्यते ॥७॥
नैव किंचित्करोमीति युक्तो मन्येत तत्त्ववित् ।
पश्यञ्शृण्वन्स्पृशञ्जिघ्रन्नश्नन्गच्छन्स्वपञ्श्वसन् ॥८॥

---

२० अप्रैल] सूर्योदय ५।२९ सूर्यास्त ६।२३
पं० ८ वैशाख] 20 April [भा० चैत्र ३०

व्रतपूर्णिमा

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

प्रलपन्विसृजन्गृह्णन्नुन्मिषन्निमिषन्नपि ।
इन्द्रियाणीन्द्रियार्थेषु वर्तन्त इति धारयन् ॥९॥
ब्रह्मण्याधाय कर्माणि सङ्गं त्यक्त्वा करोति यः ।
लिप्यते न स पापेन पद्मपत्रमिवाम्भसा ॥१०॥

---

२१ अप्रैल]　सूर्योदय ५।२८　सूर्यास्त ६।२४
पं॰ ९ वैशाख] 21 April [भा॰ वैशाख १ शक १९११

पूर्णिमा, श्रीहनुमान्-जयन्ती
वैशाख स्नानारम्भ

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

कायेन मनसा बुद्ध्या केवलैरिन्द्रियैरपि ।
योगिनः कर्म कुर्वन्ति सङ्गं त्यक्त्वात्मशुद्धये ॥११॥
युक्तः कर्मफलं त्यक्त्वा शान्तिमाप्नोति नैष्ठिकीम् ।
अयुक्तः कामकारेण फले सक्तो निबध्यते ॥१२॥

---

२२ अप्रैल] सूर्योदय ५।२७ सूर्यास्त ६।२४
पं॰ १० वैशाख] 22 April [भा॰ वैशाख २

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सर्वकर्माणि मनसा संन्यस्यास्ते सुखं वशी।
नवद्वारे पुरे देही नैव कुर्वन्न कारयन् ॥१३॥
न कर्तृत्वं न कर्माणि लोकस्य सृजति प्रभुः।
न कर्मफलसंयोगं स्वभावस्तु प्रवर्तते ॥१४॥

---

२३ अप्रैल] सूर्योदय ५।२६ सूर्यास्त ६।२५
पं० ११ वैशाख] 23 April [भा० वैशाख ३

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

नादत्ते कस्यचित्पापं न चैव सुकृतं विभुः ।
अज्ञानेनावृतं ज्ञानं तेन मुह्यन्ति जन्तवः ॥१५॥
ज्ञानेन तु तदज्ञानं येषां नाशितमात्मनः ।
तेषामादित्यवज्ज्ञानं प्रकाशयति तत्परम् ॥१६॥

---

२४ अप्रैल] सूर्योदय ५ । २५ सूर्यास्त ६ । २५
पं० १२ वैशाख] 24 April [भा० वैशाख ४

श्रीगणेशचतुर्थीव्रत

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

तद्बुद्धयस्तदात्मानस्तन्निष्ठास्तत्परायणाः ।
गच्छन्त्यपुनरावृत्तिं ज्ञाननिर्धूतकल्मषाः ॥१७॥
विद्याविनयसंपन्ने ब्राह्मणे गवि हस्तिनि ।
शुनि चैव श्वपाके च पण्डिताः समदर्शिनः ॥१८॥

---

२५ अप्रैल] सूर्योदय ५।२४ सूर्यास्त ६।२६
पं० १३ वैशाख] 25 April [भा० वैशाख ५

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

इहैव तैर्जितः सर्गो येषां साम्ये स्थितं मनः ।
निर्दोषं हि समं ब्रह्म तस्माद्ब्रह्मणि ते स्थिताः ॥१९॥
न प्रहृष्येत्प्रियं प्राप्य नोद्विजेत्प्राप्य चाप्रियम् ।
स्थिरबुद्धिरसंमूढो ब्रह्मविद् ब्रह्मणि स्थितः ॥२०॥

---

२६ अप्रैल] सूर्योदय ५।२३ सूर्यास्त ६।२७
पं० १४ वैशाख] 26 April [भा० वैशाख ६

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

बाह्यस्पर्शेष्वसक्तात्मा विन्दत्यात्मनि यत्सुखम्।
स ब्रह्मयोगयुक्तात्मा सुखमक्षयमश्नुते ॥२१॥
ये हि संस्पर्शजा भोगा दुःखयोनय एव ते।
आद्यन्तवन्तः कौन्तेय न तेषु रमते बुधः ॥२२॥

---

२७ अप्रैल] सूर्योदय ५।२२ सूर्यास्त ६।२७
पं॰ १५ वैशाख] 27 April [भा॰ वैशाख ७

~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi
~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

शक्नोतीहैव यः सोढुं प्राक्शरीरविमोक्षणात् ।
कामक्रोधोद्भवं वेगं स युक्तः स सुखी नरः ॥२३॥
योऽन्तःसुखोऽन्तरारामस्तथान्तर्ज्योतिरेव यः ।
स योगी ब्रह्मनिर्वाणं ब्रह्मभूतोऽधिगच्छति ॥२४॥

---

२८ अप्रैल] सूर्योदय ५।२२ सूर्यास्त ६।२८
पं० १६ वैशाख] 28 April [भा० वैशाख ८

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

लभन्ते ब्रह्मनिर्वाणमृषयः क्षीणकल्मषाः ।
छिन्नद्वैधा यतात्मानः सर्वभूतहिते रताः ॥२५॥
कामक्रोधवियुक्तानां यतीनां यतचेतसाम् ।
अभितो ब्रह्मनिर्वाणं वर्तते विदितात्मनाम् ॥२६॥

---

२९ अप्रैल]　सूर्योदय ५ । २१　सूर्यास्त ६ । २८
पं॰ १७ वैशाख]　29 April　[भा॰ वैशाख ९

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

स्पर्शान्कृत्वा बहिर्बाह्यांश्चक्षुश्चैवान्तरे भ्रुवोः ।
प्राणापानौ समौ कृत्वा नासाभ्यन्तरचारिणौ ॥२७॥
यतेन्द्रियमनोबुद्धिर्मुनिर्मोक्षपरायणः ।
विगतेच्छाभयक्रोधो यः सदा मुक्त एव सः ॥२८॥

---

३० अप्रैल] सूर्योदय ५।२० सूर्यास्त ६।२९
पं० १८ वैशाख] 30 April [भा० वैशाख १०

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

भोक्तारं यज्ञतपसां सर्वलोकमहेश्वरम् ।
सुहृदं सर्वभूतानां ज्ञात्वा मां शान्तिमृच्छति ॥२९॥

ॐ तत्सदिति श्रीमद्भगवद्गीतासूपनिषत्सु ब्रह्मविद्यायां योगशास्त्रे श्रीकृष्णार्जुनसंवादे कर्मसंन्यासयोगो नाम पञ्चमोऽध्यायः ॥५॥

---

१ मई १९८९]　सूर्योदय ५।१९　सूर्यास्त ६।२९
पं० १९ वैशाख]　1 May 1989　[भा० वैशाख ११

~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~

एकादशीव्रत (स्मार्त)

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi
~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

ॐ

षष्ठोऽध्यायः

श्रीभगवानुवाच

अनाश्रितः कर्मफलं कार्यं कर्म करोति यः।
स संन्यासी च योगी च न निरग्निर्न चाक्रियः ॥१॥
यं संन्यासमिति प्राहुर्योगं तं विद्धि पाण्डव।
न ह्यसंन्यस्तसंकल्पो योगी भवति कश्चन ॥२॥

---

२ मई] सूर्योदय ५।१८ सूर्यास्त ६।३०
पं० २० वैशाख] 2 May [भा० वैशाख १२

~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~

वैशाख कृष्ण १२ मंगल

एकादशीव्रत (वैष्णव)

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi
~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

आरुरुक्षोर्मुनेर्योगं कर्म कारणमुच्यते ।
योगारूढस्य तस्यैव शमः कारणमुच्यते ॥३॥
यदा हि नेन्द्रियार्थेषु न कर्मस्वनुषज्जते ।
सर्वसंकल्पसंन्यासी योगारूढस्तदोच्यते ॥४॥

---

३ मई] सूर्योदय ५।१८ सूर्यास्त ६।३०
पं० २१ वैशाख] 3 May [भा० वैशाख १३

~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~

प्रदोषव्रत

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi
~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

उद्धरेदात्मनात्मानं नात्मानमवसादयेत् ।
आत्मैव ह्यात्मनो बन्धुरात्मैव रिपुरात्मनः ॥५॥
बन्धुरात्मात्मनस्तस्य येनात्मैवात्मना जितः ।
अनात्मनस्तु शत्रुत्वे वर्तेतात्मैव शत्रुवत् ॥६॥

---

४ मई] सूर्योदय ५।१७ सूर्यास्त ६।३१
पं० २२ वैशाख] 4 May [भा० वैशाख १४

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

जितात्मनः प्रशान्तस्य परमात्मा समाहितः।
शीतोष्णसुखदुःखेषु तथा मानापमानयोः ॥७॥
ज्ञानविज्ञानतृप्तात्मा कूटस्थो विजितेन्द्रियः।
युक्त इत्युच्यते योगी समलोष्टाश्मकाञ्चनः ॥८॥

---

५ मई]   सूर्योदय   ५।१६   सूर्यास्त   ६।३१
पं० २३ वैशाख]   5 May   [भा० वैशाख १५

अमावास्या

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सुहृन्मित्रार्युदासीनमध्यस्थद्वेष्यबन्धुषु ।
साधुष्वपि च पापेषु समबुद्धिर्विशिष्यते ॥९॥
योगी युञ्जीत सततमात्मानं रहसि स्थितः ।
एकाकी यतचित्तात्मा निराशीरपरिग्रहः ॥१०॥

---

६ मई] सूर्योदय ५ । १५ सूर्यास्त ६ । ३१
पं० २४ वैशाख] 6 May [भा० वैशाख १६

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

शुचौ देशे प्रतिष्ठाप्य स्थिरमासनमात्मनः ।
नात्युच्छ्रितं नातिनीचं चैलाजिनकुशोत्तरम् ॥११॥
तत्रैकाग्रं मनः कृत्वा यतचित्तेन्द्रियक्रियः ।
उपविश्यासने युञ्ज्याद्योगमात्मविशुद्धये ॥१२॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

समं कायशिरोग्रीवं धारयन्नचलं स्थिरः।
संप्रेक्ष्य नासिकाग्रं स्वं दिशश्चानवलोकयन् ॥१३॥
प्रशान्तात्मा विगतभीर्ब्रह्मचारिव्रते स्थितः।
मनः संयम्य मच्चित्तो युक्त आसीत मत्परः ॥१४॥

---

८ मई] सूर्योदय ५।१४ सूर्यास्त ६।३२
पं० २६ वैशाख] 8 May [भा० वैशाख १८

अक्षयतृतीया

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

युञ्जन्नेवं सदात्मानं योगी नियतमानसः।
शान्तिं निर्वाणपरमां मत्संस्थामधिगच्छति ॥१५॥
नात्यश्नतस्तु योगोऽस्ति न चैकान्तमनश्नतः।
न चातिस्वप्नशीलस्य जाग्रतो नैव चार्जुन ॥१६॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

युक्ताहारविहारस्य युक्तचेष्टस्य कर्मसु ।
युक्तस्वप्नावबोधस्य योगो भवति दुःखहा ॥१७॥
यदा विनियतं चित्तमात्मन्येवावतिष्ठते ।
निःस्पृहः सर्वकामेभ्यो युक्त इत्युच्यते तदा ॥१८॥

---

१० मई]　सूर्योदय ५।१२　सूर्यास्त ६।३३
पं० २८ वैशाख]　10 May　[भा० वैशाख २०

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

यथा दीपो निवातस्थो नेङ्गते सोपमा स्मृता ।
योगिनो यतचित्तस्य युञ्जतो योगमात्मनः ॥१९॥
यत्रोपरमते चित्तं निरुद्धं योगसेवया ।
यत्र चैवात्मनात्मानं पश्यन्नात्मनि तुष्यति ॥२०॥

---

११ मई] सूर्योदय ५। ११ सूर्यास्त ६। ३४
पं० २९ वैशाख] 11 May [भा० वैशाख २१

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सुखमात्यन्तिकं यत्तद्बुद्धिग्राह्यमतीन्द्रियम् ।
वेत्ति यत्र न चैवायं स्थितश्चलति तत्त्वतः ॥२१॥
यं लब्ध्वा चापरं लाभं मन्यते नाधिकं ततः ।
यस्मिन्स्थितो न दुःखेन गुरुणापि विचाल्यते ॥२२॥

---

१२ मई] सूर्योदय ५ । ११ सूर्यास्त ६ । ३५
पं० ३० वैशाख] 12 May [भा० वैशाख २२

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

तं विद्याद् दुःखसंयोगवियोगं योगसंज्ञितम् ।
स निश्चयेन योक्तव्यो योगोऽनिर्विण्णचेतसा ॥२३॥
संकल्पप्रभवान्कामांस्त्यक्त्वा सर्वानशेषतः ।
मनसैवेन्द्रियग्रामं विनियम्य समन्ततः ॥२४॥

---

१३ मई]　सूर्योदय ५।१०　सूर्यास्त ६।३५
पं० ३१ वैशाख]　13 May　[भा० वैशाख २३

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

शनैः शनैरुपरमेद्बुद्ध्या धृतिगृहीतया ।
आत्मसंस्थं मनः कृत्वा न किंचिदपि चिन्तयेत् ॥२५॥
यतो यतो निश्चरति मनश्चञ्चलमस्थिरम् ।
ततस्ततो नियम्यैतदात्मन्येव वशं नयेत् ॥२६॥

---

१४ मई] सूर्योदय ५ । १० सूर्यास्त ६ । ३६
पं० १ ज्येष्ठ सं० २०४६] 14 May [भा० वैशाख २४

~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~

श्रीजानकीनवमी

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi
~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

प्रशान्तमनसं ह्येनं योगिनं सुखमुत्तमम् ।
उपैति शान्तरजसं ब्रह्मभूतमकल्मषम् ॥२७॥
युञ्जन्नेवं सदात्मानं योगी विगतकल्मषः ।
सुखेन ब्रह्मसंस्पर्शमत्यन्तं सुखमश्नुते ॥२८॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सर्वभूतस्थमात्मानं सर्वभूतानि चात्मनि ।
ईक्षते योगयुक्तात्मा सर्वत्र समदर्शनः ॥२९॥
यो मां पश्यति सर्वत्र सर्वं च मयि पश्यति ।
तस्याहं न प्रणश्यामि स च मे न प्रणश्यति ॥३०॥

---

१६ मई] सूर्योदय ५।८ सूर्यास्त ६।३७
पं० ३ ज्येष्ठ] 16 May [भा० वैशाख २६

~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~

एकादशीव्रत

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi
~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सर्वभूतस्थितं यो मां भजत्येकत्वमास्थितः ।
सर्वथा वर्तमानोऽपि स योगी मयि वर्तते ॥३१॥
आत्मौपम्येन सर्वत्र समं पश्यति योऽर्जुन ।
सुखं वा यदि वा दुःखं स योगी परमो मतः ॥३२॥

---

१७ मई] सूर्योदय ५।८ सूर्यास्त ६।३८
पं० ४ ज्येष्ठ] 17 May [भा० वैशाख २७

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अर्जुन उवाच

योऽयं योगस्त्वया प्रोक्तः साम्येन मधुसूदन ।
एतस्याहं न पश्यामि चञ्चलत्वात्स्थितिं स्थिराम् ॥३३॥
चञ्चलं हि मनः कृष्ण प्रमाथि बलवद्दृढम् ।
तस्याहं निग्रहं मन्ये वायोरिव सुदुष्करम् ॥३४॥

---

१८ मई] सूर्योदय ५।७ सूर्यास्त ६।३८
पं० ५ ज्येष्ठ] 18 May [भा० वैशाख २८

~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~

प्रदोषव्रत

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi
~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

श्रीभगवानुवाच

असंशयं महाबाहो मनो दुर्निग्रहं चलम्।
अभ्यासेन तु कौन्तेय वैराग्येण च गृह्यते ॥३५॥
असंयतात्मना योगो दुष्प्राप इति मे मतिः।
वश्यात्मना तु यतता शक्योऽवाप्तुमुपायतः ॥३६॥

---

१९ मई]　सूर्योदय ५।७　सूर्यास्त ६।३९

पं० ६ ज्येष्ठ]　19 May　[भा० वैशाख २९

~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~

श्रीनृसिंह-चतुर्दशीव्रत

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi
~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अर्जुन उवाच

अयतिः श्रद्धयोपेतो योगाच्चलितमानसः ।
अप्राप्य योगसंसिद्धिं कां गतिं कृष्ण गच्छति ॥३७॥
कच्चिन्नोभयविभ्रष्टश्छिन्नाभ्रमिव नश्यति ।
अप्रतिष्ठो महाबाहो विमूढो ब्रह्मणः पथि ॥३८॥

---

२० मई] सूर्योदय ५ । ६ सूर्यास्त ६ । ३९
पं० ७ ज्येष्ठ] 20 May [भा० वैशाख ३०

वैशाखी पूर्णिमा

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

एतन्मे संशयं कृष्ण छेत्तुमर्हस्यशेषतः ।
त्वदन्यः संशयस्यास्य छेत्ता न ह्युपपद्यते ॥३९॥

श्रीभगवानुवाच

पार्थ नैवेह नामुत्र विनाशस्तस्य विद्यते ।
न हि कल्याणकृत्कश्चिद्दुर्गतिं तात गच्छति ॥४०॥

---

२१ मई] सूर्योदय ५।६ सूर्यास्त ६।४०
पं॰ ८ ज्येष्ठ] 21 May [भा॰ वैशाख ३१

~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi
~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

प्राप्य पुण्यकृतां लोकानुषित्वा शाश्वतीः समाः ।
शुचीनां श्रीमतां गेहे योगभ्रष्टोऽभिजायते ॥४१॥
अथवा योगिनामेव कुले भवति धीमताम् ।
एतद्धि दुर्लभतरं लोके जन्म यदीदृशम् ॥४२॥

---

२२ मई]　सूर्योदय ५।६　सूर्यास्त ६।४०
पं० ९ ज्येष्ठ] 22 May [भा० ज्येष्ठ १ शक १९११

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

तत्र तं बुद्धिसंयोगं लभते पौर्वदेहिकम्।
यतते च ततो भूयः संसिद्धौ कुरुनन्दन ॥४३॥
पूर्वाभ्यासेन तेनैव ह्रियते ह्यवशोऽपि सः।
जिज्ञासुरपि योगस्य शब्दब्रह्मातिवर्तते ॥४४॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

प्रयत्नाद्यतमानस्तु योगी संशुद्धकिल्बिषः ।
अनेकजन्मसंसिद्धस्ततो याति परां गतिम् ॥४५॥
तपस्विभ्योऽधिको योगी ज्ञानिभ्योऽपि मतोऽधिकः ।
कर्मिभ्यश्चाधिको योगी तस्माद्योगी भवार्जुन ॥४६॥

---

२४ मई] सूर्योदय ५ । ५ सूर्यास्त ६ । ४१
पं० ११ ज्येष्ठ] 24 May [भा० ज्येष्ठ ३

~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~

श्रीगणेशचतुर्थीव्रत

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi
~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

योगिनामपि सर्वेषां मद्गतेनान्तरात्मना।
श्रद्धावान्भजते यो मां स मे युक्ततमो मतः ॥४७॥

ॐ तत्सदिति श्रीमद्भगवद्गीतासूपनिषत्सु ब्रह्मविद्यायां योगशास्त्रे श्रीकृष्णार्जुनसंवादे आत्मसंयमयोगो नाम षष्ठोऽध्यायः ॥६॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

ॐ

सप्तमोऽध्यायः

श्रीभगवानुवाच

मय्यासक्तमनाः पार्थ योगं युञ्जन्मदाश्रयः ।
असंशयं समग्रं मां यथा ज्ञास्यसि तच्छृणु ॥१॥
ज्ञानं तेऽहं सविज्ञानमिदं वक्ष्याम्यशेषतः ।
यज्ज्ञात्वा नेह भूयोऽन्यज्ज्ञातव्यमवशिष्यते ॥२॥

---

२६ मई] सूर्योदय ५।५ सूर्यास्त ६।४३
पं० १३ ज्येष्ठ] 26 May [भा० ज्येष्ठ ५

~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~

ज्येष्ठ कृष्ण ६ शुक्र

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi
~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

मनुष्याणां सहस्रेषु कश्चिद्यतति सिद्धये।
यततामपि सिद्धानां कश्चिन्मां वेत्ति तत्त्वतः ॥३॥
भूमिरापोऽनलो वायुः खं मनो बुद्धिरेव च।
अहंकार इतीयं मे भिन्ना प्रकृतिरष्टधा ॥४॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अपरेयमितस्त्वन्यां प्रकृतिं विद्धि मे पराम्।
जीवभूतां महाबाहो ययेदं धार्यते जगत्॥५॥
एतद्योनीनि भूतानि सर्वाणीत्युपधारय।
अहं कृत्स्नस्य जगतः प्रभवः प्रलयस्तथा॥६॥

---

२८ मई]　सूर्योदय ५।४　सूर्यास्त ६।४४
पं० १५ ज्येष्ठ]　28 May　[भा० ज्येष्ठ ७

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

मत्तः परतरं नान्यत्किञ्चिदस्ति धनंजय।
मयि सर्वमिदं प्रोतं सूत्रे मणिगणा इव ॥७॥
रसोऽहमप्सु कौन्तेय प्रभास्मि शशिसूर्ययोः।
प्रणवः सर्ववेदेषु शब्दः खे पौरुषं नृषु ॥८॥

---

२९ मई] सूर्योदय ५।३ सूर्यास्त ६।४४
पं० १६ ज्येष्ठ] 29 May [भा० ज्येष्ठ ८

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

पुण्यो गन्धः पृथिव्यां च तेजश्चास्मि विभावसौ ।
जीवनं सर्वभूतेषु तपश्चास्मि तपस्विषु ॥९॥
बीजं मां सर्वभूतानां विद्धि पार्थ सनातनम् ।
बुद्धिर्बुद्धिमतामस्मि तेजस्तेजस्विनामहम् ॥१०॥

---

३० मई] सूर्योदय ५।३ सूर्यास्त ६।४५
पं० १७ ज्येष्ठ] 30 May [भा० ज्येष्ठ ९

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

बलं बलवतां चाहं कामरागविवर्जितम् ।
धर्माविरुद्धो भूतेषु कामोऽस्मि भरतर्षभ ॥११॥
ये चैव सात्त्विका भावा राजसास्तामसाश्च ये ।
मत्त एवेति तान्विद्धि न त्वहं तेषु ते मयि ॥१२॥

---

३१ मई] सूर्योदय ५ । ३ सूर्यास्त ६ । ४६
पं० १८ ज्येष्ठ] 31 May [भा० ज्येष्ठ १०

~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~

एकादशीव्रत

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi
~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

त्रिभिर्गुणमयैर्भावैरेभिः सर्वमिदं जगत्।
मोहितं नाभिजानाति मामेभ्यः परमव्ययम्॥१३॥
दैवी ह्येषा गुणमयी मम माया दुरत्यया।
मामेव ये प्रपद्यन्ते मायामेतां तरन्ति ते॥१४॥

---

१ जून १९८९] सूर्योदय ५।३ सूर्यास्त ६।४६
पं० १९ ज्येष्ठ] 1 June 1989 [भा० ज्येष्ठ ११

~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~

प्रदोषव्रत

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi
~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

न मां दुष्कृतिनो मूढाः प्रपद्यन्ते नराधमाः ।
माययापहृतज्ञाना आसुरं भावमाश्रिताः ॥१५॥
चतुर्विधा भजन्ते मां जनाः सुकृतिनोऽर्जुन ।
आर्तो जिज्ञासुरर्थार्थी ज्ञानी च भरतर्षभ ॥१६॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

तेषां ज्ञानी नित्ययुक्त एकभक्तिर्विशिष्यते ।
प्रियो हि ज्ञानिनोऽत्यर्थमहं स च मम प्रियः ॥१७॥
उदाराः सर्व एवैते ज्ञानी त्वात्मैव मे मतम् ।
आस्थितः स हि युक्तात्मा मामेवानुत्तमां गतिम् ॥१८॥

---

३ जून]　सूर्योदय ५ । २　सूर्यास्त ६ । ४७
पं० २१ ज्येष्ठ]　3 June　[भा० ज्येष्ठ १३

अमावास्या, वट सावित्रीव्रत

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

बहूनां जन्मनामन्ते ज्ञानवान्मां प्रपद्यते ।
वासुदेवः सर्वमिति स महात्मा सुदुर्लभः ॥१९॥
कामैस्तैस्तैर्हृतज्ञानाः प्रपद्यन्तेऽन्यदेवताः ।
तं तं नियममास्थाय प्रकृत्या नियताः स्वया ॥२०॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

यो यो यां यां तनुं भक्तः श्रद्धयार्चितुमिच्छति ।
तस्य तस्याचलां श्रद्धां तामेव विदधाम्यहम् ॥२१॥
स तया श्रद्धया युक्तस्तस्याराधनमीहते ।
लभते च ततः कामान्मयैव विहितान्हि तान् ॥२२॥

---

५ जून] सूर्योदय ५ । २ सूर्यास्त ६ । ४८
पं० २३ ज्येष्ठ] 5 June [भा० ज्येष्ठ १५

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अन्तवत्तु फलं तेषां तद्भवत्यल्पमेधसाम् ।
देवान्देवयजो यान्ति मद्भक्ता यान्ति मामपि ॥२३॥
अव्यक्तं व्यक्तिमापन्नं मन्यन्ते मामबुद्धयः ।
परं भावमजानन्तो ममाव्ययमनुत्तमम् ॥२४॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

नाहं प्रकाशः सर्वस्य योगमायासमावृतः ।
मूढोऽयं नाभिजानाति लोको मामजमव्ययम् ॥२५॥
वेदाहं समतीतानि वर्तमानानि चार्जुन ।
भविष्याणि च भूतानि मां तु वेद न कश्चन ॥२६॥

---

७ जून] सूर्योदय ५ । २ सूर्यास्त ६ । ४८
पं० २५ ज्येष्ठ] 7 June [भा० ज्येष्ठ १७

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

इच्छाद्वेषसमुत्थेन द्वन्द्वमोहेन भारत ।
सर्वभूतानि संमोहं सर्गे यान्ति परंतप ॥२७॥
येषां त्वन्तगतं पापं जनानां पुण्यकर्मणाम् ।
ते द्वन्द्वमोहनिर्मुक्ता भजन्ते मां दृढव्रताः ॥२८॥

---

८ जून]　सूर्योदय ५ । २　सूर्यास्त ६ । ४९
पं० २६ ज्येष्ठ]　8 June　[भा० ज्येष्ठ १८

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

जरामरणमोक्षाय मामाश्रित्य यतन्ति ये।
ते ब्रह्म तद्विदुः कृत्स्नमध्यात्मं कर्म चाखिलम् ॥२९॥
साधिभूताधिदैवं मां साधियज्ञं च ये विदुः।
प्रयाणकालेऽपि च मां ते विदुर्युक्तचेतसः ॥३०॥

ॐ तत्सदिति श्रीमद्भगवद्गीतासूपनिषत्सु ब्रह्मविद्यायां योगशास्त्रे श्रीकृष्णार्जुनसंवादे ज्ञानविज्ञानयोगो नाम सप्तमोऽध्यायः ॥ ७ ॥

---

९ जून] सूर्योदय ५।२ सूर्यास्त ६।४९
पं० २७ ज्येष्ठ] 9 June [भा० ज्येष्ठ १९

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

ॐ

अष्टमोऽध्यायः

अर्जुन उवाच

किं तद्ब्रह्म किमध्यात्मं किं कर्म पुरुषोत्तम ।
अधिभूतं च किं प्रोक्तमधिदैवं किमुच्यते ॥१॥
अधियज्ञः कथं कोऽत्र देहेऽस्मिन्मधुसूदन ।
प्रयाणकाले च कथं ज्ञेयोऽसि नियतात्मभिः ॥२॥

---

१० जून] सूर्योदय ५।२ सूर्यास्त ६।४९
पं० २८ ज्येष्ठ] 10 June [भा० ज्येष्ठ २०

~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~

ज्येष्ठ शुक्ल ७ शनि

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi
~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

श्रीभगवानुवाच

अक्षरं ब्रह्म परमं स्वभावोऽध्यात्ममुच्यते ।
भूतभावोद्भवकरो विसर्गः कर्मसंज्ञितः ॥३॥
अधिभूतं क्षरो भावः पुरुषश्चाधिदैवतम् ।
अधियज्ञोऽहमेवात्र देहे देहभृतां वर ॥४॥

---

११ जून] सूर्योदय ५।२ सूर्यास्त ६।४९
पं० २९ ज्येष्ठ] 11 June [भा० ज्येष्ठ २१

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अन्तकाले च मामेव स्मरन्मुक्त्वा कलेवरम् ।
यः प्रयाति स मद्भावं याति नास्त्यत्र संशयः ॥५॥
यं यं वापि स्मरन्भावं त्यजत्यन्ते कलेवरम् ।
तं तमेवैति कौन्तेय सदा तद्भावभावितः ॥६॥

---

१२ जून] सूर्योदय ५ । २ सूर्यास्त ६ । ५०
पं० ३० ज्येष्ठ] 12 June [भा० ज्येष्ठ २२

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

तस्मात्सर्वेषु कालेषु मामनुस्मर युध्य च ।
मय्यर्पितमनोबुद्धिर्मामेवैष्यस्यसंशयम् ॥७॥
अभ्यासयोगयुक्तेन चेतसा नान्यगामिना ।
परमं पुरुषं दिव्यं याति पार्थानुचिन्तयन् ॥८॥

---

१३ जून] सूर्योदय ५ । २ सूर्यास्त ६ । ५०
पं० ३१ ज्येष्ठ] 13 June [भा० ज्येष्ठ २३

गंगादशहरा

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

कविं पुराणमनुशासितार-
मणोरणीयांसमनुस्मरेद्यः ।
सर्वस्य धातारमचिन्त्यरूप-
मादित्यवर्णं तमसः परस्तात् ॥९॥

---

१४ जून]　सूर्योदय ५।२　सूर्यास्त ६।५१
पं० १ आषाढ़ सं० २०४६]　14 June [भा० ज्येष्ठ २४

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

प्रयाणकाले मनसाचलेन
भक्त्या युक्तो योगबलेन चैव।
भ्रुवोर्मध्ये प्राणमावेश्य सम्यक्
स तं परं पुरुषमुपैति दिव्यम् ॥१०॥

---

१५ जून]　सूर्योदय ५।२　सूर्यास्त ६।५१
पं० २ आषाढ़]　15 June [भा० ज्येष्ठ २५

~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~

निर्जला-एकादशीव्रत (भीमसेनी)

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi
~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

यदक्षरं वेदविदो वदन्ति
विशन्ति यद्यतयो वीतरागाः ।
यदिच्छन्तो ब्रह्मचर्यं चरन्ति
तत्ते पदं संग्रहेण प्रवक्ष्ये ॥११॥

---

१६ जून] सूर्योदय ५।२ सूर्यास्त ६।५१
पं० ३ आषाढ़] 16 June [भा० ज्येष्ठ २६

प्रदोषव्रत

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सर्वद्वाराणि संयम्य मनो हृदि निरुध्य च।
मूर्ध्न्याधायात्मनः प्राणमास्थितो योगधारणाम् ॥१२॥
ओमित्येकाक्षरं ब्रह्म व्याहरन्मामनुस्मरन्।
यः प्रयाति त्यजन्देहं स याति परमां गतिम् ॥१३॥

---

१७ जून] सूर्योदय ५।२ सूर्यास्त ६।५२
पं० ४ आषाढ़] 17 Junc [भा० ज्येष्ठ २७

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अनन्यचेताः सततं यो मां स्मरति नित्यशः ।
तस्याहं सुलभः पार्थ नित्ययुक्तस्य योगिनः ॥१४॥
मामुपेत्य पुनर्जन्म दुःखालयमशाश्वतम् ।
नाप्नुवन्ति महात्मानः संसिद्धिं परमां गताः ॥१५॥

---

१८ जून] सूर्योदय ५ । ३ सूर्यास्त ६ । ५२
पं० ५ आषाढ़] · 18 June [भा० ज्येष्ठ २८

व्रतकी पूर्णिमा

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

आब्रह्मभुवनाल्लोकाः पुनरावर्तिनोऽर्जुन ।
मामुपेत्य तु कौन्तेय पुनर्जन्म न विद्यते ॥१६॥
सहस्त्रयुगपर्यन्तमहर्यद्ब्रह्मणो विदुः ।
रात्रिं युगसहस्त्रान्तां तेऽहोरात्रविदो जनाः ॥१७॥

---

१९ जून] सूर्योदय ५ । ३ सूर्यास्त ६ । ५३
पं० ६ आषाढ़] 19 June [भा० ज्येष्ठ २९

~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~

पूर्णिमा

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi
~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अव्यक्ताद्व्यक्तयः सर्वाः प्रभवन्त्यहरागमे ।
रात्र्यागमे प्रलीयन्ते तत्रैवाव्यक्तसंज्ञके ॥१८॥
भूतग्रामः स एवायं भूत्वा भूत्वा प्रलीयते ।
रात्र्यागमेऽवशः पार्थ प्रभवत्यहरागमे ॥१९॥

---

२० जून] सूर्योदय ५।३ सूर्यास्त ६।५३
पं० ७ आषाढ़] 20 June [भा० ज्येष्ठ ३०

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

परस्तस्मात्तु भावोऽन्योऽव्यक्तोऽव्यक्तात्सनातनः ।
यः स सर्वेषु भूतेषु नश्यत्सु न विनश्यति ॥२०॥
अव्यक्तोऽक्षर इत्युक्तस्तमाहुः परमां गतिम् ।
यं प्राप्य न निवर्तन्ते तद्धाम परमं मम ॥२१॥

---

२१ जून] सूर्योदय ५।३ सूर्यास्त ६।५३
पं० ८ आषाढ़] 21 June [भा० ज्येष्ठ ३१

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

पुरुषः स परः पार्थ भक्त्या लभ्यस्त्वनन्यया ।
यस्यान्तःस्थानि भूतानि येन सर्वमिदं ततम् ॥२२॥
यत्र काले त्वनावृत्तिमावृत्तिं चैव योगिनः ।
प्रयाता यान्ति तं कालं वक्ष्यामि भरतर्षभ ॥२३॥

---

२२ जून]　सूर्योदय ५।३　सूर्यास्त ६।५३
पं० ९ आषाढ़] 22 June [भा० आषाढ़ १ शक १९११

~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~

श्रीगणेशचतुर्थीव्रत

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi
~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अग्निर्ज्योतिरहः शुक्लः षण्मासा उत्तरायणम् ।
तत्र प्रयाता गच्छन्ति ब्रह्म ब्रह्मविदो जनाः ॥२४॥
धूमो रात्रिस्तथा कृष्णः षण्मासा दक्षिणायनम् ।
तत्र चान्द्रमसं ज्योतिर्योगी प्राप्य निवर्तते ॥२५॥

---

२३ जून] सूर्योदय ५ । ४ सूर्यास्त ६ । ५३
पं० १० आषाढ़] 23 June [भा० आषाढ़ २

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

शुक्लकृष्णे गती ह्येते जगतः शाश्वते मते।
एकया यात्यनावृत्तिमन्ययावर्तते पुनः ॥२६॥
नैते सृती पार्थ जानन्योगी मुह्यति कश्चन।
तस्मात्सर्वेषु कालेषु योगयुक्तो भवार्जुन ॥२७॥

---

२४ जून] सूर्योदय ५।४ सूर्यास्त ६।५३
पं० ११ आषाढ़] 24 June [भा० आषाढ़ ३

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

वेदेषु यज्ञेषु तपःसु चैव
दानेषु यत्पुण्यफलं प्रदिष्टम्।
अत्येति तत्सर्वमिदं विदित्वा
योगी परं स्थानमुपैति चाद्यम् ॥२८॥

ॐ तत्सदिति श्रीमद्भगवद्गीतासूपनिषत्सु ब्रह्मविद्यायां योगशास्त्रे श्रीकृष्णार्जुनसंवादे अक्षरब्रह्मयोगो नामाष्टमोऽध्यायः ॥८॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

ॐ

नवमोऽध्यायः

श्रीभगवानुवाच

इदं तु ते गुह्यतमं प्रवक्ष्याम्यनसूयवे।
ज्ञानं विज्ञानसहितं यज्ज्ञात्वा मोक्ष्यसेऽशुभात् ॥१॥
राजविद्या राजगुह्यं पवित्रमिदमुत्तमम्।
प्रत्यक्षावगमं धर्म्यं सुसुखं कर्तुमव्ययम् ॥२॥

---

२६ जून] सूर्योदय ५।४ सूर्यास्त ६।५३
पं० १३ आषाढ़] 26 June [भा० आषाढ़ ५

~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~

आषाढ़ कृष्ण ८ सोम

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi
~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अश्रद्दधानाः पुरुषा धर्मस्यास्य परंतप ।
अप्राप्य मां निवर्तन्ते मृत्युसंसारवर्त्मनि ॥३॥
मया ततमिदं सर्वं जगदव्यक्तमूर्तिना ।
मत्स्थानि सर्वभूतानि न चाहं तेष्ववस्थितः ॥४॥

---

२७ जून] सूर्योदय ५।४ सूर्यास्त ६।५३
पं० १४ आषाढ़] 27 June [भा० आषाढ़ ६

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

न च मत्स्थानि भूतानि पश्य मे योगमैश्वरम्।
भूतभृन्न च भूतस्थो ममात्मा भूतभावनः ॥५॥
यथाकाशस्थितो नित्यं वायुः सर्वत्रगो महान्।
तथा सर्वाणि भूतानि मत्स्थानीत्युपधारय ॥६॥

---

२८ जून]　सूर्योदय ५।५　सूर्यास्त ६।५४
पं॰ १५ आषाढ़]　28 June　[भा॰ आषाढ़ ७

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सर्वभूतानि कौन्तेय प्रकृतिं यान्ति मामिकाम् ।
कल्पक्षये पुनस्तानि कल्पादौ विसृजाम्यहम् ॥७॥
प्रकृतिं स्वामवष्टभ्य विसृजामि पुनः पुनः ।
भूतग्राममिमं कृत्स्नमवशं प्रकृतेर्वशात् ॥८॥

---

२९ जून] सूर्योदय ५।५ सूर्यास्त ६।५४
पं० १६ आषाढ़] 29 June [भा० आषाढ़ ८

एकादशीव्रत

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

न च मां तानि कर्माणि निबध्नन्ति धनंजय।
उदासीनवदासीनमसक्तं तेषु कर्मसु ॥९॥
मयाध्यक्षेण प्रकृतिः सूयते सचराचरम्।
हेतुनानेन कौन्तेय जगद्विपरिवर्तते ॥१०॥

---

३० जून] सूर्योदय ५।५ सूर्यास्त ६।५४
पं० १७ आषाढ़] 30 June [भा० आषाढ़ ९

प्रदोषव्रत

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अवजानन्ति मां मूढा मानुषीं तनुमाश्रितम्।
परं भावमजानन्तो मम भूतमहेश्वरम् ॥११॥
मोघाशा मोघकर्माणो मोघज्ञाना विचेतसः।
राक्षसीमासुरीं चैव प्रकृतिं मोहिनीं श्रिताः ॥१२॥

---

१ जुलाई १९८९] सूर्योदय ५।५ सूर्यास्त ६।५४
पं० १८ आषाढ़] 1 July 1989 [भा० आषाढ़ १०

~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi
~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

महात्मानस्तु मां पार्थ दैवीं प्रकृतिमाश्रिताः ।
भजन्त्यनन्यमनसो ज्ञात्वा भूतादिमव्ययम् ॥१३॥
सततं कीर्तयन्तो मां यतन्तश्च दृढव्रताः ।
नमस्यन्तश्च मां भक्त्या नित्ययुक्ता उपासते ॥१४॥

---

२ जुलाई]　सूर्योदय ५।६　सूर्यास्त ६।५४
पं० १९ आषाढ़]　2 July　[भा० आषाढ़ ११

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

ज्ञानयज्ञेन चाप्यन्ये यजन्तो मामुपासते।
एकत्वेन पृथक्त्वेन बहुधा विश्वतोमुखम् ॥१५॥
अहं क्रतुरहं यज्ञः स्वधाहमहमौषधम्।
मन्त्रोऽहमहमेवाज्यमहमग्निरहं हुतम् ॥१६॥

---

३ जुलाई] सूर्योदय ५।६ सूर्यास्त ६।५४
पं० २० आषाढ़] 3 July [भा० आषाढ़ १२

सोमवती अमावास्या

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

पिताहमस्य जगतो माता धाता पितामहः ।
वेद्यं पवित्रमोंकार ऋक्साम यजुरेव च ॥१७॥
गतिर्भर्ता प्रभुः साक्षी निवासः शरणं सुहृत् ।
प्रभवः प्रलयः स्थानं निधानं बीजमव्ययम् ॥१८॥

---

४ जुलाई] सूर्योदय ५।७ सूर्यास्त ६।५४
पं० २१ आषाढ़] 4 July [भा० आषाढ़ १३

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

तपाम्यहमहं वर्षं निगृह्णाम्युत्सृजामि च।
अमृतं चैव मृत्युश्च सदसच्चाहमर्जुन ॥१९॥
त्रैविद्या मां सोमपाः पूतपापा
यज्ञैरिष्ट्वा स्वर्गतिं प्रार्थयन्ते।
ते पुण्यमासाद्य सुरेन्द्रलोक-
मश्नन्ति दिव्यान्दिवि देवभोगान् ॥२०॥

---

५ जुलाई] सूर्योदय ५।७ सूर्यास्त ६।५४
पं० २२ आषाढ़] 5 July [भा० आषाढ़ १४

श्रीजगदीश-रथयात्रा

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

ते तं भुक्त्वा स्वर्गलोकं विशालं
क्षीणे पुण्ये मर्त्यलोकं विशन्ति।
एवं त्रयीधर्ममनुप्रपन्ना
गतागतं कामकामा लभन्ते॥२१॥
अनन्याश्चिन्तयन्तो मां ये जनाः पर्युपासते।
तेषां नित्याभियुक्तानां योगक्षेमं वहाम्यहम्॥२२॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

येऽप्यन्यदेवता भक्ता यजन्ते श्रद्धयान्विताः ।
तेऽपि मामेव कौन्तेय यजन्त्यविधिपूर्वकम् ॥२३॥
अहं हि सर्वयज्ञानां भोक्ता च प्रभुरेव च ।
न तु मामभिजानन्ति तत्त्वेनातश्च्यवन्ति ते ॥२४॥

---

७ जुलाई] सूर्योदय ५ । ८ सूर्यास्त ६ । ५४
पं० २४ आषाढ़] 7 July [भा० आषाढ़ १६

~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi
~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

यान्ति देवव्रता देवान्पितॄन्यान्ति पितृव्रताः ।
भूतानि यान्ति भूतेज्या यान्ति मद्याजिनोऽपि माम् ॥२५॥
पत्रं पुष्पं फलं तोयं यो मे भक्त्या प्रयच्छति ।
तदहं भक्त्युपहृतमश्नामि प्रयतात्मनः ॥२६॥

---

८ जुलाई] सूर्योदय ५।८ सूर्यास्त ६।५४
पं० २५ आषाढ़] 8 July [भा० आषाढ़ १७

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

यत्करोषि यदश्नासि यज्जुहोषि ददासि यत्।
यत्तपस्यसि कौन्तेय तत्कुरुष्व मदर्पणम् ॥२७॥
शुभाशुभफलैरेवं मोक्ष्यसे कर्मबन्धनैः।
संन्यासयोगयुक्तात्मा विमुक्तो मामुपैष्यसि ॥२८॥

---

९ जुलाई] सूर्योदय ५।९ सूर्यास्त ६।५४
पं० २६ आषाढ़] 9 July [भा० आषाढ़ १८

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

समोऽहं सर्वभूतेषु न मे द्वेष्योऽस्ति न प्रियः।
ये भजन्ति तु मां भक्त्या मयि ते तेषु चाप्यहम् ॥२९॥
अपि चेत्सुदुराचारो भजते मामनन्यभाक्।
साधुरेव स मन्तव्यः सम्यग्व्यवसितो हि सः ॥३०॥

---

१० जुलाई] सूर्योदय ५।९ सूर्यास्त ६।५४
पं० २७ आषाढ़] 10 July [भा० आषाढ़ १९

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

क्षिप्रं भवति धर्मात्मा शश्वच्छान्तिं निगच्छति ।
कौन्तेय प्रतिजानीहि न मे भक्तः प्रणश्यति ॥३१॥
मां हि पार्थ व्यपाश्रित्य येऽपि स्युः पापयोनयः ।
स्त्रियो वैश्यास्तथा शूद्रास्तेऽपि यान्ति परां गतिम् ॥३२॥

---

११ जुलाई] सूर्योदय ५।९ सूर्यास्त ६।५४
पं० २८ आषाढ़] 11 July [भा० आषाढ़ २०

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

किं पुनर्ब्राह्मणाः पुण्या भक्ता राजर्षयस्तथा ।
अनित्यमसुखं लोकमिमं प्राप्य भजस्व माम् ॥३३॥
मन्मना भव मद्भक्तो मद्याजी मां नमस्कुरु ।
मामेवैष्यसि युक्त्वैवमात्मानं मत्परायणः ॥३४॥

ॐ तत्सदिति श्रीमद्भगवद्गीतासूपनिषत्सु ब्रह्मविद्यायां योगशास्त्रे श्रीकृष्णार्जुनसंवादे राजविद्याराजगुह्ययोगो नाम नवमोऽध्यायः ॥ ९ ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

ॐ

दशमोऽध्यायः

श्रीभगवानुवाच

भूय एव महाबाहो शृणु मे परमं वचः।
यत्तेऽहं प्रीयमाणाय वक्ष्यामि हितकाम्यया ॥१॥
न मे विदुः सुरगणाः प्रभवं न महर्षयः।
अहमादिर्हि देवानां महर्षीणां च सर्वशः ॥२॥

---

१३ जुलाई] सूर्योदय ५।१० सूर्यास्त ६।५३
पं० ३० आषाढ़] 13 July [भा० आषाढ़ २२

~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~

आषाढ़ शुक्ल १० गुरु

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi
~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

यो मामजमनादिं च वेत्ति लोकमहेश्वरम्।
असंमूढः स मर्त्येषु सर्वपापैः प्रमुच्यते ॥३॥
बुद्धिर्ज्ञानमसंमोहः क्षमा सत्यं दमः शमः।
सुखं दुःखं भवोऽभावो भयं चाभयमेव च ॥४॥

---

१४ जुलाई] सूर्योदय ५।११ सूर्यास्त ६।५३
पं० ३१ आषाढ़] 14 July [भा० आषाढ़ २३

हरिशयनी एकादशीव्रत

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अहिंसा समता तुष्टिस्तपो दानं यशोऽयशः ।
भवन्ति भावा भूतानां मत्त एव पृथग्विधाः ॥५॥
महर्षयः सप्त पूर्वे चत्वारो मनवस्तथा ।
मद्भावा मानसा जाता येषां लोक इमाः प्रजाः ॥६॥

---

१५ जुलाई] सूर्योदय ५।११ सूर्यास्त ६।५३
पं० ३२ आषाढ़] 15 July [भा० आषाढ़ २४

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

एतां विभूतिं योगं च मम यो वेत्ति तत्त्वतः।
सोऽविकम्पेन योगेन युज्यते नात्र संशयः ॥७॥
अहं सर्वस्य प्रभवो मत्तः सर्वं प्रवर्तते।
इति मत्वा भजन्ते मां बुधा भावसमन्विताः ॥८॥

---

१६ जुलाई] सूर्योदय ५।१२ सूर्यास्त ६।५३
पं० १ श्रावण २०४६] 16 July [भा० आषाढ़ २५

~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~

प्रदोषव्रत

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi
~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

मच्चित्ता मद्गतप्राणा बोधयन्तः परस्परम्।
कथयन्तश्च मां नित्यं तुष्यन्ति च रमन्ति च ॥९॥
तेषां सततयुक्तानां भजतां प्रीतिपूर्वकम्।
ददामि बुद्धियोगं तं येन मामुपयान्ति ते ॥१०॥

---

१७ जुलाई] सूर्योदय ५।१२ सूर्यास्त ६।५२
पं० २ श्रावण] 17 July [भा० आषाढ़ २६

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

तेषामेवानुकम्पार्थमहमज्ञानजं तमः ।
नाशयाम्यात्मभावस्थो ज्ञानदीपेन भास्वता ॥११॥

अर्जुन उवाच

परं ब्रह्म परं धाम पवित्रं परमं भवान् ।
पुरुषं शाश्वतं दिव्यमादिदेवमजं विभुम् ॥१२॥

---

१८ जुलाई]　सूर्योदय ५।१३　सूर्यास्त ६।५२
पं० ३ श्रावण]　18 July　[भा० आषाढ़ २७

~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~

गुरुपूर्णिमा, व्यासपूजा

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi
~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

आहुस्त्वामृषयः सर्वे देवर्षिर्नारदस्तथा।
असितो देवलो व्यासः स्वयं चैव ब्रवीषि मे ॥१३॥
सर्वमेतदृतं मन्ये यन्मां वदसि केशव।
न हि ते भगवन्व्यक्तिं विदुर्देवा न दानवाः ॥१४॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

स्वयमेवात्मनात्मानं वेत्थ त्वं पुरुषोत्तम ।
भूतभावन भूतेश देवदेव जगत्पते ॥१५॥
वक्तुमर्हस्यशेषेण दिव्या ह्यात्मविभूतयः ।
याभिर्विभूतिभिर्लोकानिमांस्त्वं व्याप्य तिष्ठसि ॥१६॥

---

२० जुलाई] सूर्योदय ५।१४ सूर्यास्त ६।५१
पं० ५ श्रावण] 20 July [भा० आषाढ़ २९

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

कथं विद्यामहं योगिंस्त्वां सदा परिचिन्तयन्।
केषु केषु च भावेषु चिन्त्योऽसि भगवन्मया ॥१७॥
विस्तरेणात्मनो योगं विभूतिं च जनार्दन।
भूयः कथय तृप्तिर्हि शृण्वतो नास्ति मेऽमृतम् ॥१८॥

---

२१ जुलाई]　सूर्योदय ५।१४　सूर्यास्त ६।५१
पं० ६ श्रावण]　21 July　[भा० आषाढ़ ३०

श्रीगणेशचतुर्थीव्रत

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

श्रीभगवानुवाच

हन्त ते कथयिष्यामि दिव्या ह्यात्मविभूतयः ।
प्राधान्यतः कुरुश्रेष्ठ नास्त्यन्तो विस्तरस्य मे ॥१९ ॥
अहमात्मा गुडाकेश सर्वभूताशयस्थितः ।
अहमादिश्च मध्यं च भूतानामन्त एव च ॥२०॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

आदित्यानामहं विष्णुर्ज्योतिषां रविरंशुमान् ।
मरीचिर्मरुतामस्मि नक्षत्राणामहं शशी ॥२१॥
वेदानां सामवेदोऽस्मि देवानामस्मि वासवः ।
इन्द्रियाणां मनश्चास्मि भूतानामस्मि चेतना ॥२२ ॥

---

२३ जुलाई] सूर्योदय ५ । १५ सूर्यास्त ६ । ५०
पं० ८ श्रावण] 23 July [भा० श्रावण १ शक १९११

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

रुद्राणां शंकरश्चास्मि वित्तेशो यक्षरक्षसाम्।
वसूनां पावकश्चास्मि मेरुः शिखरिणामहम् ॥२३॥
पुरोधसां च मुख्यं मां विद्धि पार्थ बृहस्पतिम्।
सेनानीनामहं स्कन्दः सरसामस्मि सागरः ॥२४॥

---

२४ जुलाई] सूर्योदय ५।१६ सूर्यास्त ६।४९
पं० ९ श्रावण] 24 July [भा० श्रावण २

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

महर्षीणां भृगुरहं गिरामस्म्येकमक्षरम्।
यज्ञानां जपयज्ञोऽस्मि स्थावराणां हिमालयः ॥२५॥
अश्वत्थः सर्ववृक्षाणां देवर्षीणां च नारदः।
गन्धर्वाणां चित्ररथः सिद्धानां कपिलो मुनिः ॥२६॥

---

२५ जुलाई] सूर्योदय ५।१६ सूर्यास्त ६।४९
पं० १० श्रावण] 25 July [भा० श्रावण ३

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

उच्चैःश्रवसमश्वानां विद्धि माममृतोद्भवम् ।
ऐरावतं गजेन्द्राणां नराणां च नराधिपम् ॥२७॥
आयुधानामहं वज्रं धेनूनामस्मि कामधुक् ।
प्रजनश्चास्मि कन्दर्पः सर्पाणामस्मि वासुकिः ॥२८॥

---

२६ जुलाई]　सूर्योदय ५ । १७　सूर्यास्त ६ । ४८
पं० ११ श्रावण]　26 July　[भा० श्रावण ४

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अनन्तश्चास्मि नागानां वरुणो यादसामहम् ।
पितॄणामर्यमा चास्मि यमः संयमतामहम् ॥२९॥
प्रह्लादश्चास्मि दैत्यानां कालः कलयतामहम् ।
मृगाणां च मृगेन्द्रोऽहं वैनतेयश्च पक्षिणाम् ॥३०॥

---

२७ जुलाई] सूर्योदय ५।१७ सूर्यास्त ६।४८
पं० १२ श्रावण] 27 July [भा० श्रावण ५

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

पवनः पवतामस्मि रामः शस्त्रभृतामहम् ।
झषाणां मकरश्चास्मि स्रोतसामस्मि जाह्नवी ॥३१॥
सर्गाणामादिरन्तश्च मध्यं चैवाहमर्जुन ।
अध्यात्मविद्या विद्यानां वादः प्रवदतामहम् ॥३२॥

---

२८ जुलाई] सूर्योदय ५।१८ सूर्यास्त ६।४७
पं॰ १३ श्रावण] 28 July [भा॰ श्रावण ६

एकादशीव्रत

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अक्षराणामकारोऽस्मि द्वन्द्वः सामासिकस्य च ।
अहमेवाक्षयः कालो धाताहं विश्वतोमुखः ॥३३॥
मृत्युः सर्वहरश्चाहमुद्भवश्च भविष्यताम् ।
कीर्तिः श्रीर्वाक्च नारीणां स्मृतिर्मेधा धृतिः क्षमा ॥३४॥

---

२९ जुलाई] सूर्योदय ५।१८ सूर्यास्त ६।४७
पं० १४ श्रावण] 29 July [भा० श्रावण ७

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

बृहत्साम तथा साम्नां गायत्री छन्दसामहम् ।
मासानां मार्गशीर्षोऽहमृतूनां कुसुमाकरः ॥३५॥
द्यूतं छलयतामस्मि तेजस्तेजस्विनामहम् ।
जयोऽस्मि व्यवसायोऽस्मि सत्त्वं सत्त्ववतामहम् ॥३६॥

---

३० जुलाई]　सूर्योदय ५।१९　सूर्यास्त ६।४६
पं० १५ श्रावण]　30 July　[भा० श्रावण ८

प्रदोषव्रत

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

वृष्णीनां वासुदेवोऽस्मि पाण्डवानां धनंजयः ।
मुनीनामप्यहं व्यासः कवीनामुशना कविः ॥३७॥
दण्डो दमयतामस्मि नीतिरस्मि जिगीषताम् ।
मौनं चैवास्मि गुह्यानां ज्ञानं ज्ञानवतामहम् ॥३८॥

---

३१ जुलाई] सूर्योदय ५।१९ सूर्यास्त ६।४५
पं० १६ श्रावण] 31 July [भा० श्रावण ९

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

यच्चापि सर्वभूतानां बीजं तदहमर्जुन।
न तदस्ति विना यत्स्यान्मया भूतं चराचरम्॥३९॥
नान्तोऽस्ति मम दिव्यानां विभूतीनां परंतप।
एष तूद्देशतः प्रोक्तो विभूतेर्विस्तरो मया॥४०॥

---

१ अगस्त १९८९] सूर्योदय ५।२० सूर्यास्त ६।४५
पं० १७ श्रावण] 1 August 1989 [भा० श्रावण १०

~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~

भौमवती अमावास्या

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi
~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

यद्यद्विभूतिमत्सत्त्वं श्रीमदूर्जितमेव वा।
तत्तदेवावगच्छ त्वं मम तेजोंऽशसंभवम् ॥४१॥
अथवा बहुनैतेन किं ज्ञातेन तवार्जुन।
विष्टभ्याहमिदं कृत्स्नमेकांशेन स्थितो जगत् ॥४२॥

ॐ तत्सदिति श्रीमद्भगवद्गीतासूपनिषत्सु ब्रह्मविद्यायां योगशास्त्रे श्रीकृष्णार्जुनसंवादे विभूतियोगो नाम दशमोऽध्यायः ॥१०॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

ॐ

एकादशोऽध्यायः

अर्जुन उवाच

मदनुग्रहाय परमं गुह्यमध्यात्मसंज्ञितम् ।
यत्त्वयोक्तं वचस्तेन मोहोऽयं विगतो मम ॥१॥
भवाप्ययौ हि भूतानां श्रुतौ विस्तरशो मया ।
त्वत्तः कमलपत्राक्ष माहात्म्यमपि चाव्ययम् ॥२॥

---

३ अगस्त] सूर्योदय ५।२१ सूर्यास्त ६।४३
पं० १९ श्रावण] 3 August [भा० श्रावण १२

श्रावण शुक्ल २ गुरु

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

एवमेतद्यथात्थ त्वमात्मानं परमेश्वर ।
द्रष्टुमिच्छामि ते रूपमैश्वरं पुरुषोत्तम ॥३॥
मन्यसे यदि तच्छक्यं मया द्रष्टुमिति प्रभो ।
योगेश्वर ततो मे त्वं दर्शयात्मानमव्ययम् ॥४॥

---

४ अगस्त] सूर्योदय ५ । २१ सूर्यास्त ६ । ४३
पं० २० श्रावण] 4 August [भा० श्रावण १३

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

श्रीभगवानुवाच

पश्य मे पार्थ रूपाणि शतशोऽथ सहस्रशः ।
नानाविधानि दिव्यानि नानावर्णाकृतीनि च ॥५॥
पश्यादित्यान्वसून्रुद्रानश्विनौ मरुतस्तथा ।
बहून्यदृष्टपूर्वाणि पश्याश्चर्याणि भारत ॥६॥

५ अगस्त]　सूर्योदय ५।२२　सूर्यास्त ६।४२
पं० २१ श्रावण]　5 August　[भा० श्रावण १४

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

इहैकस्थं जगत्कृत्स्नं पश्याद्य सचराचरम् ।
मम देहे गुडाकेश यच्चान्यद्द्रष्टुमिच्छसि ॥७॥
न तु मां शक्यसे द्रष्टुमनेनैव स्वचक्षुषा ।
दिव्यं ददामि ते चक्षुः पश्य मे योगमैश्वरम् ॥८॥

---

६ अगस्त] सूर्योदय ५ । २३ सूर्यास्त ६ । ४१
पं० २२ श्रावण] 6 August [भा० श्रावण १५

श्रीनागपंचमी

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

संजय उवाच

एवमुक्त्वा ततो राजन्महायोगेश्वरो हरिः ।
दर्शयामास पार्थाय परमं रूपमैश्वरम् ॥९॥
अनेकवक्त्रनयनमनेकाद्भुतदर्शनम् ।
अनेकदिव्याभरणं दिव्यानेकोद्यतायुधम् ॥१० ॥

---

७ अगस्त]　सूर्योदय ५।२३　सूर्यास्त ६।४१
पं० २३ श्रावण]　7 August　[भा० श्रावण १६

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

दिव्यमाल्याम्बरधरं दिव्यगन्धानुलेपनम् ।
सर्वाश्चर्यमयं देवमनन्तं विश्वतोमुखम् ॥११॥
दिवि सूर्यसहस्रस्य भवेद्युगपदुत्थिता ।
यदि भाः सदृशी सा स्याद्भासस्तस्य महात्मनः ॥१२॥

---

८ अगस्त]　सूर्योदय ५ । २४　सूर्यास्त ६ । ४०
पं० २४ श्रावण]　8 August　[भा० श्रावण १७

श्रीगोस्वामी तुलसीदास-जयन्ती

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

तत्रैकस्थं जगत्कृत्स्नं प्रविभक्तमनेकधा ।
अपश्यद्देवदेवस्य शरीरे पाण्डवस्तदा ॥१३॥
ततः स विस्मयाविष्टो हृष्टरोमा धनंजयः ।
प्रणम्य शिरसा देवं कृताञ्जलिरभाषत ॥१४॥

---

९ अगस्त]　सूर्योदय ५ । २४　सूर्यास्त ६ । ४०
पं० २५ श्रावण]　9 August　[भा० श्रावण १८

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अर्जुन उवाच

पश्यामि देवांस्तव देव देहे
सर्वांस्तथा भूतविशेषसङ्घान्।
ब्रह्माणमीशं कमलासनस्थ-
मृषींश्च सर्वानुरगांश्च दिव्यान्॥१५॥

---

१० अगस्त] सूर्योदय ५।२५ सूर्यास्त ६।३१
पं० २६ श्रावण] 10 August [भा० श्रावण ११

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अनेकबाहूदरवक्त्रनेत्रं
पश्यामि त्वां सर्वतोऽनन्तरूपम् ।
नान्तं न मध्यं न पुनस्तवादिं
पश्यामि विश्वेश्वर विश्वरूप ॥१६॥

११ अगस्त]　सूर्योदय ५।२५　सूर्यास्त ६।३८
पं० २७ श्रावण]　11 August　[भा० श्रावण २०

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

किरीटिनं गदिनं चक्रिणं च
तेजोराशिं सर्वतो दीप्तिमन्तम् ।
पश्यामि त्वां दुर्निरीक्ष्यं समन्ता-
द्दीप्तानलार्कद्युतिमप्रमेयम् ॥१७॥

---

१२ अगस्त] सूर्योदय ५।२६ सूर्यास्त ६।३७
पं० २८ श्रावण] 12 August [भा० श्रावण २१

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

त्वमक्षरं परमं वेदितव्यं
　　त्वमस्य विश्वस्य परं निधानम्।
त्वमव्ययः शाश्वतधर्मगोप्ता
　　सनातनस्त्वं पुरुषो मतो मे ॥१८॥

---

१३ अगस्त] सूर्योदय ५।२६ सूर्यास्त ६।३६
पं० २९ श्रावण] 13 August [भा० श्रावण २२

एकदशीव्रत

८—

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अनादिमध्यान्तमनन्तवीर्य-
मनन्तबाहुं शशिसूर्यनेत्रम्।
पश्यामि त्वां दीप्तहुताशवक्त्रं
स्वतेजसा विश्वमिदं तपन्तम्॥१९॥

---

१४ अगस्त] सूर्योदय ५।२७ सूर्यास्त ६।३५
पं० ३० श्रावण] 14 August [भा० श्रावण २३

सोमप्रदोष

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

द्यावापृथिव्योरिदमन्तरं हि
व्याप्तं त्वयैकेन दिशश्च सर्वाः।
दृष्ट्वाद्भुतं रूपमुग्रं तवेदं
लोकत्रयं प्रव्यथितं महात्मन् ॥२०॥

---

१५ अगस्त] सूर्योदय ५।२७ सूर्यास्त ६।३४
पं० ३१ श्रावण] 15 August [भा० श्रावण २४

स्वतन्त्रतादिवस

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अमी हि त्वां सुरसङ्घा विशन्ति
केचिद्भीताः प्राञ्जलयो गृणन्ति।
स्वस्तीत्युक्त्वा महर्षिसिद्धसङ्घाः
स्तुवन्ति त्वां स्तुतिभिः पुष्कलाभिः ॥२१॥

---

१६ अगस्त] सूर्योदय ५।२७ सूर्यास्त ६।३३
पं० १ भाद्रपद सं० २०४६] 16 August [भा० श्रावण २५

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

रुद्रादित्या वसवो ये च साध्या
विश्वेऽश्विनौ मरुतश्चोष्मपाश्च ।
गन्धर्वयक्षासुरसिद्धसङ्घा
वीक्षन्ते त्वां विस्मिताश्चैव सर्वे ॥२२॥

---

१७ अगस्त] सूर्योदय ५।२८ सूर्यास्त ६।३२
पं० २ भाद्रपद] 17 August [भा० श्रावण २६

~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~

श्रावणी पूर्णिमा, रक्षाबन्धन

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi
~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

रूपं महत्ते बहुवक्त्रनेत्रं
महाबाहो बहुबाहूरुपादम् ।
बहूदरं बहुदंष्ट्राकरालं
दृष्ट्वा लोकाः प्रव्यथितास्तथाहम् ॥२३॥

१८ अगस्त] सूर्योदय ५।२८ सूर्यास्त ६।३२
पं० ३ भाद्रपद] 18 August [भा० श्रावण २७

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

नभःस्पृशं दीप्तमनेकवर्णं
व्यात्ताननं दीप्तविशालनेत्रम् ।
दृष्ट्वा हि त्वां प्रव्यथितान्तरात्मा
धृतिं न विन्दामि शमं च विष्णो ॥२४॥

---

१९ अगस्त]　सूर्योदय ५।२९　सूर्यास्त ६।३१
पं० ४ भाद्रपद]　19 August　[भा० श्रावण २८

~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~

कज्जली-३

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi
~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

दंष्ट्राकरालानि च ते मुखानि
दृष्ट्वैव कालानलसन्निभानि ।
दिशो न जाने न लभे च शर्म
प्रसीद देवेश जगन्निवास ॥२५॥

---

२० अगस्त] सूर्योदय ५ । २९ सूर्यास्त ६ । ३०
पं० ५ भाद्रपद] 20 August [भा० श्रावण २९

श्रीगणेशचतुर्थीव्रत, बहुलाव्रत

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अमी च त्वां धृतराष्ट्रस्य पुत्राः
सर्वे सहैवावनिपालसङ्घैः ।
भीष्मो द्रोणः सूतपुत्रस्तथासौ
सहास्मदीयैरपि योधमुख्यैः ॥२६॥

---

२१ अगस्त] सूर्योदय ५।३० सूर्यास्त ६।२९
पं० ६ भाद्रपद] 21 August [भा० श्रावण ३०

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

वक्त्राणि ते त्वरमाणा विशन्ति
दंष्ट्राकरालानि भयानकानि
केचिद्विलग्ना दशनान्तरेषु
संदृश्यन्ते चूर्णितैरुत्तमाङ्गैः ॥२७॥

---

२२ अगस्त] सूर्योदय ५।३० सूर्यास्त ६।२८
पं० ७ भाद्रपद] 22 August [भा० श्रावण ३१

हलषष्ठीव्रत (ललहीछठ)

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

यथा नदीनां बहवोऽम्बुवेगाः
समुद्रमेवाभिमुखा द्रवन्ति ।
तथा तवामी नरलोकवीरा
विशन्ति वक्त्राण्यभिविज्वलन्ति ॥२८॥

---

२३ अगस्त] सूर्योदय ५ । ३१ सूर्यास्त ६ । २७
पं० ८ भाद्रपद] 23 August [भा० भाद्रपद १ शक १९११

श्रीकृष्णजन्माष्टमीव्रत (स्मार्त्त)

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

यथा प्रदीप्तं ज्वलनं पतङ्गा
विशन्ति नाशाय समृद्धवेगाः ।
तथैव नाशाय विशन्ति लोका-
स्तवापि वक्त्राणि समृद्धवेगाः ॥२९॥

---

२४ अगस्त] सूर्योदय ५ । ३१ सूर्यास्त ६ । २६
पं० ९ भाद्रपद] 24 August [भा० भाद्रपद २

श्रीकृष्णजन्माष्टमीव्रत (वैष्णव)

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

लेलिह्यसे ग्रसमानः समन्ता-
　　ल्लोकान्समग्रान्वदनैर्ज्वलद्भिः ।
तेजोभिरापूर्य जगत्समग्रं
　　भासस्तवोग्राः प्रतपन्ति विष्णो ॥३०॥

---

२५ अगस्त] सूर्योदय ५।३२ सूर्यास्त ६।२५
पं० १० भाद्रपद] 25 August [भा० भाद्रपद ३

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

आख्याहि मे को भवानुग्ररूपो
नमोऽस्तु ते देववर प्रसीद।
विज्ञातुमिच्छामि भवन्तमाद्यं
न हि प्रजानामि तव प्रवृत्तिम् ॥३१॥

---

२६ अगस्त] सूर्योदय ५।३२ सूर्यास्त ६।२४
पं० ११ भाद्रपद] 26 August [भा० भाद्रपद ४

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

श्रीभगवानुवाच

कालोऽस्मि लोकक्षयकृत्प्रवृद्धो
लोकान्समाहर्तुमिह प्रवृत्तः ।
ऋतेऽपि त्वां न भविष्यन्ति सर्वे
येऽवस्थिताः प्रत्यनीकेषु योधाः ॥३२॥

---

२७ अगस्त] सूर्योदय ५।३३ सूर्यास्त ६।२३
पं० १२ भाद्रपद] 27 August [भा० भाद्रपद ५

~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~

एकादशीव्रत

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi
~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

तस्मात्त्वमुत्तिष्ठ यशो लभस्व
जित्वा शत्रून्भुङ्क्ष्व राज्यं समृद्धम्।
मयैवैते निहताः पूर्वमेव
निमित्तमात्रं भव सव्यसाचिन् ॥३३॥

---

२८ अगस्त] सूर्योदय ५।३३ सूर्यास्त ६।२२
पं० १३ भाद्रपद] 28 August [भा० भाद्रपद ६

सोमप्रदोष

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

द्रोणं च भीष्मं च जयद्रथं च
कर्णं तथान्यानपि योधवीरान्।
मया हतांस्त्वं जहि मा व्यथिष्ठा
युध्यस्व जेतासि रणे सपत्नान्॥३४॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

संजय उवाच

एतच्छ्रुत्वा वचनं केशवस्य
कृताञ्जलिर्वेपमानः किरीटी।
नमस्कृत्वा भूय एवाह कृष्णं
सगद्गदं भीतभीतः प्रणम्य ॥३५॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अर्जुन उवाच

स्थाने हृषीकेश तव प्रकीर्त्या
जगत्प्रहृष्यत्यनुरज्यते च।
रक्षांसि भीतानि दिशो द्रवन्ति
सर्वे नमस्यन्ति च सिद्धसङ्घाः ॥३६॥

---

३१ अगस्त] सूर्योदय ५।३५ सूर्यास्त ६।१९
पं० १६ भाद्रपद] 31 August [भा० भाद्रपद ९

कुशोत्पाटिनी अमावस्या

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

कस्माच्च ते न नमेरन्महात्मन्
गरीयसे ब्रह्मणोऽप्यादिकर्त्रे।
अनन्त देवेश जगन्निवास
त्वमक्षरं सदसत्तत्परं यत् ॥३७॥

---

१ सितम्बर १९८९] सूर्योदय ५।३५ सूर्यास्त ६।१८
पं० १७ भाद्रपद] 1 September 1989 [भा० भाद्रपद १०

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

त्वमादिदेवः पुरुषः पुराण-
स्त्वमस्य विश्वस्य परं निधानम्।
वेत्तासि वेद्यं च परं च धाम
त्वया ततं विश्वमनन्तरूप ॥३८॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

वायुर्यमोऽग्निर्वरुणः शशाङ्कः
प्रजापतिस्त्वं प्रपितामहश्च ।
नमो नमस्तेऽस्तु सहस्रकृत्वः
पुनश्च भूयोऽपि नमो नमस्ते ॥३९॥

---

३ सितम्बर] सूर्योदय ५।३६ सूर्यास्त ६।१५

पं० १९ भाद्रपद] 3 September [भा० भाद्रपद १२

हरितालिकाव्रत, चन्द्रदर्शन निषिद्ध

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

नमः पुरस्तादथ पृष्ठतस्ते
नमोऽस्तु ते सर्वत एव सर्व।
अनन्तवीर्यामितविक्रमस्त्वं
सर्वं समाप्नोषि ततोऽसि सर्वः ॥४०॥

---

४ सितम्बर] सूर्योदय ५।३७ सूर्यास्त ६।१४
पं॰ २० भाद्रपद] 4 September [भा॰ भाद्रपद १३

~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~

श्रीगणेशचतुर्थीव्रत

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi
~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सखेति मत्वा प्रसभं यदुक्तं
हे कृष्ण हे यादव हे सखेति ।
अजानता महिमानं तवेदं
मया प्रमादात्प्रणयेन वापि ॥४१॥

---

५ सितम्बर] सूर्योदय ५ । ३७ सूर्यास्त ६ । १३
पं० २१ भाद्रपद] 5 September [भा० भाद्रपद १४

ऋषिपंचमीव्रत

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

यच्चावहासार्थमसत्कृतोऽसि
विहारशय्यासनभोजनेषु ।
एकोऽथवाप्यच्युत तत्समक्षं
तत्क्षामये त्वामहमप्रमेयम् ॥४२॥

---

६ सितम्बर] सूर्योदय ५।३७ सूर्यास्त ६।१२
पं० २२ भाद्रपद] 6 September [भा० भाद्रपद १५

लोलार्कषष्ठीव्रत

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

पितासि लोकस्य चराचरस्य
त्वमस्य पूज्यश्च गुरुर्गरीयान् ।
न त्वत्समोऽस्त्यभ्यधिकः कुतोऽन्यो
लोकत्रयेऽप्यप्रतिमप्रभाव ॥४३॥

---

७ सितम्बर]   सूर्योदय ५।३८   सूर्यास्त ६।११
पं० २३ भाद्रपद] 7 September [भा० भाद्रपद १६

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

तस्मात्प्रणम्य प्रणिधाय कायं
प्रसादये त्वामहमीशमीड्यम् ।
पितेव पुत्रस्य सखेव सख्युः
प्रियः प्रियायार्हसि देव सोढुम् ।।४४।।

---

८ सितम्बर] सूर्योदय ५ । ३८ सूर्यास्त ६ । १०
पं॰ २४ भाद्रपद] 8 September [भा॰ भाद्रपद १७

श्रीराधाष्टमी

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अदृष्टपूर्वं हृषितोऽस्मि दृष्ट्वा
भयेन च प्रव्यथितं मनो मे।
तदेव मे दर्शय देवरूपं
प्रसीद देवेश जगन्निवास ॥४५॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

किरीटिनं गदिनं चक्रहस्त-
मिच्छामि त्वां द्रष्टुमहं तथैव।
तेनैव रूपेण चतुर्भुजेन
सहस्रबाहो भव विश्वमूर्ते ॥४६॥

---

१० सितम्बर] सूर्योदय ५।३९ सूर्यास्त ६।८

पं० २६ भाद्रपद] 10 September [भा० भाद्रपद १९

महारविवारव्रत

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

श्रीभगवानुवाच

मया प्रसन्नेन तवार्जुनेदं
रूपं परं दर्शितमात्मयोगात्।
तेजोमयं विश्वमनन्तमाद्यं
यन्मे त्वदन्येन न दृष्टपूर्वम् ॥४७॥

---

११ सितम्बर] सूर्योदय ५।३९ सूर्यास्त ६।७
पं० २७ भाद्रपद] 11 September [भा० भाद्रपद २०

एकादशीव्रत

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

न वेदयज्ञाध्ययनैर्न दानै-
र्न च क्रियाभिर्न तपोभिरुग्रैः।
एवंरूपः शक्य अहं नृलोके
द्रष्टुं त्वदन्येन कुरुप्रवीर ॥४८॥

---

१२ सितम्बर]　सूर्योदय ५।४०　सूर्यास्त ६।६
पं॰ २८ भाद्रपद]　12 September　[भा॰ भाद्रपद २१

वामनद्वादशीव्रत

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

मा ते व्यथा मा च विमूढभावो
दृष्ट्वा रूपं घोरमीदृङ्ममेदम् ।
व्यपेतभीः प्रीतमनाः पुनस्त्वं
तदेव मे रूपमिदं प्रपश्य ॥४९॥

---

१३ सितम्बर] सूर्योदय ५।४० सूर्यास्त ६।४
पं० २९ भाद्रपद] 13 September [भा० भाद्रपद २२

~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~

प्रदोषव्रत

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi
~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

संजय उवाच

इत्यर्जुनं वासुदेवस्तथोक्त्वा
स्वकं रूपं दर्शयामास भूयः ।
आश्वासयामास च भीतमेनं
भूत्वा पुनः सौम्यवपुर्महात्मा ॥५०॥

---

१४ सितम्बर] सूर्योदय ५ । ४१ सूर्यास्त ६ । ३

पं० ३० भाद्रपद] 14 September [भा० भाद्रपद २३

~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~

अनन्तचतुर्दशीव्रत

१—

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi
~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अर्जुन उवाच

दृष्ट्वेदं मानुषं रूपं तव सौम्यं जनार्दन।
इदानीमस्मि संवृत्तः सचेताः प्रकृतिं गतः ॥५१॥

श्रीभगवानुवाच

सुदुर्दर्शमिदं रूपं दृष्टवानसि यन्मम।
देवा अप्यस्य रूपस्य नित्यं दर्शनकाङ्क्षिणः ॥५२॥

---

१५ सितम्बर] सूर्योदय ५।४१ सूर्यास्त ६।२

पं० ३१ भाद्रपद] 15 September [भा० भाद्रपद २४

पूर्णिमा, महालयारम्भ, पूर्णिमाश्राद्धम्

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

नाहं वेदैर्न तपसा न दानेन न चेज्यया।
शक्य एवंविधो द्रष्टुं दृष्टवानसि मां यथा ॥५३॥
भक्त्या त्वनन्यया शक्य अहमेवंविधोऽर्जुन।
ज्ञातुं द्रष्टुं च तत्त्वेन प्रवेष्टुं च परंतप ॥५४॥

प्रतिपद्-श्राद्धम्

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

मत्कर्मकृन्मत्परमो मद्भक्तः सङ्गवर्जितः ।
निर्वैरः सर्वभूतेषु यः स मामेति पाण्डव ॥५५॥

ॐ तत्सदिति श्रीमद्भगवद्गीतासूपनिषत्सु ब्रह्मविद्यायां
योगशास्त्रे श्रीकृष्णार्जुनसंवादे विश्वरूपदर्शनयोगो
नामैकादशोऽध्यायः ॥११॥

---

१७ सितम्बर] सूर्योदय ५।४२ सूर्यास्त ६।०

पं० २ आश्विन] 17 September [भा० भाद्रपद २६

विश्वकर्मापूजा, द्वितीया-तृतीयाश्राद्धम्

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

ॐ

द्वादशोऽध्यायः

अर्जुन उवाच

एवं सततयुक्ता ये भक्तास्त्वां पर्युपासते।
ये चाप्यक्षरमव्यक्तं तेषां के योगवित्तमाः ॥१॥

श्रीभगवानुवाच

मय्यावेश्य मनो ये मां नित्ययुक्ता उपासते।
श्रद्धया परयोपेतास्ते मे युक्ततमा मताः ॥२॥

---

१८ सितम्बर] सूर्योदय ५।४२ सूर्यास्त ५।५८
पं० ३ आश्विन] 18 September [भा० भाद्रपद २७

~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~

आश्विन कृष्ण ३ सोम, श्रीगणेशचतुर्थीव्रत
चतुर्थीश्राद्धम्

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi
~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

ये त्वक्षरमनिर्देश्यमव्यक्तं पर्युपासते ।
सर्वत्रगमचिन्त्यं च कूटस्थमचलं ध्रुवम् ॥३॥
संनियम्येन्द्रियग्रामं सर्वत्र समबुद्धयः ।
ते प्राप्नुवन्ति मामेव सर्वभूतहिते रताः ॥४॥

---

१९ सितम्बर] सूर्योदय ५।४३ सूर्यास्त ५।५७
पं० ४ आश्विन] 19 September [भा० भाद्रपद २८

पंचमीश्राद्धम्

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

क्लेशोऽधिकतरस्तेषामव्यक्तासक्तचेतसाम् ।
अव्यक्ता हि गतिर्दुःखं देहवद्भिरवाप्यते ॥५॥
ये तु सर्वाणि कर्माणि मयि संन्यस्य मत्पराः ।
अनन्येनैव योगेन मां ध्यायन्त उपासते ॥६॥

---

२० सितम्बर] सूर्योदय ५।४३ सूर्यास्त ५।५६
पं० ५ आश्विन] 20 September [भा० भाद्रपद २९

षष्ठीश्राद्धम्

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

तेषामहं समुद्धर्ता मृत्युसंसारसागरात् ।
भवामि नचिरात्पार्थ मय्यावेशितचेतसाम् ॥७॥
मय्येव मन आधत्स्व मयि बुद्धिं निवेशय ।
निवसिष्यसि मय्येव अत ऊर्ध्वं न संशयः ॥८॥

---

२१ सितम्बर]　सूर्योदय ५।४३　सूर्यास्त ५।५५
पं० ६ आश्विन]　21 September　[भा० भाद्रपद ३०

सप्तमीश्राद्धम्

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अथ चित्तं समाधातुं न शक्नोषि मयि स्थिरम् ।
अभ्यासयोगेन ततो मामिच्छाप्तुं धनंजय ॥९॥
अभ्यासेऽप्यसमर्थोऽसि मत्कर्मपरमो भव ।
मदर्थमपि कर्माणि कुर्वन्सिद्धिमवाप्स्यसि ॥१०॥

---

२२ सितम्बर] सूर्योदय ५।४४ सूर्यास्त ५।५४
पं० ७ आश्विन] 22 September [भा० भाद्रपद ३१

जीवत्पुत्रिकाव्रत, अष्टमीश्राद्धम्

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अथैतदप्यशक्तोऽसि कर्तुं मद्योगमाश्रितः ।
सर्वकर्मफलत्यागं ततः कुरु यतात्मवान् ॥११॥
श्रेयो हि ज्ञानमभ्यासाज्ज्ञानाद्ध्यानं विशिष्यते ।
ध्यानात्कर्मफलत्यागस्त्यागाच्छान्तिरनन्तरम् ॥१२॥

---

२३ सितम्बर] सूर्योदय ५।४४ सूर्यास्त ५।५२
पं० ८ आश्विन] 23 September [भा० आश्विन १ शक १९११

मातृनवमी, नवमीश्राद्धम्

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अद्वेष्टा सर्वभूतानां मैत्रः करुण एव च।
निर्ममो निरहंकारः समदुःखसुखः क्षमी ॥१३॥
संतुष्टः सततं योगी यतात्मा दृढनिश्चयः।
मय्यर्पितमनोबुद्धिर्यो मद्भक्तः स मे प्रियः ॥१४ ॥

२४ सितम्बर] सूर्योदय ५।४५ सूर्यास्त ५।५१
पं० ९ आश्विन] 24 September [भा० आश्विन २

दशमीश्राद्धम्

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

यस्मान्नोद्विजते लोको लोकान्नोद्विजते च यः ।
हर्षामर्षभयोद्वेगैर्मुक्तो यः स च मे प्रियः ॥१५॥
अनपेक्षः शुचिर्दक्ष उदासीनो गतव्यथः ।
सर्वारम्भपरित्यागी यो मद्भक्तः स मे प्रियः ॥१६॥

---

२५ सितम्बर]　सूर्योदय ५।४५　सूर्यास्त ५।५०
पं० १० आश्विन]　25 September　[भा० आश्विन ३

~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~

एकादशीव्रत, एकादशीश्राद्धम्

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi
~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

यो न हृष्यति न द्वेष्टि न शोचति न काङ्क्षति ।
शुभाशुभपरित्यागी भक्तिमान्यः स मे प्रियः ॥१७॥
समः शत्रौ च मित्रे च तथा मानापमानयोः ।
शीतोष्णसुखदुःखेषु समः सङ्गविवर्जितः ॥१८॥

---

२६ सितम्बर] सूर्योदय ५।४६ सूर्यास्त ५।४९
पं० ११ आश्विन] 26 September [भा० आश्विन ४

द्वादशीश्राद्धम्

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

तुल्यनिन्दास्तुतिर्मौनी संतुष्टो येन केनचित्।
अनिकेतः स्थिरमतिर्भक्तिमान्मे प्रियो नरः ॥१९॥
ये तु धर्म्यामृतमिदं यथोक्तं पर्युपासते।
श्रद्दधाना मत्परमा भक्तास्तेऽतीव मे प्रियाः ॥२०॥

ॐ तत्सदिति श्रीमद्भगवद्गीतासूपनिषत्सु ब्रह्मविद्यायां
योगशास्त्रे श्रीकृष्णार्जुनसंवादे भक्तियोगो
नाम द्वादशोऽध्यायः ॥१२॥

---

२७ सितम्बर] सूर्योदय ५।४६ सूर्यास्त ५।४८
पं० १२ आश्विन] 27 September [भा० आश्विन ५

प्रदोषव्रत, त्रयोदशीश्राद्धम्

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

ॐ

त्रयोदशोऽध्यायः

श्रीभगवानुवाच

इदं शरीरं कौन्तेय क्षेत्रमित्यभिधीयते।
एतद्यो वेत्ति तं प्राहुः क्षेत्रज्ञ इति तद्विदः ॥१॥
क्षेत्रज्ञं चापि मां विद्धि सर्वक्षेत्रेषु भारत।
क्षेत्रक्षेत्रज्ञयोर्ज्ञानं यत्तज्ज्ञानं मतं मम ॥२॥

---

२८ सितम्बर] सूर्योदय ५।४७ सूर्यास्त ५।४७
पं० १३ आश्विन] 28 September [भा० आश्विन ६

~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~

आश्विन कृष्ण १४ गुरु, चतुर्दशीश्राद्धम्

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi
~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

तत्क्षेत्रं यच्च यादृक्च यद्विकारि यतश्च यत्।
स च यो यत्प्रभावश्च तत्समासेन मे शृणु ॥३॥
ऋषिभिर्बहुधा गीतं छन्दोभिर्विविधैः पृथक्।
ब्रह्मसूत्रपदैश्चैव हेतुमद्भिर्विनिश्चितैः ॥४॥

२९ सितम्बर] सूर्योदय ५।४७ सूर्यास्त ५।४६
पं० १४ आश्विन] 29 September [भा० आश्विन ७

अमावस्या-पितृविसर्जन, अमावस्याश्राद्धम्

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

महाभूतान्यहंकारो बुद्धिरव्यक्तमेव च ।
इन्द्रियाणि दशैकं च पञ्च चेन्द्रियगोचराः ॥५॥
इच्छा द्वेषः सुखं दुःखं संघातश्चेतना धृतिः ।
एतत्क्षेत्रं समासेन सविकारमुदाहृतम् ॥६॥

---

३० सितम्बर] सूर्योदय ५।४८ सूर्यास्त ५।४५
पं० १५ आश्विन] 30 September [भा० आश्विन ८

शारदीय नवरात्रारम्भ

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अमानित्वमदम्भित्वमहिंसा क्षान्तिरार्जवम् ।
आचार्योपासनं शौचं स्थैर्यमात्मविनिग्रहः ॥७॥
इन्द्रियार्थेषु वैराग्यमनहंकार एव च ।
जन्ममृत्युजराव्याधिदुःखदोषानुदर्शनम् ॥८॥

१ अक्टूबर १९८९] सूर्योदय ५।४८ सूर्यास्त ५।४४
पं॰ १६ आश्विन] 1 October 1989 [भा॰ आश्विन ९

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

असक्तिरनभिष्वङ्गः पुत्रदारगृहादिषु ।
नित्यं च समचित्तत्वमिष्टानिष्टोपपत्तिषु ॥९॥
मयि चानन्ययोगेन भक्तिरव्यभिचारिणी ।
विविक्तदेशसेवित्वमरतिर्जनसंसदि ॥१०॥

---

२ अक्टुबर] सूर्योदय ५।४९ सूर्यास्त ५।४३
पं० १७ आश्विन] 2 October [भा० आश्विन १०

~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~

गाँधी-जयन्ती

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi
~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अध्यात्मज्ञाननित्यत्वं तत्त्वज्ञानार्थदर्शनम् ।
एतज्ज्ञानमिति प्रोक्तमज्ञानं यदतोऽन्यथा ॥११॥
ज्ञेयं यत्तत्प्रवक्ष्यामि यज्ज्ञात्वामृतमश्नुते ।
अनादिमत्परं ब्रह्म न सत्तन्नासदुच्यते ॥१२॥

---

३ अक्टूबर] सूर्योदय ५।४९ सूर्यास्त ५।४२
पं० १८ आश्विन] 3 October [भा० आश्विन ११

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सर्वतःपाणिपादं तत्सर्वतोऽक्षिशिरोमुखम् ।
सर्वतःश्रुतिमल्लोके सर्वमावृत्य तिष्ठति ॥१३॥
सर्वेन्द्रियगुणाभासं सर्वेन्द्रियविवर्जितम् ।
असक्तं सर्वभृच्चैव निर्गुणं गुणभोक्तृ च ॥१४॥

---

४ अक्टूबर] सूर्योदय ५।५० सूर्यास्त ५।४१
पं० १९ आश्विन] 4 October [भा० आश्विन १२

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

बहिरन्तश्च भूतानामचरं चरमेव च।
सूक्ष्मत्वात्तदविज्ञेयं दूरस्थं चान्तिके च तत् ॥१५॥
अविभक्तं च भूतेषु विभक्तमिव च स्थितम् ।
भूतभर्तृ च तज्ज्ञेयं ग्रसिष्णु प्रभविष्णु च ॥१६॥

---

५ अक्टूबर] सूर्योदय ५।५० सूर्यास्त ५।४०
पं० २० आश्विन] 5 October [भा० आश्विन १३

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

ज्योतिषामपि तज्ज्योतिस्तमसः परमुच्यते ।
ज्ञानं ज्ञेयं ज्ञानगम्यं हृदि सर्वस्य विष्ठितम् ॥१७॥
इति क्षेत्रं तथा ज्ञानं ज्ञेयं चोक्तं समासतः ।
मद्भक्त एतद्विज्ञाय मद्भावायोपपद्यते ॥१८॥

---

६ अक्टूबर] सूर्योदय ५।५१ सूर्यास्त ५।३९
पं० २१ आश्विन] 6 October [भा० आश्विन १४

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

प्रकृतिं पुरुषं चैव विद्ध्यनादी उभावपि ।
विकारांश्च गुणांश्चैव विद्धि प्रकृतिसम्भवान् ॥१९॥
कार्यकरणकर्तृत्वे हेतुः प्रकृतिरुच्यते ।
पुरुषः सुखदुःखानां भोक्तृत्वे हेतुरुच्यते ॥२०॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

पुरुषः प्रकृतिस्थो हि भुङ्क्ते प्रकृतिजान्गुणान् ।
कारणं गुणसङ्गोऽस्य सदसद्योनिजन्मसु ॥२१॥
उपद्रष्टानुमन्ता च भर्ता भोक्ता महेश्वरः ।
परमात्मेति चाप्युक्तो देहेऽस्मिन्पुरुषः परः ॥२२॥

---

८ अक्टूबर] सूर्योदय ५ । ५२ सूर्यास्त ५ । ३६
पं० २३ आश्विन] 8 October [भा० आश्विन १६

~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~

श्रीदुर्गाष्टमी

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi
~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

एवं वेत्ति पुरुषं प्रकृतिं च गुणैः सह ।
र्वथा वर्तमानोऽपि न स भूयोऽभिजायते ॥२३॥
ानेनात्मनि पश्यन्ति केचिदात्मानमात्मना ।
न्ये सांख्येन योगेन कर्मयोगेन चापरे ॥२४॥

अक्टूबर] सूर्योदय ५ । ५२ सूर्यास्त ५ । ३५
२४ आश्विन] 9 October [भा० आश्विन १७

~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~

श्रीदुर्गानवमी (विजयादशमी मतान्तरसे)

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi
~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अन्ये त्वेवमजानन्तः श्रुत्वान्येभ्य उपासते ।
तेऽपि चातितरन्त्येव मृत्युं श्रुतिपरायणाः ॥२५॥
यावत्संजायते किंचित्सत्त्वं स्थावरजङ्गमम् ।
क्षेत्रक्षेत्रज्ञसंयोगात्तद्विद्धि भरतर्षभ ॥२६॥

---

१० अक्टूबर] सूर्योदय ५।५३ सूर्यास्त ५।३४
पं० २५ आश्विन] 10 October [भा० आश्विन १८

~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~

विजयादशमी

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi
~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

समं सर्वेषु भूतेषु तिष्ठन्तं परमेश्वरम् ।
विनश्यत्स्वविनश्यन्तं यः पश्यति स पश्यति ॥२७॥
समं पश्यन्हि सर्वत्र समवस्थितमीश्वरम् ।
न हिनस्त्यात्मनात्मानं ततो याति परां गतिम् ॥२८॥

---

११ अक्टूबर] सूर्योदय ५।५३ सूर्यास्त ५।३३
पं० २६ आश्विन] 11 October [भा० आश्विन १९

~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~

एकादशीव्रत

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi
~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

प्रकृत्यैव च कर्माणि क्रियमाणानि सर्वशः ।
यः पश्यति तथात्मानमकर्तारं स पश्यति ॥२९॥
यदा भूतपृथग्भावमेकस्थमनुपश्यति ।
तत एव च विस्तारं ब्रह्म सम्पद्यते तदा ॥३०॥

---

१२ अक्टूबर] सूर्योदय ५ । ५४ सूर्यास्त ५ । ३२
पं० २७ आश्विन] 12 October [भा० आश्विन २०

प्रदोषव्रत

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अनादित्वान्निर्गुणत्वात्परमात्मायमव्ययः ।
शरीरस्थोऽपि कौन्तेय न करोति न लिप्यते ॥३१॥
यथा सर्वगतं सौक्ष्म्यादाकाशं नोपलिप्यते ।
सर्वत्रावस्थितो देहे तथात्मा नोपलिप्यते ॥३२॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

यथा प्रकाशयत्येकः कृत्स्नं लोकमिमं रविः ।
क्षेत्रं क्षेत्री तथा कृत्स्नं प्रकाशयति भारत ॥३३॥
क्षेत्रक्षेत्रज्ञयोरेवमन्तरं ज्ञानचक्षुषा ।
भूतप्रकृतिमोक्षं च ये विदुर्यान्ति ते परम् ॥३४॥

ॐ तत्सदिति श्रीमद्भगवद्गीतासूपनिषत्सु ब्रह्मविद्यायां योगशास्त्रे श्रीकृष्णार्जुनसंवादे क्षेत्रक्षेत्रज्ञविभागयोगो नाम त्रयोदशोऽध्यायः ॥१३॥

---

१४ अक्टूबर] सूर्योदय ५।५५ सूर्यास्त ५।
पं॰ २९ आश्विन] 14 October [भा॰ आश्विन

शरत्-पूर्णिमा, कार्तिकस्नानारम्भ

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

ॐ

चतुर्दशोऽध्यायः

श्रीभगवानुवाच

परं भूयः प्रवक्ष्यामि ज्ञानानां ज्ञानमुत्तमम्
यज्ज्ञात्वा मुनयः सर्वे परां सिद्धिमितो गताः ॥१॥
इदं ज्ञानमुपाश्रित्य मम साधर्म्यमागताः ।
सर्गेऽपि नोपजायन्ते प्रलये न व्यथन्ति च ॥२॥

---

१५ अक्टूबर] सूर्योदय ५। ५५ सूर्यास्त ५। २९
पं० ३० आश्विन] 15 October [भा० आश्विन २३
~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~
कार्तिक कृष्ण १ रवि वि० सं० २०४६ श्रीकृष्ण-सं० ५२१५

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi
~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

मम योनिर्महद्ब्रह्म तस्मिन्गर्भं दधाम्यहम् ।
संभवः सर्वभूतानां ततो भवति भारत ॥३॥
सर्वयोनिषु कौन्तेय मूर्तयः सम्भवन्ति याः ।
तासां ब्रह्म महद्योनिरहं बीजप्रदः पिता ॥४॥

---

१६ अक्टूबर] सूर्योदय ५।५६ सूर्यास्त ५।२८
पं॰ ३१ आश्विन] 16 October [भा॰ आश्विन २४

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0 In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सत्त्वं रजस्तम इति गुणाः प्रकृतिसंभवाः ।
निबध्नन्ति महाबाहो देहे देहिनमव्ययम् ॥५॥
तत्र सत्त्वं निर्मलत्वात्प्रकाशकमनामयम् ।
सुखसङ्गेन बध्नाति ज्ञानसङ्गेन चानघ ॥६॥

---

१७ अक्टूबर] सूर्योदय ५।५६ सूर्यास्त ५।२७
पं॰ १ कार्तिक सं॰ २०४६] 17 October [भा॰ आश्विन २५

~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~

श्रीगणेशचतुर्थीव्रत (करवाचौथ)

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi
~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

रजो रागात्मकं विद्धि तृष्णासङ्गसमुद्भवम् ।
तन्निबध्नाति कौन्तेय कर्मसङ्गेन देहिनम् ॥७॥
तमस्त्वज्ञानजं विद्धि मोहनं सर्वदेहिनाम् ।
प्रमादालस्यनिद्राभिस्तन्निबध्नाति भारत ॥८॥

---

१८ अक्टूबर] सूर्योदय ५।५७ सूर्यास्त ५।२६
पं० २ कार्तिक] 18 October [भा० आश्विन २६

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सत्त्वं सुखे संजयति रजः कर्मणि भारत।
ज्ञानमावृत्य तु तमः प्रमादे संजयत्युत ॥९॥
रजस्तमश्चाभिभूय सत्त्वं भवति भारत।
रजः सत्त्वं तमश्चैव तमः सत्त्वं रजस्तथा ॥१०॥

---

१९ अक्टूबर] सूर्योदय ५।५७ सूर्यास्त ५।२५
पं० ३ कार्तिक] 19 October [भा० आश्विन २७

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सर्वद्वारेषु देहेऽस्मिन्प्रकाश उपजायते ।
ज्ञानं यदा तदा विद्याद्विवृद्धं सत्त्वमित्युत ॥११॥
लोभः प्रवृत्तिरारम्भः कर्मणामशमः स्पृहा ।
रजस्येतानि जायन्ते विवृद्धे भरतर्षभ ॥१२॥

---

२० अक्टूबर]   सूर्योदय ५।५८   सूर्यास्त ५।२४
पं० ४ कार्तिक]   20 October   [भा० आश्विन २८

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अप्रकाशोऽप्रवृत्तिश्च प्रमादो मोह एव च।
तमस्येतानि जायन्ते विवृद्धे कुरुनन्दन ॥१३॥
यदा सत्त्वे प्रवृद्धे तु प्रलयं याति देहभृत्।
तदोत्तमविदां लोकानमलान्प्रतिपद्यते ॥१४॥

---

२१ अक्टूबर] सूर्योदय ५।५९ सूर्यास्त ५।२३
पं० ५ कार्तिक] 21 October [भा० आश्विन २९

अहोईव्रत

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

रजसि प्रलयं गत्वा कर्मसङ्गिषु जायते।
तथा प्रलीनस्तमसि मूढयोनिषु जायते ॥१५॥
कर्मणः सुकृतस्याहुः सात्त्विकं निर्मलं फलम्।
रजसस्तु फलं दुःखमज्ञानं तमसः फलम् ॥१६॥

---

२२ अक्टूबर] सूर्योदय ५।५९ सूर्यास्त ५।२२
पं० ६ कार्तिक] 22 October [भा० आश्विन ३०

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सत्त्वात्संजायते ज्ञानं रजसो लोभ एव च।
प्रमादमोहौ तमसो भवतोऽज्ञानमेव च ॥१७॥
ऊर्ध्वं गच्छन्ति सत्त्वस्था मध्ये तिष्ठन्ति राजसाः ।
जघन्यगुणवृत्तिस्था अधो गच्छन्ति तामसाः ॥१८॥

---

२३ अक्टूबर] सूर्योदय ६।०० सूर्यास्त ५।२२
पं० ७ कार्तिक] 23 October [भा० कार्तिक १ शक १९११

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

नान्यं गुणेभ्यः कर्तारं यदा द्रष्टानुपश्यति ।
गुणेभ्यश्च परं वेत्ति मद्भावं सोऽधिगच्छति ॥१९॥
गुणानेतानतीत्य त्रीन्देही देहसमुद्भवान् ।
जन्ममृत्युजरादुःखैर्विमुक्तोऽमृतमश्नुते ॥२०॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अर्जुन उवाच

कैर्लिङ्गैस्त्रीन्गुणानेतानतीतो भवति प्रभो ।
किमाचारः कथं चैतांस्त्रीन्गुणानतिवर्तते ॥२१॥

श्रीभगवानुवाच

प्रकाशं च प्रवृत्तिं च मोहमेव च पाण्डव ।
न द्वेष्टि संप्रवृत्तानि न निवृत्तानि काङ्क्षति ॥२२॥

---

२५ अक्टूबर] सूर्योदय ६।१ सूर्यास्त ५।२०
पं० ९ कार्तिक] 25 October [भा० का० ३

~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~

एकादशीव्रत

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi
~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

उदासीनवदासीनो गुणैर्यो न विचाल्यते ।
गुणा वर्तन्त इत्येव योऽवतिष्ठति नेङ्गते ॥२३॥
समदुःखसुखः स्वस्थः समलोष्टाश्मकाञ्चनः ।
तुल्यप्रियाप्रियो धीरस्तुल्यनिन्दात्मसंस्तुतिः ॥२४॥

---

२६ अक्टूबर]   सूर्योदय ६ । २   सूर्यास्त ५ । १९
पं० १० कार्तिक]   26 October   [भा० कार्तिक ४

~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~

धनतेरस, प्रदोषव्रत

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi
~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

मानापमानयोस्तुल्यस्तुल्यो मित्रारिपक्षयोः ।
सर्वारम्भपरित्यागी गुणातीतः स उच्यते ॥२५॥
मां च योऽव्यभिचारेण भक्तियोगेन सेवते ।
स गुणान्समतीत्यैतान्ब्रह्मभूयाय कल्पते ॥२६॥

---

२७ अक्टूबर] सूर्योदय ६ । ३ सूर्यास्त ५ । १८
पं० ११ कार्तिक] 27 October [भा० कार्तिक ५

धन्वन्तरिजयन्ती

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

ब्रह्मणो हि प्रतिष्ठाहममृतस्याव्ययस्य च ।
शाश्वतस्य च धर्मस्य सुखस्यैकान्तिकस्य च ॥२७॥

ॐ तत्सदिति श्रीमद्भगवद्गीतासूपनिषत्सु ब्रह्मविद्यायां योगशास्त्रे श्रीकृष्णार्जुनसंवादे गुणत्रयविभागयोगो नाम चतुर्दशोऽध्यायः ॥१४॥

---

२८ अक्टूबर] सूर्योदय ६ । ३ सूर्यास्त ५ । १८
पं॰ १२ कार्तिक] 28 October [भा॰ कार्तिक ६

श्रीहनुमज्जयन्ती

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

ॐ

पञ्चदशोऽध्यायः

श्रीभगवानुवाच

ऊर्ध्वमूलमधःशाखमश्वत्थं प्राहुरव्ययम् ।
छन्दांसि यस्य पर्णानि यस्तं वेद स वेदवित् ॥१॥
अधश्चोर्ध्वं प्रसृतास्तस्य शाखा
गुणप्रवृद्धा विषयप्रवालाः ।
अधश्च मूलान्यनुसंततानि
कर्मानुबन्धीनि मनुष्यलोके ॥२॥

---

२९ अक्टूबर] सूर्योदय ६।४ सूर्यास्त ५।१७
पं० १३ कार्तिक] 29 October [भा० कार्तिक ७

~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~

कार्तिक कृष्ण ३० रवि दीपावली, महालक्ष्मीपूजा

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi
~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

न रूपमस्येह तथोपलभ्यते
नान्तो न चादिर्न च संप्रतिष्ठा।
अश्वत्थमेनं सुविरूढमूल-
मसङ्गशस्त्रेण दृढेन छित्त्वा ॥३॥

---

३० अक्टूबर] सूर्योदय ६।५ सूर्यास्त ५।१६
पं॰ १४ कार्तिक] 30 October [भा॰ कार्तिक ८

अन्नकूट, गोवर्धनपूजा

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

ततः पदं तत्परिमार्गितव्यं
यस्मिन्गता न निवर्तन्ति भूयः ।
तमेव चाद्यं पुरुषं प्रपद्ये
यतः प्रवृत्तिः प्रसृता पुराणी ॥४॥

---

३१ अक्टूबर] सूर्योदय ६।६ सूर्यास्त ५।१५
पं० १५ कार्तिक] 31 October [भा० कार्तिक ९

यमद्वितीया (भइयादूज)

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

निर्मानमोहा जितसङ्गदोषा
अध्यात्मनित्या विनिवृत्तकामाः ।
द्वन्द्वैर्विमुक्ताः सुखदुःखसंज्ञै-
र्गच्छन्त्यमूढाः पदमव्ययं तत् ॥५॥

---

१ नवम्बर १९८९] सूर्योदय ६।६ सूर्यास्त ५।१५
पं० १६ कार्तिक] 1 November 1989 [भा० कार्तिक १०

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

न तद्भासयते सूर्यो न शशाङ्को न पावकः ।
यद्गत्वा न निवर्तन्ते तद्धाम परमं मम ॥६॥
ममैवांशो जीवलोके जीवभूतः सनातनः ।
मनःषष्ठानीन्द्रियाणि प्रकृतिस्थानि कर्षति ॥७॥

---

२ नवम्बर] सूर्योदय ६।७ सूर्यास्त ५।१४
पं० १७ कार्तिक] 2 November [भा० कार्तिक ११

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

शरीरं यदवाप्नोति यच्चाप्युत्क्रामतीश्वरः ।
गृहीत्वैतानि संयाति वायुर्गन्धानिवाशयात् ॥८॥
श्रोत्रं चक्षुः स्पर्शनं च रसनं घ्राणमेव च ।
अधिष्ठाय मनश्चायं विषयानुपसेवते ॥९॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

उत्क्रामन्तं स्थितं वापि भुञ्जानं वा गुणान्वितम्।
विमूढा नानुपश्यन्ति पश्यन्ति ज्ञानचक्षुषः ॥१०॥
यतन्तो योगिनश्चैनं पश्यन्त्यात्मन्यवस्थितम्।
यतन्तोऽप्यकृतात्मानो नैनं पश्यन्त्यचेतसः ॥११॥

---

४ नवम्बर] सूर्योदय ६।८ सूर्यास्त ५।१३

पं० १९ कार्तिक] 4 November [भा० कार्तिक १३

~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~

सूर्यषष्ठीव्रत

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi
~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

यदादित्यगतं तेजो जगद्भासयतेऽखिलम् ।
यच्चन्द्रमसि यच्चाग्नौ तत्तेजो विद्धि मामकम् ॥१२॥
गामाविश्य च भूतानि धारयाम्यहमोजसा ।
पुष्णामि चौषधीः सर्वाः सोमो भूत्वा रसात्मकः ॥१३॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अहं वैश्वानरो भूत्वा प्राणिनां देहमाश्रितः।
प्राणापानसमायुक्तः पचाम्यन्नं चतुर्विधम् ॥१४॥
सर्वस्य चाहं हृदि सन्निविष्टो
मत्तः स्मृतिर्ज्ञानमपोहनं च।
वेदैश्च सर्वैरहमेव वेद्यो
वेदान्तकृद्वेदविदेव चाहम् ॥१५॥

गोपाष्टमी

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

द्वाविमौ पुरुषौ लोके क्षरश्चाक्षर एव च।
क्षरः सर्वाणि भूतानि कूटस्थोऽक्षर उच्यते ॥१६॥
उत्तमः पुरुषस्त्वन्यः परमात्मेत्युदाहृतः।
यो लोकत्रयमाविश्य बिभर्त्यव्यय ईश्वरः ॥१७॥

---

७ नवम्बर] सूर्योदय ६।१० सूर्यास्त ५।१०
पं॰ २२ कार्तिक] 7 November [भा॰ कार्तिक १६

~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~

अक्षयनवमी

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi
~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

यस्मात्क्षरमतीतोऽहमक्षरादपि चोत्तमः ।
अतोऽस्मि लोके वेदे च प्रथितः पुरुषोत्तमः ॥१८॥
यो मामेवमसंमूढो जानाति पुरुषोत्तमम् ।
स सर्वविद्भजति मां सर्वभावेन भारत ॥१९॥

---

८ नवम्बर] सूर्योदय ६ । १० सूर्यास्त ५ । १०
पं० २३ कार्तिक] 8 November [भा० कार्तिक १७

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

इति गुह्यतमं शास्त्रमिदमुक्तं मयानघ।
एतद्बुद्ध्वा बुद्धिमान्स्यात्कृतकृत्यश्च भारत ॥२०॥

ॐ तत्सदिति श्रीमद्भगवद्गीतासूपनिषत्सु ब्रह्मविद्यायां योगशास्त्रे श्रीकृष्णार्जुनसंवादे पुरुषोत्तमयोगो नाम पञ्चदशोऽध्यायः ॥१५॥

---

९ नवम्बर] सूर्योदय ६।११ सूर्यास्त ५।९

पं० २४ कार्तिक] 9 November [भा० कार्तिक १८

प्रबोधिनी एकादशीव्रत

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

ॐ

षोडशोऽध्यायः

श्रीभगवानुवाच

अभयं सत्त्वसंशुद्धिर्ज्ञानयोगव्यवस्थितिः ।
दानं दमश्च यज्ञश्च स्वाध्यायस्तप आर्जवम् ॥१॥
अहिंसा सत्यमक्रोधस्त्यागः शान्तिरपैशुनम् ।
दया भूतेष्वलोलुप्त्वं मार्दवं ह्रीरचापलम् ॥२॥

१० नवम्बर] सूर्योदय ६ । १२ सूर्यास्त ५ । ८
पं० २५ कार्तिक] 10 November [भा० कार्तिक १९

कार्तिक शुक्ल १२ शुक्र प्रदोषव्रत

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

तेजः क्षमा धृतिः शौचमद्रोहो नातिमानिता।
भवन्ति संपदं दैवीमभिजातस्य भारत ॥३॥
दम्भो दर्पोऽभिमानश्च क्रोधः पारुष्यमेव च।
अज्ञानं चाभिजातस्य पार्थ संपदमासुरीम् ॥४॥

---

११ नवम्बर] सूर्योदय ६।१३ सूर्यास्त ५।८
पं० २६ कार्तिक] 11 November [भा० कार्तिक २०

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

दैवी संपद्विमोक्षाय निबन्धायासुरी मता ।
मा शुचः संपदं दैवीमभिजातोऽसि पाण्डव ।।५।।
द्वौ भूतसर्गौ लोकेऽस्मिन्दैव आसुर एव च ।
दैवो विस्तरशः प्रोक्त आसुरं पार्थ मे शृणु ।।६।।

---

१२ नवम्बर] सूर्योदय ६।१३ सूर्यास्त ५।७
पं० २७ कार्तिक] 12 November [भा० कार्तिक २१

व्रतकी पूर्णिमा

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

प्रवृत्तिं च निवृत्तिं च जना न विदुरासुराः।
न शौचं नापि चाचारो न सत्यं तेषु विद्यते ॥७॥
असत्यमप्रतिष्ठं ते जगदाहुरनीश्वरम्।
अपरस्परसंभूतं किमन्यत्कामहैतुकम् ॥८॥

---

१३ नवम्बर] सूर्योदय ६।१४ सूर्यास्त ५।७
पं० २८ कार्तिक] 13 November [भा० कार्तिक २२

स्नानदानादि पूर्णिमा, गुरुनानकजयन्ती, कार्तिकस्नान समाप्त

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

एतां दृष्टिमवष्टभ्य नष्टात्मानोऽल्पबुद्धयः ।
प्रभवन्त्युग्रकर्माणः क्षयाय जगतोऽहिताः ॥९॥
काममाश्रित्य दुष्पूरं दम्भमानमदान्विताः ।
मोहाद्गृहीत्वासद्ग्राहान्प्रवर्तन्तेऽशुचिव्रताः ॥१०॥

---

१४ नवम्बर] सूर्योदय ६।१४ सूर्यास्त ५।६
पं० २९ कार्तिक] 14 November [भा० कार्तिक २३

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

चिन्तामपरिमेयां च प्रलयान्तामुपाश्रिताः ।
कामोपभोगपरमा एतावदिति निश्चिताः ॥११॥
आशापाशशतैर्बद्धाः कामक्रोधपरायणाः ।
ईहन्ते कामभोगार्थमन्यायेनार्थसञ्चयान् ॥१२॥

---

१५ नवम्बर] सूर्योदय ६ । १५ सूर्यास्त ५ । ६
पं० ३० कार्तिक] 15 November [भा० कार्तिक २४

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

इदमद्य मया लब्धमिमं प्राप्स्ये मनोरथम्।
इदमस्तीदमपि मे भविष्यति पुनर्धनम्॥१३॥
असौ मया हतः शत्रुर्हनिष्ये चापरानपि।
ईश्वरोऽहमहं भोगी सिद्धोऽहं बलवान्सुखी॥१४॥

---

१६ नवम्बर]   सूर्योदय ६।१६   सूर्यास्त ५।६
पं० १ मार्गशीर्ष सं० २०४६] 16 November [भा० कार्तिक २५

श्रीगणेशचतुर्थीव्रत

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

आढ्योऽभिजनवानस्मि कोऽन्योऽस्ति सदृशो मया ।
यक्ष्ये दास्यामि मोदिष्य इत्यज्ञानविमोहिताः ॥१५॥
अनेकचित्तविभ्रान्ता मोहजालसमावृताः ।
प्रसक्ताः कामभोगेषु पतन्ति नरकेऽशुचौ ॥१६॥

---

१७ नवम्बर] सूर्योदय ६।१७ सूर्यास्त ५।५
पं० २ मार्गशीर्ष] 17 November [भा० कार्तिक २६

११—

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

आत्मसंभाविताः स्तब्धा धनमानमदान्विताः ।
यजन्ते नामयज्ञैस्ते दम्भेनाविधिपूर्वकम् ॥१७॥
अहंकारं बलं दर्पं कामं क्रोधं च संश्रिताः ।
मामात्मपरदेहेषु प्रद्विषन्तोऽभ्यसूयकाः ॥१८॥

---

१८ नवम्बर] सूर्योदय ६।१७ सूर्यास्त ५।५
पं० ३ मार्गशीर्ष] 18 November [भा० का० २७

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

तानहं द्विषतः क्रूरान्संसारेषु नराधमान्।
क्षिपाम्यजस्रमशुभानासुरीष्वेव योनिषु ॥१९॥
आसुरीं योनिमापन्ना मूढा जन्मनि जन्मनि।
मामप्राप्यैव कौन्तेय ततो यान्त्यधमां गतिम् ॥२०॥

---

१९ नवम्बर] सूर्योदय ६।१८ सूर्यास्त ५।४
पं० ४ मार्ग०] 19 November [भा० कार्तिक २८

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

त्रिविधं नरकस्येदं द्वारं नाशनमात्मनः ।
कामः क्रोधस्तथा लोभस्तस्मादेतत्त्रयं त्यजेत् ॥२१॥
एतैर्विमुक्तः कौन्तेय तमोद्वारैस्त्रिभिर्नरः ।
आचरत्यात्मनः श्रेयस्ततो याति परां गतिम् ॥२२॥

२० नवम्बर] सूर्योदय ६ । १९ सूर्यास्त ५ । ४
पं० ५ मार्ग०] 20 November [भा० कार्तिक २९

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

यः शास्त्रविधिमुत्सृज्य वर्तते कामकारतः ।
न स सिद्धिमवाप्नोति न सुखं न परां गतिम् ॥२३॥
तस्माच्छास्त्रं प्रमाणं ते कार्याकार्यव्यवस्थितौ ।
ज्ञात्वा शास्त्रविधानोक्तं कर्म कर्तुमिहार्हसि ॥२४॥

ॐ तत्सदिति श्रीमद्भगवद्गीतासूपनिषत्सु ब्रह्मविद्यायां योगशास्त्रे श्रीकृष्णार्जुनसंवादे दैवासुरसंपद्विभागयोगो नाम षोडशोऽध्यायः ॥१६॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

ॐ

सप्तदशोऽध्यायः

अर्जुन उवाच

ये शास्त्रविधिमुत्सृज्य यजन्ते श्रद्धयान्विताः ।
तेषां निष्ठा तु का कृष्ण सत्त्वमाहो रजस्तमः ॥१॥

श्रीभगवानुवाच

त्रिविधा भवति श्रद्धा देहिनां सा स्वभावजा ।
सात्त्विकी राजसी चैव तामसी चेति तां शृणु ॥२॥

---

२२ नवम्बर] सूर्योदय ६ । २१ सूर्यास्त ५ । ४
पं० ७ मार्ग०] 22 November [भा० मार्ग० १ शक १९११

मार्गशीर्ष कृष्ण १० बुध

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सत्त्वानुरूपा सर्वस्य श्रद्धा भवति भारत।
श्रद्धामयोऽयं पुरुषो यो यच्छ्रद्धः स एव सः ॥३॥
यजन्ते सात्त्विका देवान्यक्षरक्षांसि राजसाः।
प्रेतान्भूतगणांश्चान्ये यजन्ते तामसा जनाः ॥४॥

---

२३ नवम्बर] सूर्योदय ६ । २१ सूर्यास्त ५ । ३
पं० ८ मार्ग०] 23 November [भा० मार्ग० २

एकादशीव्रत (स्मार्त)

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अशास्त्रविहितं घोरं तप्यन्ते ये तपो जनाः ।
दम्भाहंकारसंयुक्ताः कामरागबलान्विताः ॥५॥
कर्शयन्तः शरीरस्थं भूतग्राममचेतसः ।
मां चैवान्तःशरीरस्थं तान्विद्ध्यासुरनिश्चयान् ॥६॥

---

२४ नवम्बर] सूर्योदय ६ । २२ सूर्यास्त ५ । ३
पं० ९ मार्ग०] 24 November [भा० मार्ग० ३

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

आहारस्त्वपि सर्वस्य त्रिविधो भवति प्रियः ।
यज्ञस्तपस्तथा दानं तेषां भेदमिमं शृणु ॥७॥
आयुःसत्त्वबलारोग्यसुखप्रीतिविवर्धनाः ।
रस्याः स्निग्धाः स्थिरा हृद्या आहाराः सात्त्विकप्रियाः ॥८॥

---

२५ नवम्बर]　सूर्योदय ६ । २३　सूर्यास्त ५ । ३
पं० १० मार्ग०]　25 November　[भा० मार्ग० ४

~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~

एकादशीव्रत (वैष्णव)

प्रदोषव्रत

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi
~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

कट्वम्ललवणात्युष्णतीक्ष्णरूक्षविदाहिनः ।
आहारा राजसस्येष्टा दुःखशोकामयप्रदाः ॥९॥
यातयामं गतरसं पूति पर्युषितं च यत् ।
उच्छिष्टमपि चामेध्यं भोजनं तामसप्रियम् ॥१०॥

---

२६ नवम्बर] सूर्योदय ६ । २४ सूर्यास्त ५ । ३
पं० ११ मार्ग०] 26 November [भा० मार्ग० ५

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अफलाकाङ्क्षिभिर्यज्ञो विधिदृष्टो य इज्यते।
यष्टव्यमेवेति मनः समाधाय स सात्त्विकः ॥११॥
अभिसंधाय तु फलं दम्भार्थमपि चैव यत्।
इज्यते भरतश्रेष्ठ तं यज्ञं विद्धि राजसम् ॥१२॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

विधिहीनमसृष्टान्नं मन्त्रहीनमदक्षिणम् ।
श्रद्धाविरहितं यज्ञं तामसं परिचक्षते ॥१३॥
देवद्विजगुरुप्राज्ञपूजनं शौचमार्जवम् ।
ब्रह्मचर्यमहिंसा च शारीरं तप उच्यते ॥१४॥

---

२८ नवम्बर] सूर्योदय ६।२५ सूर्यास्त ५।३
पं० १३ मार्ग०] 28 November [भा० मार्ग० ७

भौमवती अमावस्या

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अनुद्वेगकरं वाक्यं सत्यं प्रियहितं च यत्।
स्वाध्यायाभ्यसनं चैव वाङ्मयं तप उच्यते ॥१५॥
मनःप्रसादः सौम्यत्वं मौनमात्मविनिग्रहः।
भावसंशुद्धिरित्येतत्तपो मानसमुच्यते ॥१६॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

श्रद्धया परया तप्तं तपस्तत्त्रिविधं नरैः।
अफलाकाङ्क्षिभिर्युक्तैः सात्त्विकं परिचक्षते ॥१७॥
सत्कारमानपूजार्थं तपो दम्भेन चैव यत्।
क्रियते तदिह प्रोक्तं राजसं चलमध्रुवम् ॥१८॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

मूढग्राहेणात्मनो यत्पीडया क्रियते तपः ।
परस्योत्सादनार्थं वा तत्तामसमुदाहृतम् ॥१९॥
दातव्यमिति यद्दानं दीयतेऽनुपकारिणे ।
देशे काले च पात्रे च तद्दानं सात्त्विकं स्मृतम् ॥२०॥

---

१ दिसम्बर १९८९] सूर्योदय ६।२८ सूर्यास्त ५।३
पं० १६ मार्ग०] 1 December 1989 [भा० मार्ग० १०

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

यत्तु प्रत्युपकारार्थं फलमुद्दिश्य वा पुनः ।
दीयते च परिक्लिष्टं तद्दानं राजसं स्मृतम् ॥२१॥
अदेशकाले यद्दानमपात्रेभ्यश्च दीयते ।
असत्कृतमवज्ञातं तत्तामसमुदाहृतम् ॥२२॥

---

२ दिसम्बर]　सूर्योदय ६ । २९　सूर्यास्त ५ । ३
पं० १७ मार्ग०]　2 December　[भा० मार्ग० ११

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

ॐ तत्सदिति निर्देशो ब्रह्मणस्त्रिविधः स्मृतः ।
ब्राह्मणास्तेन वेदाश्च यज्ञाश्च विहिताः पुरा ॥२३॥
तस्मादोमित्युदाहृत्य यज्ञदानतपःक्रियाः ।
प्रवर्तन्ते विधानोक्ताः सततं ब्रह्मवादिनाम् ॥२४॥

---

३ दिसम्बर] सूर्योदय ६ । २९ सूर्यास्त ५ । ३
पं० १८ मार्ग०] 3 December [भा० मार्ग० १२

श्रीरामविवाहोत्सव

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

तदित्यनभिसंधाय फलं यज्ञतपःक्रियाः ।
दानक्रियाश्च विविधाः क्रियन्ते मोक्षकाङ्क्षिभिः ॥२५॥
सद्भावे साधुभावे च सदित्येतत्प्रयुज्यते ।
प्रशस्ते कर्मणि तथा सच्छब्दः पार्थ युज्यते ॥२६॥

---

४ दिसम्बर]   सूर्योदय ६।३०   सूर्यास्त ५।३
पं० १९ मार्ग०] 4 December [भा० मार्ग० १३

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

यज्ञे तपसि दाने च स्थितिः सदिति चोच्यते ।
कर्म चैव तदर्थीयं सदित्येवाभिधीयते ॥२७॥
अश्रद्धया हुतं दत्तं तपस्तप्तं कृतं च यत् ।
असदित्युच्यते पार्थ न च तत्प्रेत्य नो इह ॥२८॥

ॐ तत्सदिति श्रीमद्भगवद्गीतासूपनिषत्सु ब्रह्मविद्यायां योगशास्त्रे श्रीकृष्णार्जुनसंवादे श्रद्धात्रयविभागयोगो नाम सप्तदशोऽध्यायः ॥१७॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

ॐ

अष्टादशोऽध्यायः

अर्जुन उवाच

संन्यासस्य महाबाहो तत्त्वमिच्छामि वेदितुम्।
त्यागस्य च हृषीकेश पृथक्केशिनिषूदन ॥१॥

श्रीभगवानुवाच

काम्यानां कर्मणां न्यासं संन्यासं कवयो विदुः।
सर्वकर्मफलत्यागं प्राहुस्त्यागं विचक्षणाः ॥२॥
त्याज्यं दोषवदित्येके कर्म प्राहुर्मनीषिणः।
यज्ञदानतपःकर्म न त्याज्यमिति चापरे ॥३॥

---

६ दिसम्बर] सूर्योदय ६।३२ सूर्यास्त ५।३
पं० २१ मार्ग०] 6 December [भा० मार्ग० १५

~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~

मार्गशीर्ष शुक्ल ८ बुध

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi
~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

निश्चयं शृणु मे तत्र त्यागे भरतसत्तम ।
त्यागो हि पुरुषव्याघ्र त्रिविधः संप्रकीर्तितः ॥४॥
यज्ञदानतपःकर्म न त्याज्यं कार्यमेव तत् ।
यज्ञो दानं तपश्चैव पावनानि मनीषिणाम् ॥५॥
एतान्यपि तु कर्माणि सङ्गं त्यक्त्वा फलानि च ।
कर्तव्यानीति मे पार्थ निश्चितं मतमुत्तमम् ॥६॥

---

७ दिसम्बर] सूर्योदय ६ । ३२ सूर्यास्त ५ । ३
पं० २२ मार्ग०] 7 December [भा० मार्ग० १६

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

नियतस्य तु संन्यासः कर्मणो नोपपद्यते ।
मोहात्तस्य परित्यागस्तामसः परिकीर्तितः ॥७॥
दुःखमित्येव यत्कर्म कायक्लेशभयात्त्यजेत् ।
स कृत्वा राजसं त्यागं नैव त्यागफलं लभेत् ॥८॥
कार्यमित्येव यत्कर्म नियतं क्रियतेऽर्जुन ।
सङ्गं त्यक्त्वा फलं चैव स त्यागः सात्त्विको मतः ॥९॥

---

८ दिसम्बर]   सूर्योदय ६ । ३३   सूर्यास्त ५ । ३
पं० २३ मार्ग०] 8 December [भा० मार्ग० १७

एकादशीव्रत (स्मार्त्त),
श्रीगीताजयन्ती

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

न द्वेष्ट्यकुशलं कर्म कुशले नानुषज्जते।
त्यागी सत्त्वसमाविष्टो मेधावी छिन्नसंशयः ॥१०॥
न हि देहभृता शक्यं त्यक्तुं कर्माण्यशेषतः।
यस्तु कर्मफलत्यागी स त्यागीत्यभिधीयते ॥११॥
अनिष्टमिष्टं मिश्रं च त्रिविधं कर्मणः फलम्।
भवत्यत्यागिनां प्रेत्य न तु संन्यासिनां क्वचित् ॥१२॥

---

९ दिसम्बर] सूर्योदय ६।३३ सूर्यास्त ५।३
पं० २४ मार्ग०] 9 December [भा० मार्ग० १८

एकादशीव्रत (वैष्णव)

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

पञ्चैतानि महाबाहो कारणानि निबोध मे।
सांख्ये कृतान्ते प्रोक्तानि सिद्धये सर्वकर्मणाम् ॥१३॥
अधिष्ठानं तथा कर्ता करणं च पृथग्विधम्।
विविधाश्च पृथक्चेष्टा दैवं चैवात्र पञ्चमम् ॥१४॥
शरीरवाङ्मनोभिर्यत्कर्म प्रारभते नरः।
न्याय्यं वा विपरीतं वा पञ्चैते तस्य हेतवः ॥१५॥

---

१० दिसम्बर] सूर्योदय ६।३४ सूर्यास्त ५।३
पं० २५ मार्ग०] 10 December [भा० मार्ग० १९

प्रदोषव्रत

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

तत्रैवं सति कर्तारमात्मानं केवलं तु यः।
पश्यत्यकृतबुद्धित्वान्न स पश्यति दुर्मतिः ॥१६॥
यस्य नाहंकृतो भावो बुद्धिर्यस्य न लिप्यते।
हत्वापि स इमाँल्लोकान्न हन्ति न निबध्यते ॥१७॥
ज्ञानं ज्ञेयं परिज्ञाता त्रिविधा कर्मचोदना।
करणं कर्म कर्तेति त्रिविधः कर्मसंग्रहः ॥१८॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

ज्ञानं कर्म च कर्ता च त्रिधैव गुणभेदतः ।
प्रोच्यते गुणसंख्याने यथावच्छृणु तान्यपि ॥१९॥
सर्वभूतेषु येनैकं भावमव्ययमीक्षते ।
अविभक्तं विभक्तेषु तज्ज्ञानं विद्धि सात्त्विकम् ॥२०॥
पृथक्त्वेन तु यज्ज्ञानं नानाभावान्पृथग्विधान् ।
वेत्ति सर्वेषु भूतेषु तज्ज्ञानं विद्धि राजसम् ॥२१॥

---

१२ दिसम्बर] सूर्योदय ६।३६ सूर्यास्त ५।४
पं० २७ मार्ग०] 12 December [भा० मार्ग० २१

पूर्णिमा

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

यत्तु कृत्स्नवदेकस्मिन्कार्ये सक्तमहैतुकम् ।
अतत्त्वार्थवदल्पं च तत्तामसमुदाहृतम् ॥२२॥
नियतं सङ्गरहितमरागद्वेषतः कृतम् ।
अफलप्रेप्सुना कर्म यत्तत्सात्त्विकमुच्यते ॥२३॥
यत्तु कामेप्सुना कर्म साहंकारेण वा पुनः ।
क्रियते बहुलायासं तद्राजसमुदाहृतम् ॥२४॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अनुबन्धं क्षयं हिंसामनवेक्ष्य च पौरुषम् ।
मोहादारभ्यते कर्म यत्तत्तामसमुच्यते ॥२५॥
मुक्तसङ्गोऽनहंवादी धृत्युत्साहसमन्वितः ।
सिद्ध्यसिद्ध्योर्निर्विकारः कर्ता सात्त्विक उच्यते ॥२६॥
रागी कर्मफलप्रेप्सुर्लुब्धो हिंसात्मकोऽशुचिः ।
हर्षशोकान्वितः कर्ता राजसः परिकीर्तितः ॥२७॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain. Digitizagtion by eGangotri

अयुक्तः प्राकृतः स्तब्धः शठो नैष्कृतिकोऽलसः ।
विषादी दीर्घसूत्री च कर्ता तामस उच्यते ॥२८॥
बुद्धेर्भेदं धृतेश्चैव गुणतस्त्रिविधं शृणु ।
प्रोच्यमानमशेषेण पृथक्त्वेन धनंजय ॥२९॥
प्रवृत्तिं च निवृत्तिं च कार्याकार्ये भयाभये ।
बन्धं मोक्षं च या वेत्ति बुद्धिः सा पार्थ सात्त्विकी ॥३०॥

---

१५ दिसम्बर] सूर्योदय ६।३८ सूर्यास्त ५।५
पं० १ पौष सं० २०४६] 15 December [भा० मार्ग० २४

श्रीगणेशचतुर्थीव्रत

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

यया धर्ममधर्मं च कार्यं चाकार्यमेव च।
अयथावत्प्रजानाति बुद्धिः सा पार्थ राजसी ॥३१॥
अधर्मं धर्ममिति या मन्यते तमसावृता।
सर्वार्थान्विपरीतांश्च बुद्धिः सा पार्थ तामसी ॥३२॥
धृत्या यया धारयते मनःप्राणेन्द्रियक्रियाः।
योगेनाव्यभिचारिण्या धृतिः सा पार्थ सात्त्विकी ॥३३॥

---

१६ दिसम्बर] सूर्योदय ६।३९ सूर्यास्त ५।५
पं० २ पौष] 16 December [भा० मार्ग० २५

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

यया तु धर्मकामार्थान्धृत्या धारयतेऽर्जुन।
प्रसङ्गेन फलाकाङ्क्षी धृतिः सा पार्थ राजसी ॥३४॥
यया स्वप्नं भयं शोकं विषादं मदमेव च।
न विमुञ्चति दुर्मेधा धृतिः सा पार्थ तामसी ॥३५॥
सुखं त्विदानीं त्रिविधं शृणु मे भरतर्षभ।
अभ्यासाद्रमते यत्र दुःखान्तं च निगच्छति ॥३६॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

यत्तदग्रे विषमिव परिणामेऽमृतोपमम् ।
तत्सुखं सात्त्विकं प्रोक्तमात्मबुद्धिप्रसादजम् ॥३७॥
विषयेन्द्रियसंयोगाद्यत्तदग्रेऽमृतोपमम् ।
परिणामे विषमिव तत्सुखं राजसं स्मृतम् ॥३८॥
यदग्रे चानुबन्धे च सुखं मोहनमात्मनः ।
निद्रालस्यप्रमादोत्थं तत्तामसमुदाहृतम् ॥३९॥

---

१८ दिसम्बर] सूर्योदय ६।४० सूर्यास्त ५।६
पं० ४ पौष] 18 December [भा० मार्ग० २७

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain. Digitizagtion by eGangotri

न तदस्ति पृथिव्यां वा दिवि देवेषु वा पुनः ।
सत्त्वं प्रकृतिजैर्मुक्तं यदेभिःस्यात्त्रिभिर्गुणैः ॥४०॥
ब्राह्मणक्षत्रियविशां शूद्राणां च परंतप ।
कर्माणि प्रविभक्तानि स्वभावप्रभवैर्गुणैः ॥४१॥
शमो दमस्तपः शौचं क्षान्तिरार्जवमेव च ।
ज्ञानं विज्ञानमास्तिक्यं ब्रह्मकर्म स्वभावजम् ॥४२॥

---

१९ दिसम्बर] सूर्योदय ६।४० सूर्यास्त ५।७
पं० ५ पौष] 19 December [भा० मार्ग० २८

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

शौर्यं तेजो धृतिर्दाक्ष्यं युद्धे चाप्यपलायनम् ।
दानमीश्वरभावश्च क्षात्रं कर्म स्वभावजम् ॥४३॥
कृषिगौरक्ष्यवाणिज्यं वैश्यकर्म स्वभावजम् ।
परिचर्यात्मकं कर्म शूद्रस्यापि स्वभावजम् ॥४४॥
स्वे स्वे कर्मण्यभिरतः संसिद्धिं लभते नरः ।
स्वकर्मनिरतः सिद्धिं यथा विन्दति तच्छृणु ॥४५॥

---

२० दिसम्बर]　सूर्योदय ६।४१　सूर्यास्त ५।७
पं० ६ पौष]　20 December　[भा० मार्ग० २९

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

यतः प्रवृत्तिर्भूतानां येन सर्वमिदं ततम् ।
स्वकर्मणा तमभ्यर्च्य सिद्धिं विन्दति मानवः ॥४६॥
श्रेयान्स्वधर्मो विगुणः परधर्मात्स्वनुष्ठितात् ।
स्वभावनियतं कर्म कुर्वन्नाप्नोति किल्बिषम् ॥४७॥
सहजं कर्म कौन्तेय सदोषमपि न त्यजेत् ।
सर्वारम्भा हि दोषेण धूमेनाग्निरिवावृताः ॥४८॥

---

२१ दिसम्बर] सूर्योदय ६।४१ सूर्यास्त ५।८
पं० ७ पौष] 21 December [भा० मार्ग० ३०

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

असक्तबुद्धिः सर्वत्र जितात्मा विगतस्पृहः ।
नैष्कर्म्यसिद्धिं परमां संन्यासेनाधिगच्छति ॥४९॥
सिद्धिं प्राप्तो यथा ब्रह्म तथाप्नोति निबोध मे ।
समासेनैव कौन्तेय निष्ठा ज्ञानस्य या परा ॥५०॥
बुद्ध्या विशुद्धया युक्तो धृत्यात्मानं नियम्य च ।
शब्दादीन्विषयांस्त्यक्त्वा रागद्वेषौ व्युदस्य च ॥५१॥

---

२२ दिसम्बर]　सूर्योदय ६।४२　सूर्यास्त ५।८
पं० ८ पौष] 22 December [भा० पौष १ शक १९११

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

विविक्तसेवी लघ्वाशी यतवाक्कायमानसः ।
ध्यानयोगपरो नित्यं वैराग्यं समुपाश्रितः ॥५२॥
अहंकारं बलं दर्पं कामं क्रोधं परिग्रहम् ।
विमुच्य निर्ममः शान्तो ब्रह्मभूयाय कल्पते ॥५३॥
ब्रह्मभूतः प्रसन्नात्मा न शोचति न काङ्क्षति ।
समः सर्वेषु भूतेषु मद्भक्तिं लभते पराम् ॥५४॥

---

२३ दिसम्बर] सूर्योदय ६ । ४२ सूर्यास्त ५ । ९
पं० ९ पौष] 23 December [भा० पौष २

~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~

एकादशीव्रत

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi
~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

भक्त्या मामभिजानाति यावान्यश्चास्मि तत्त्वतः ।
ततो मां तत्त्वतो ज्ञात्वा विशते तदनन्तरम् ॥५५॥
सर्वकर्माण्यपि सदा कुर्वाणो मद्व्यपाश्रयः ।
मत्प्रसादादवाप्नोति शाश्वतं पदमव्ययम् ॥५६॥
चेतसा सर्वकर्माणि मयि संन्यस्य मत्परः ।
बुद्धियोगमुपाश्रित्य मच्चित्तः सततं भव ॥५७॥

---

२४ दिसम्बर] सूर्योदय ६।४३ सूर्यास्त ५।९
पं० १० पौष] 24 December [भा० पौष ३

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

मच्चित्तः सर्वदुर्गाणि मत्प्रसादात्तरिष्यसि ।
अथ चेत्त्वमहंकारान्न श्रोष्यसि विनङ्क्ष्यसि ॥५८॥
यदहंकारमाश्रित्य न योत्स्य इति मन्यसे ।
मिथ्यैष व्यवसायस्ते प्रकृतिस्त्वां नियोक्ष्यति ॥५९॥
स्वभावजेन कौन्तेय निबद्धः स्वेन कर्मणा ।
कर्तुं नेच्छसि यन्मोहात्करिष्यस्यवशोऽपि तत् ॥६०॥

---

२५ दिसम्बर] सूर्योदय ६ । ४३ सूर्यास्त ५ । १०
पं० ११ पौष] 25 December [भा० पौष ४

सोमप्रदोष

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

ईश्वरः सर्वभूतानां हृद्देशेऽर्जुन तिष्ठति ।
भ्रामयन्सर्वभूतानि यन्त्रारूढानि मायया ॥६१॥
तमेव शरणं गच्छ सर्वभावेन भारत ।
तत्प्रसादात्परां शान्तिं स्थानं प्राप्स्यसि शाश्वतम् ॥६२॥
इति ते ज्ञानमाख्यातं गुह्याद्गुह्यतरं मया ।
विमृश्यैतदशेषेण यथेच्छसि तथा कुरु ॥६३॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सर्वगुह्यतमं भूयः शृणु मे परमं वचः।
इष्टोऽसि मे दृढमिति ततो वक्ष्यामि ते हितम् ॥६४॥
मन्मना भव मद्भक्तो मद्याजी मां नमस्कुरु।
मामेवैष्यसि सत्यं ते प्रतिजाने प्रियोऽसि मे ॥६५॥
सर्वधर्मान्परित्यज्य मामेकं शरणं व्रज।
अहं त्वा सर्वपापेभ्यो मोक्षयिष्यामि मा शुचः ॥६६॥

---

२७ दिसम्बर] सूर्योदय ६।४४ सूर्यास्त ५।११
पं० १३ पौष] 27 December [भा० पौष ६

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

इदं ते नातपस्काय नाभक्ताय कदाचन ।
न चाशुश्रूषवे वाच्यं न च मां योऽभ्यसूयति ॥६७॥
य इमं परमं गुह्यं मद्भक्तेष्वभिधास्यति ।
भक्तिं मयि परां कृत्वा मामेवैष्यत्यसंशयः ॥६८॥
न च तस्मान्मनुष्येषु कश्चिन्मे प्रियकृत्तमः ।
भविता न च मे तस्मादन्यः प्रियतरो भुवि ॥६९॥

---

२८ दिसम्बर]　सूर्योदय ६ । ४४　सूर्यास्त ५ । ११
पं० १४ पौष]　28 December　[भा० पौष ७

~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~

अमावस्या

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi
~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अध्येष्यते च य इमं धर्म्यं संवादमावयोः ।
ज्ञानयज्ञेन तेनाहमिष्टः स्यामिति मे मतिः ॥७०॥
श्रद्धावाननसूयश्च श्रृणुयादपि यो नरः ।
सोऽपि मुक्तः शुभाँल्लोकान्प्राप्नुयात्पुण्यकर्मणाम् ॥७१॥
कच्चिदेतच्छ्रुतं पार्थ त्वयैकाग्रेण चेतसा ।
कच्चिदज्ञानसंमोहः प्रनष्टस्ते धनंजय ॥७२॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अर्जुन उवाच

नष्टो मोहः स्मृतिर्लब्धा त्वत्प्रसादान्मयाच्युत ।
स्थितोऽस्मि गतसन्देहः करिष्ये वचनं तव ॥७३॥

संजय उवाच

इत्यहं वासुदेवस्य पार्थस्य च महात्मनः ।
संवादमिममश्रौषमद्भुतं रोमहर्षणम् ॥७४॥
व्यासप्रसादाच्छ्रुतवानेतद्‍गुह्यमहं परम् ।
योगं योगेश्वरात्कृष्णात्साक्षात्कथयतः स्वयम् ॥७५॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राजन्संस्मृत्य संस्मृत्य संवादमिममद्भुतम्।
केशवार्जुनयोः पुण्यं हृष्यामि च मुहुर्मुहुः ॥७६॥
तच्च संस्मृत्य संस्मृत्य रूपमत्यद्भुतं हरेः।
विस्मयो मे महान्राजन्हृष्यामि च पुनः पुनः ॥७७॥
यत्र योगेश्वरः कृष्णो यत्र पार्थो धनुर्धरः।
तत्र श्रीर्विजयो भूतिर्ध्रुवा नीतिर्मतिर्मम ॥७८॥

ॐ तत्सदिति श्रीमद्भगवद्गीतासूपनिषत्सु ब्रह्मविद्यायां योगशास्त्रे श्रीकृष्णार्जुनसंवादे मोक्षसंन्यासयोगो नामाष्टादशोऽध्यायः ॥१८॥

---

३१ दिसम्बर] सूर्योदय ६।४५ सूर्यास्त ५।१३
पं॰ १७ पौष] 31 December [भा॰ पौष १०

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

स्मरण-पत्र

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

स्मरण-पत्र

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

[illegible]

[illegible]

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi